



विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशल फेडरेशन

Vishwakarma Vansaj International Federation

Registered: Under Section 8(1) of companies Act 2013 (Ministry of Corporate Affairs, Govt. of India)
Registered Niti Aayog (Govt. of India), MSME Udyam (Govt. of India)

An ISO certified 9001: 2015 Organization

विश्वकर्मा ज्ञान संदेश

VISHWAKARMA VANSAJ INTERNATIONAL FEDERATION



VISHWAKARMA VANSAJ INTERNATIONAL FEDERATION

VISHWAKARMA VANSAJ INTERNATIONAL FEDERATION

ॐ जय बाबा श्री विश्वकर्मा जी महाराज की ॐ

आप सभी देशवासियों को
विश्वकर्मा जयंती
के शुभ अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं!



आओ मिल कर
विश्वकर्मा समाज को
और मजबूत बनाये।
विश्वकर्मा समाज में
एकता एवं भाईचारा
कायम करने में हमारा
सहयोग करे।

VISHWAKARMA VANSAJ INTERNATIONAL FEDERATION

(Registered: Section 8, Ministry of Corporate Affairs, Government of India)

Regd. Office: Plot No72, Gali.No.2, Sunita Vihar, Loni, Ghaziabad. 201102, UP.(INDIA)
Website: www.vishwakarmavansajfederation.com, Email id.vishwakarmavansajfederation@gmail.com

विश्वकर्मा ज्ञान संदेश



आप सभी देशवासियों को
विश्वकर्मा जयंती
 के शुभ अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं!
 डॉ अजय शर्मा(अध्यक्ष) # 8860430007



ॐ जय श्री भगवान् विश्वकर्मा जी कि ॐ
विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशल फेडरेशन
 Vishwakarma Vansaj International Federation

Registered: Under Section 8(1) of companies Act 2013 (Ministry of Corporate Affairs, Govt. of India)
 Registered: Niti Aayog (Govt. of India), MSME Udyam (Govt. of India) An ISO certified 9001: 2015 Org.

CIN. No.: U85300UP2020NPL127966
 Licence Number: 118268

एक सामाजिक एवं धार्मिक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान
 भगवान् श्री विश्वकर्मा जी के पांचों पुत्र परम आदरणीय श्री मनु, प्रसा, त्वष्टा, शिल्पी, देवज्ञा जी के कलाजों को एक सामाजिक एवं धार्मिक संस्था के माध्यम से समर्गित करके अन्तर्राष्ट्रीय स्तरता कार्य करना ल्यारा लक्ष्य है।

आप सभी देशवासियों को
विश्वकर्मा जयंती
 के शुभ अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं!

विश्वकर्मा ज्ञान संदेश

श्री विश्वकर्मा ज्ञान संदेश

समाजिक चेतना कि प्रेरक पत्रिका

विशेषांक

17 सितम्बर 2024



प्रधान सम्पादक

डा० अजय शर्मा

(राष्ट्रीय अध्यक्ष/ संस्थापक)

विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन

प्लाट न072ए गली न02, सुनिता विहार, लोनी, गाजियाबाद, 201102

उत्तर प्रदेश, भारत

मो०८० 8860430007



उप्रसम्पादक

श्रीमती सीमा शर्मा

(राष्ट्रीय महासचिव / संस्थापक)

विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन



जनसम्पर्क कार्यालय

प्लाट न072,गली न0 2, सुनिता विहार, लोनी, गाजियाबाद, , 201102

उत्तर प्रदेश, भारत

मो०८० 8860430007, 9625785431

website:

www.vishwakarmavansajfederation.com ,

email id.:

vishwakarmavansajfederation@gmail.com ,

facebook id:

Vishwakarma Vansaj Antararasteeya Fed

Vishwakarma Vansaj International Federation details:-

Corporate Id Number of the company is: U85300UP2020NPL127966
Licence under section 8 (1) of the Co. Act, 2013, Licence No.: 118268

NITI Aayog (Govt. of India) Unique Id of NGO: U/2020/0257350

MSME Govt. of India, Udyam Registration Number: UDYAM-UP-29-0008256

An ISO 9001:2015 Certified organisation

PAN NO. AAHCV3553B, TAN NO. MRTV04900A

संगठन को सहयोग / दान हेतु

बैंक का नाम	बैंक आफ बडौदा
खाता नम्बर	58180200000311
खाता का प्रकार	चालू खाता
बांच	लोनी,गाजियाबाद,यूपी०
IFSC	BARBOLONIXX BARBzeroLONIXX

आप सभी देशवासियो को
विश्वकर्मा जयंती
के शुभ अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं!

अनुक्रम

1 सम्पादकीय लेख	03
2 उप सम्पादकीय लेख	04
3 भगवान विश्वकर्मा की स्तुति/ प्रार्थना	05
4 भगवान विश्वकर्मा जी कि चालीसा	06
5 भगवान विश्वकर्मा जी कि आरती	07
6 भगवान विश्वकर्मा जी इतिहास	08
7 भगवान विश्वकर्मा जी वंशावली	11
8 भगवान विश्वकर्मा चरित्र दर्पण	17
9 भगवान विश्वकर्मा जयन्ती	19
10 भगवान विश्वकर्मा पूजा	21
11 भगवान विश्वकर्मा पूजा विधि	22
12 भगवान विश्वकर्मा कथा	28
13 भगवान विश्वकर्मा सतकम्	35
14 भगवान विश्वकर्मा स्वरूप	40
15 भगवान विश्वकर्मा सूक्त	42
16 भगवान विश्वकर्मा प्रश्नावली	44
17 भगवान विश्वकर्मा 108 नाम	51
18 कार्यकर्ता कि फोटो गैलरी	52
19 संस्था के कार्य	53
20 प्रचार/ एडवाटाइजमेन्ट	54



प्यारे मित्रों, आज हम २१वीं सदी में अपना पदार्पण कर चुके हैं] लेकिन हमारा समाज आज भी १९वीं सदी में जी रहा है। समाज में इस नयी सदी कि नयी उर्जा का संचार करने के लिए] हमें नये उर्जावान नेतृत्व की आवश्यकता है। आज देश की आबादी का ७० प्रतिशत युवा वर्ग हैं] ऐसी स्थिती में युवाओं को समझने के लिए] समाज कि बागड़ोर युवाओं के हाथों में होनी चाहिये] चाहे वो देश के किसी भी समाज] घराने या खानदान से हो। समाज की प्रगति को बढ़ावा देने में युवा वर्ग का जोश का उपयोग हो सकता है, लेकिन निगरानी अगर वरिष्ठ बुद्धिजीवियों द्वारा की जाए तो एक सुदृढ़ समाज का निर्माण हो सकता है] और ये दोनों के तालमेल से समाज की की गाड़ी समय के साथ साथ हमेशा आगे चलती रहेगी। यह बुरा मानने कि बात नहीं है] लेकिन यह एक सच्चाई है कि आज विभिन्न प्रकार के समाजों में] संस्थाओं में] संगठनों में सभी का नेतृत्व ५५ से ७५ वर्ष तक के लोग ही कर रहे हैं। उन्हे आज भी ऐसा लगता है। कि वो समाज को चला सकते हैं] और ये कुछ हद तक सही भी है] लेकिन उम्र के इस पड़ाव मे भी उन्हे यह नहीं लगता है कि] उन्हे अब नेतृत्व कि गद्धी को छोड़ देना चाहिए और युवा पीढ़ी को बागड़ोर सौंप कर उन्हें आगे लाना चाहिए] ताकि वो अपनी उर्जा और जोश का उपयोग समाज की विकास गति को और आगे बढ़ने में कर सकें। समाज के विकास को और आगे बढ़ाने के लिए] समाज के युवा पीढ़ी के उच्च शिक्षित व आत्मनिर्भर लोगों को आगे लाने की आवश्यकता है] क्योंकि जो स्वयं आत्मनिर्भर होगा] वही एक आत्मनिर्भर समाज का निर्माण कर सकेगा। आत्मनिर्भर व्यक्ति ही समाज का दिशा निर्देशन कर सकता है] क्योंकि वह हर रोज अपने आपको सफल बनाने के प्रयास को बखूबी अंजाम दे सकता है! हम इतने समझदार] बुद्धिमान और साधन सम्पन्न होने के बावजूद हम अगर समाज को कुछ नहीं दे सकते तो] हमारा इस समाज में पैदा होना ही व्यर्थ है] क्योंकि हमें यह कभी नहीं भुलना चाहिये कि] समाज मे पैदा होने से लेकर मरने तक और अन्तिम यात्रा के वक्त हमने समाज से बहुत कुछ पाया] इसलिए हमें यह सोचना चाहिये कि समाज को हमने क्या दिया है? वैसे तो समाज के प्रति नैतिक जिम्मेदारियों का निर्वाहन का दायित्व तो प्रत्येक व्यक्ति का है, और ऐसा मैं मानता हूँ कि सभी को अपनी छमता के अनुरूप नैतिक जिम्मेदारियों का निर्वाहन करना चाहिए। लेकिन २१वीं सदी के इस सबसे व्यस्ततम् समय या युँ कहें सबसे भीड़-भाड़ जैसे समय में] जहाँ लोग रोजमर्रा की जिंदगी में अपने आपको ही भूल जाते हैं] समाज की तो बात ही छोड़िये। ऐसे व्यस्ततम् समय में हमने अपने आपको रोजमर्रा कह जिन्दगी से परे रखकर] लोगों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने का प्रयास करके] आज हम इस मन्जिल तक पहुँच पाये हैं। आशा है कि हमारा यह छोटा सा प्रयास समाज को एक शसकत व तनाव मुक्त समाज बनाने के विकास में सहयोगी होगा। मैंने विभिन्न पत्र पत्रिकाओं] इन्टरनेट पे वेबसाइटों और समाज के साथ उठते बैठते यह पाया है कि] विश्वकर्मा समाज से सम्बन्धित अनेकों प्रयास काफी बिखरे से हैं] जबकि वे सभी सराहनीय और अत्यधिक प्रबल समाज को दर्शाते हैं। समाज की इन सब कमीयों को दुर करने के लिये विभिन्न पत्र पत्रिकाओं इन्टरनेट पे वेबसाइटों और समाज के द्वारा उपलब्ध जानकारी का नियमित अध्ययन किया जाय] और उसे एक स्थान पर उपलब्ध कराया जाय। इसके साथ ही विभिन्न पत्र पत्रिकाओं को सारी दुनिया के सामने लाया जा सके ऐसा माध्यम का हमें निर्माण करना होगा। ऐसे ही एक माध्य इन्टरनेट के द्वारा मैंने विश्वकर्मा समाज के लिये एक संगठन को बनाया है] जो कि अभी अपने प्रथम चरण में है। आप सभी के सहयोग और मार्गदर्शन के द्वारा यह एक दिन शसकत व तनाव मुक्त समाज को बनाने में अपना रोल बखूबी निभायेगा।

आप सभी देशवासियों को
विश्वकर्मा जयंती
के शुभ अवसर पर
हार्दिक **शुभकामनाएं!**

डा० अजय शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्ष / सस्थापक विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन

उप-सम्पादकीय



दशहरे की परम्परा भगवान् श्री राम के द्वारा त्रेतायुग में रावण के वधं से भले ही आरम्भ हुई हो] पर द्वापरयुग में महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध अर्थर्म पर धर्म की जीत का आरम्भ इसी दिन हुआ था। विजयादशमी का पावन पर्व सिर्फ अन्याय पर न्याय अथवा बुराई पर अच्छाई के विजय का प्रतीक ही नहीं बल्कि यह बुराई में अच्छाई ढूँढने का दिन भी होता है। अतः आज हम सभी इस दिन यह प्रण लेते हैं समाज में बसें सभी तरह बुराईओं में से अच्छाईयों को निकाल निकाल कर नये सुदृढ़ और सुन्दर समाज का निर्माण करेंगे] और साथ ही हररोज एक व्यक्ति को विश्वकर्मा समाज को अनमोल मोतीयों की माला में पिरों देंगे।

साहित्यक पगड़न्डीयों पर चलते हुए ही सम्भव है कि मानव को बौद्धिक चेतना की प्राप्ती हो सके। चुनौती भरी सृजनतामय जीवन की अवधि के सौपान से गुजरना एक महान् साहस की बात है। आज विश्व भौतिकवाद के गहन अन्धकार मय दौर से गुजर रहा है। केवल मात्र इस भ्यानक दौरे से बचने का एक ही विकल्प है विज्ञान के देवता भगवान विश्वकर्मा की शरण में आना] क्योंकि विश्वकर्मा भगवान के अनुकूल भौतिकताप से पीड़ित मानवता के लिए रामबाण औषधी सिद्ध होगी। ऐसी मेरी परिकल्पना ही नहीं अपितु मेरा दृढ़ विश्वास भी है। विश्वकर्मा समाज में यह लघु ग्रंथ परन्तु सार रत्नों से भरा समुद्र की तरह है। प्रत्येक शिल्पी] वैज्ञानिक व उद्योगपतियों के लिये आद्यातन विज्ञानमय गीता के समान है। यहां तक ही नहीं अपितु जो व्यक्ति श्री विश्वकर्मा भगवान को पुर्णरूपेण मानकर चलेंगे तथा उनको विराट पुरुष मानकर चिन्तन करेंगे तो निश्चित रूप से वो सत्यपक्ष को प्राप्त करने में सक्षम होंगे ।

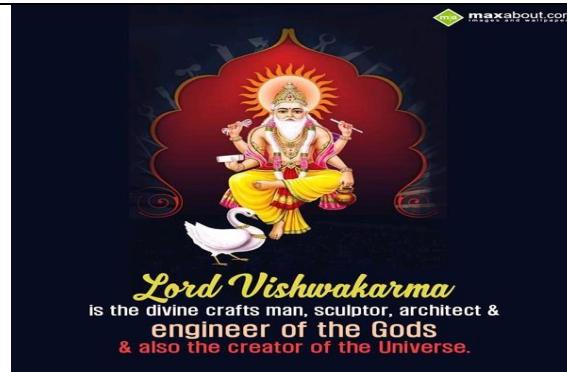
श्रीमती सीमा शर्मा

(राष्ट्रीय महासचिव / संस्थापक)
विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन

आप सभी देशवासियों को
विश्वकर्मा जयंती
के शुभ अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं!



विश्वकर्मा ज्ञान संदेश



ॐ श्री विश्वकर्मा स्तुति ॐ

विश्वकर्मा जगन्नाथो, विश्वकर्मा जगत गुरुः ।
 विश्वकर्मा जग नैत्रः, विश्वकर्मणमिदं जगत ॥
 सृष्टि संहारकर्ता च लोकनाम सव कामदः ।
 विश्वकर्मा परब्रह्मा विश्वकर्मा हरोहरि ॥
 विश्वात्मा, विश्वकर्मा च सर्वे कर्म निवारकः ।
 विश्वकर्मण नमस्तेऽस्तु, जगतदक्षापरायण ॥
 प्रआौति पुंज स्वरूपाय, सर्व प्रआौति मुरतये ।
 अमंगलविनाश, सर्वमंगल दायिने ॥
 सर्व लोक विर्निमाये साक्षिणे जगतांग नमः ।
 विश्वकर्मण नमो नमः, नामो नमः ॥

ॐ श्री विश्वकर्मा प्रार्थना ॐ

हे विश्वकर्मा ! परम प्रभु !, इतनी विनय सुन लीजिये ।
 दुःख दुर्गुणो को दूर कर, सुख सद् गुणों को दीजिये ॥
 ऐसी दया हो आप की, सब जन सुखी सम्पन्न हों ।
 कल्याण कारी गुण सभी में, नित नये उत्पन्न हों ॥
 प्रभु विघ्न आये पास ना, ऐसी कृपा हो आपकी ।
 निशिदिन सदा निर्मय रहें, सतांप हो नहि ताप की ॥
 कल्याण होये विश्व का, अस जान हमको दीजिये ।
 निशि दिन रहें कर्तव्य रल, अस शक्ति हमनें कीजियें ॥
 तुम भक्त - वत्सल ईश हो, भौवन तुम्हारा नाम है।
 सत कोटि कोट्न अहर्निशि, सुचि मन सहित प्रणाम है ॥
 हो निर्विकार तथा पितुम हो भक्त वत्सल सर्वथा, हो तुम निरिहत तथा पी उद्भुत सृष्टी रचते हो सदा ।
 आकार हीन तथा पितुम साकार सन्तत सिध्द हो, सर्वेश होकर भी सदातुम प्रेम वस प्रसिध्द हो ॥
 करता तुही भरता तुही हरता तुही हो शृष्टि के, हे ईश बहुत उपकार तुम ने सर्लदा हम पर किये ।
 उपकार प्रति उपकार मे क्या दें तुम्हे इसके लिए, है क्या हमारा शृष्टि में जो दे तुम्हे इसके लिए ॥
 जय दीन बन्धु सोक सिधी दैव दैव दया निधे, चारो पदार्थ दया निधे फल है तुम्हारे दृष्टि के।



• श्री विश्वकर्मा चालीसा

दोहा

श्री विश्वकर्मा प्रभु वन्दङ्क चरणकमल धरिद्यान ।
श्रीशुभ बल अरु शिल्पगुण दीजे दया निधान ॥

जय श्री विश्वकर्मा भगवाना । जय विश्वेश्वर कृपा निधाना ॥
शिल्पाचार्य परम उपकारी । भुवना-पुत्र नाम छविकारी ॥
अष्टमबसु प्रभास-सुत नागर । शिल्पज्ञान जग कियउ उजागर ॥
अद्रभुत सकल सुष्ठि के कर्ता । सत्य जान श्रुति जग हित धर्ता ॥
अतुल तेज तुम्हतो जग माही । कोइ विश्व मँह जानत नाही ॥
विश्व सृष्टि-कर्ता विश्वेशा । अद्रभुत वरण विराज सुवेशा ॥
एकानन पंचानन राजे । द्विभुज चतुर्भुज दशभुज साजे ॥
चक्रसुदर्शन धारण कीन्हे । वारि कमण्डल वर कर लीन्हे ॥
शिल्पशास्त्र अरु शंख अनूपा । सोहत सूत्र माप अनुरूपा ॥
धमुष वाण अरु त्रिशूल सोहे । नौवें हाथ कमल मन मोहे ॥
दसवाँ हस्त बरद जग हेतू । अति भव सिंधु माँहि वर सेतू ॥
सूरज तेज हरण तुम कियऊ । अस्त्र शस्त्र जिससे निरमयऊ ॥
चक्र शक्ति अरु त्रिशूल एका । दण्ड पालकी शस्त्र अनेका ॥
विष्णुहिं चक्र शुल शंकरहीं । अजहिं शक्ति दण्ड यमराजहीं ॥
इंद्रहिं वज्र व वर्णहिं पाशा । तुम सबकी पूरण की आशा ॥
भाँति - भाँति के अस्त्र रचाये । सतपथ को प्रभु सदा बचाये ॥
अमृत घट के तुम निर्माता । साधु संत भक्तन सुर ब्राता ॥
लौह काष्ट ताम पाषाना । स्वर्ण शिल्प के परम सजाना ॥
विद्युत अग्नि पवन भू वारी । इनसे अद्भुत काज वारी ॥
खान पान हित भाजन नाना । भवन विभिषत विविध विधाना ॥
विविध व्सत हित यत्रं अपारा । विरचेहु तुम समस्त संसारा ॥
द्रव्य सुगंधित सुमन अनेका । विविध महा औषधि सविवेका ॥
शंभु विरंचि विष्णु सुरपाला । वरुण कुबेर अग्नि यमकाला ॥
तुम्हरे ढिग सब मिलकर गयऊ । करि प्रमाण पुनि अस्तुति ठयऊ ॥

भे आतुर प्रभु लखि सुर-शोका । कियउ काज सब भये अशोका ॥
 अद् भुत रचे यान मनहारी । जल-थल-गगन माँहि-समचारी ॥
 शिव अरु विश्वकर्म प्रभु माँही । विज्ञान कह अतंर नाही ॥
 बरनै कौन स्वरूप तुम्हारा । सकल सृष्टि है तव विस्तारा ॥
 रचेत विश्व हित त्रिविध शरीरा । तुम बिन हरै कौन भव हारी ॥
 मंगल-मूल भगत भय हारी । शोक रहित त्रैलोक विहारी ॥
 चारो युग परपात तुम्हारा । अहै प्रसिद्ध विश्व उजियारा ॥
 ऋद्धि सिद्धि के तुम वर दाता । वर विज्ञान वेद के ज्ञाता ॥
 मनु मय त्वष्टा शिल्पी तक्षा । सबकी नित करतें हैं रक्षा ॥
 पंच पुत्र नित जग हित धर्मा । हवै निष्काम करै निज कर्मा ॥
 प्रभु तुम सम कृपाल नहिं कोई । विपदा हरै जगत मँह जोइ ॥
 जै जै जै भौवन विश्वकर्मा । करहु कृपा गुरुदेव सुधर्मा ॥
 इक सौ आठ जाप कर जोई । छीजै विपति महा सुख होई ॥
 पढ़ाहि जो विश्वकर्म-चालीसा । होय सिद्ध साक्षी गौरीशा ॥
 विश्व विश्वकर्मा प्रभु मेरे । हो प्रसन्न हम बालक तेरे ॥
 मैं हूँ सदा उमापति चेरा । सदा करो प्रभु मन मँह डेरा ॥
 दोहा - करहु कृपा शंकर सरिस, विश्वकर्मा शिवरूप ।
 श्री शुभदा रचना सहित, हृदय बसहु सुरभुप ॥

आरती श्री विश्वकर्मा जी की

ओ३म् जय विश्वकर्मा प्रभु जय विश्वकर्मा । शरण तुम्हारी आये हैं, रक्षक श्रुति धर्मा ।
 उमा भवानी शंकर भोले, शरण तुम्हारी आये । कुंज बिहारी कृष्ण योगी, दर्शन करने धाये ॥1
 सृष्टि धर्ता पालन कर्ता, ज्ञान विकास किया । धनुष बना छिन माहिं तुमने, शिवाजी हाथ दिया ॥2
 आठ व्दीप नौ खण्ड स्वामी, चौदह भूवन बनायें । पंचानन करतार जगत के, देख सन्त हर्षाये ॥3
 शेष शारदा नारद आदि देवन की करी सहाई । दुर्गा इन्द्र सीया राम ने निज मुख गाथा गाई ॥4
 ब्रह्म विष्णु विश्वकर्मा तूं शक्ति रूपा । जगहितकारी सकंट हारी, तुम जग के भूपा ॥5
 ज्ञान विज्ञान निधि दाता त्वष्टा भुवन पति । अवतार धार के स्वामी तुमने जग में कियो गति ॥ 6
 मनु मय त्वष्टा पाँच तनय, ज्ञान शिल्प दाता । शिल्प विधा का आदि युग में, तुम सम को ज्ञाता ॥7
 मन भावन पावन रूप स्वामी ऋषियों ने जाना । पीत वसन तन सोहे स्वामी, मुक्ति पद बाना ॥8
 विश्वकर्मा परम गुरु की जो कोई आरती गावै । विश्वप्रताप सन्ताप मिटै, घर सम्पत आवै ॥9

श्री विश्वकर्मा भगवान

हम अपने प्राचीन ग्रंथों उपनिषद् एवं पुराण आदि का अवलोकन करें तो पायेंगे कि आदि काल से ही विश्वकर्मा शिल्पी अपने विशिष्ट ज्ञान एवं विज्ञान के कारण ही न मात्र मानवों अपितु देवगणों द्वारा भी पूजित और वंदित है। भगवान विश्वकर्मा के आविष्कार एवं निर्माण कोर्यों के सन्दर्भ में इन्द्रपुरी, यमपुरी, वरुणपुरी, कुबेरपुरी, पाण्डवपुरी, सुदामापुरी, शिवमण्डलपुरी आदि का निर्माण इनके द्वारा किया गया है। पुष्पक विमान का निर्माण तथा सभी देवों के भवन और उनके दैनिक उपयोगी होनेवाले वस्तुएं भी इनके द्वारा ही बनाया गया है। कर्ण का कुण्डल, विष्णु भगवान का सुदर्शन चक्र, शंकर भगवान का त्रिशूल और यमराज का कालदण्ड इत्यादि वस्तुओं का निर्माण भगवान विश्वकर्मा ने ही किया है।

भगवान विश्वकर्मा ने ब्रह्माजी की उत्पत्ति करके उन्हे प्राणीमात्र का सृजन करने का वरदान दिया और उनके द्वारा 84 लाख योनियों को उत्पन्न किया। श्री विष्णु भगवान की उत्पत्ति कर उन्हे जगत में उत्पन्न सभी प्राणियों की रक्षा और भगण-पोषण का कार्य सौप दिया। प्रजा का ठीक सुचारू रूप से पालन और हुक्मत करने के लिये एक अत्यंत शक्तिशाली तिव्रगामी सुदर्शन चक्र प्रदान किया। बाद में संसार के प्रलय के लिये एक अत्यंत दयालु बाबा भोलेनाथ श्री शंकर भगवान की उत्पत्ति की। उन्हे डमरु, कमण्डल, त्रिशूल आदि प्रदान कर उनके ललाट पर प्रलयकारी तिसरा नेत्र भी प्रदान कर उन्हे प्रलय की शक्ति देकर शक्तिशाली बनाया। यथानुसार इनके साथ इनकी देवियां खजाने की अधिपति माँ लक्ष्मी, राग-रागिनी वाली वीणावादिनी माँ सरस्वती और माँ गौरी को देकर देवों को सुशोभित किया।

हमारे धर्मशास्त्रों और ग्रन्थों में विश्वकर्मा के पाँच स्वरूपों और अवतारों का वर्णन प्राप्त होता है!

- विराट विश्वकर्मा - सृष्टि के रचेता
- धर्मवंशी विश्वकर्मा - महान शिल्प विज्ञान विधाता प्रभात पुत्र
- अंगिरावंशी विश्वकर्मा - आदि विज्ञान विधाता वसु पुत्र
- सुधन्वा विश्वकर्मा - महान शिल्पाचार्य विज्ञान जन्मदाता ऋषि अथवी के पात्र
- भृंगुवंशी विश्वकर्मा - उत्कृष्ट शिल्प विज्ञानाचार्य (शुक्राचार्य के पौत्र)

देवगुरु बृहस्पति की भगिनी भुवना के पुत्र भौवन विश्वकर्मा की वंश परम्परा अत्यंत वृद्ध है। सृष्टि के वृद्धि करने हेतु भगवान पंचमुख विष्वकर्मा के सघोजात नामवाले पूर्व मुख से सामना दूसरे वामदेव नामक दक्षिण मुख से सनातन, अघोर नामक पश्चिम मुख से अहिंमून, चौथे तत्पुरुष नामवाले उत्तर मुख से प्रत्न और पाँचवे ईशान नामक मध्य भागवाले मुख से सुपर्णा की उत्पत्ति शास्त्रों में वर्णित है। इन्ही सानग, सनातन, अहमन, प्रत्न और सुपर्ण नामक पाँच गोत्र प्रवर्तक ऋषियों से प्रत्येक के पच्चीस-पच्चीस सन्ताने उत्पन्न हुई जिससे विशाल विश्वकर्मा समाज का विस्तार हुआ है।

शिल्पशास्त्रों के प्रणेता बने स्वयं भगवान विश्वकर्मा जो ऋषशि रूप में उपरोक्त सभी ज्ञानों का भण्डार है, शिल्पों के आचार्य शिल्पी प्रजापति ने पदार्थ के आधार पर शिल्प विज्ञान को पाँच प्रमुख धाराओं में विभाजित करते हुए तथा मानव समाज को इनके ज्ञान से लाभान्वित करने के निर्मित पाणच प्रमुख शिल्पाचार्य पुत्र को उत्पन्न किया जो अयस , काष्ट, ताम, शिला एवं हिरण्य शिल्प के अधिष्ठाता मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी एवं दैवजा के रूप में जाने गये। ये सभी ऋषि वेदों में पारंगत थे।

कन्दपुराण के नागर खण्ड में भगवान विश्वकर्मा के वशंजों की चर्चा की गई है। ब्रह्म स्वरूप विराट श्री विश्वकर्मा पंचमुख है। उनके पाँच मुख हैं जो पुर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और ऋषियों को मत्रों द्वारा उत्पन्न किये हैं। उनके नाम हैं - मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और देवज ।

- ऋषि मनु विश्वकर्मा - ये "सानग गोत्र" के कहे जाते हैं। ये लोहे के कर्म के उद्धगता है। इनके वशंज लोहकार के रूप में जाने जाते हैं।
- सनातन ऋषि मय - ये सनातन गोत्र के कहे जाते हैं। ये बढ़ई के कर्म के उद्धगता है। इनके वंशज काष्टकार के रूप में जाने जाते हैं।
- अहभून ऋषि त्वष्ठा - इनका दूसरा नाम त्वष्ठा है जिनका गोत्र अहंभन है। इनके वंशज ताम्रक के रूप में जाने जाते हैं।
- प्रयत्न ऋषि शिल्पी - इनका दूसरा नाम शिल्पी है जिनका गोत्र प्रयत्न है। इनके वशंज शिल्पकला के अधिष्ठाता हैं और इनके वंशज संगतराश भी कहलाते हैं इन्हें मुर्तिकार भी कहते हैं।
- देवज ऋषि - इनका गोत्र है सुर्पण। इनके वशंज स्वर्णकार के रूप में जाने जाते हैं। ये रजत, स्वर्ण धातु के शिल्पकर्म करते हैं।

परमेश्वर विश्वकर्मा के ये पाँच पुत्र, मनु, मय, त्वष्ठा, शिल्पी और देवज शस्त्रादिक निर्माण करके संसार करते हैं। लोकहित के लिये अनेकानेक पदार्थ को उत्पन्न करते वाले तथा घर, मंदिर एवं भवन, मुर्तिया आदि को बनाने वाले तथा अलंकारों की रचना करने वाले हैं। इनकी सारी रचनाये लोकहितकारणी हैं। इसलिए ये पाँचों एवं वन्दनीय ब्राह्मण हैं और यज्ञ कर्म करने वाले हैं। इनके बिना कोई भी यज्ञ नहीं हो सकता।

मनु ऋषि ये भगवान विश्वकर्मा के सबसे बड़े पुत्र थे। इनका विवाह अंगिरा ऋषि की कन्या कंचना के साथ हुआ था इन्होंने मानव सृष्टि का निर्माण किया है। इनके कुल में अग्निगर्भ, सर्वतोमुख, ब्रह्म आदि ऋषि उत्पन्न हुये हैं। भगवान विश्वकर्मा के दुसरे पुत्र मय महर्षि थे। इनका विवाह परासर ऋषि की कन्या सौम्या देवी के साथ हुआ था। इन्होंने इन्द्रजाल सृष्टि की रचना किया है। इनके कुल में विष्णुवर्धन, सूर्यतन्त्री, तंखपान, ओज, महोज इत्यादि महर्षि पैदा हुए हैं।

भगवान विश्वकर्मा के तिसरे पुत्र महर्षि त्वष्ठा थे। इनका विवाह कौषिक ऋषि की कन्या जयन्ती के साथ हुआ था। इनके कुल में लोक त्वष्ठा, तन्तु, वर्धन, हिरण्यगर्भ शुल्पी अमलायन ऋषि उत्पन्न हुये हैं। वे देवताओं में पूजित ऋषि थे।

भगवान विश्वकर्मा के चौथे महर्षि शिल्पी पुत्र थे। इनका विवाह भृगु ऋषि की करुणाके साथ हुआ था। इनके कुल में बृद्धि, धुन, हरितावश्व, मेधवाह नल, वस्तोष्यति, शवमुन्यु आदि ऋषि हुये हैं। इनकी कलाओं का वर्णन मानव जाति क्या देवगण भी नहीं कर पाये हैं।

भगवान विश्वकर्मा के पाँचवे पुत्र महर्षि दैवज्ञ थे। इनका विवाह जैमिनी ऋषि की कन्या चन्द्रिका के साथ हुआ था। इनके कुल में सहस्रातु, हिरण्यम, सूर्यगोविन्द, लोकबान्धव, अर्कषली इत्यादी ऋषि हुये हैं।

इन पाँच पुत्रों के अपनी छीनी, हथौड़ी और अपनी ऊँगलीयों से निर्मित कलाये दर्शकों को चकित कर देती हैं। उन्होंने अपने वशंजों को कार्य सौप कर अपनी कलाओं को सारे संसार में फैलाया और आदि युग से आजलक अपने-अपने कार्य को सभालते चले आ रहे हैं।

विश्वकर्मा वैदिक देवता के रूप में मान्य हैं, किंतु उनका पौराणिक स्वरूप अलग प्रतीत होता है। आरंभिक काल से ही विश्वकर्मा के प्रति सम्मान का भाव रहा है। उनको गृहस्थ जैसी संस्था के लिए आवश्यक सुविधाओं का निर्माता और प्रवर्तक कहा माना गया है। वह सृष्टि के प्रथम सूत्रधार कहे गए हैं-

देवौ सौ सूत्रधारः जगदखिल हितः ध्यायते सर्वसत्त्वैः

वास्तु के 18 उपदेष्टाओं में विश्वकर्मा को प्रमुख माना गया है। उत्तर ही नहीं, दक्षिण भारत में भी, जहां मय के ग्रन्थों की स्वीकृति रही है, विश्वकर्मा के मतों को सहज रूप में लोकमान्यता प्राप्त है। वराहमिहिर ने भी कई स्थानों पर विश्वकर्मा के मतों को उद्धृत किया है।

विष्णुपुराण के पहले अंश में विश्वकर्मा को देवताओं का वर्धकी या देव-बढ़ई कहा गया है तथा शिल्पावतार के रूप में सम्मान योग्य बताया गया है। यही मान्यता अनेक पुराणों में आई है, जबकि शिल्प के ग्रंथों में वह सृष्टिकर्ता भी कहे गए हैं। स्कंदपुराण में उन्हें देवायतनों का सृष्टा कहा गया है। कहा जाता है कि वह शिल्प के इतने जाता थे कि जल पर चल सकने योग्य खड़ाऊ तैयार करने में समर्थ थे।

सूर्य की मानव जीवन संहारक रश्मियों का संहार भी विश्वकर्मा ने ही किया। राजवल्लभ वास्तुशास्त्र में उनका ज़िक्र मिलता है। यह ज़िक्र अन्य ग्रंथों में भी मिलता है। विश्वकर्मा कंबासूत्र, जलपात्र, पुस्तक और जानसूत्र धारक हैं, हंस पर आरूढ़, सर्वदृष्टिधारक, शुभ मुकुट और वृद्धकाय हैं—

कंबासूत्राम्बुपात्रं वहति करतले पुस्तकं जानसूत्रम्।

हंसारूढस्विनेत्रं शुभमुकुट शिरः सर्वतो वृद्धकायः॥ उनका अष्टगंधादि से पूजन लाभदायक है।

विश्व के सबसे पहले तकनीकी ग्रंथ विश्वकर्मीय ग्रंथ ही माने गए हैं। विश्वकर्मीयम ग्रंथ इनमें बहुत प्राचीन माना गया है, जिसमें न केवल वास्तुविद्या, बल्कि रथादि वाहन व रत्नों पर विमर्श है। विश्वकर्माप्रकाश, जिसे वास्तुतंत्र भी कहा गया है, विश्वकर्मा के मतों का जीवंत ग्रंथ है। इसमें मानव और देववास्तु विद्या को गणित के कई सूत्रों के साथ बताया गया है, ये सब प्रामाणिक और प्रासंगिक हैं। मेवाड़ में लिखे गए अपराजितपृच्छा में अपराजित के प्रश्नों पर विश्वकर्मा द्वारा दिए उत्तर लगभग साढ़े सात हजार श्लोकों में दिए गए हैं। संयोग से यह ग्रंथ 239 सूत्रों तक ही मिल पाया है। इस ग्रंथ से यह भी पता चलता है कि विश्वकर्मा ने अपने तीन अन्य पुत्रों जय, विजय और सिद्धार्थ को भी जान दिया।



• श्री विश्वकर्मा वंशावली

जैसे राम् कृष्णा आदि ईश्वर के अनेक अवतार पुराणों में वर्णन किये गये हैं, वैसे ही विश्वकर्मा भगवान के अवतारों का वर्णन मिलता है। स्कन्द पुराण के काशी खण्ड में महादेव जी ने पार्वती जी से कहा है कि हे पार्वती मैं आप से पाप नाशक कथा कहता हूँ। इसी कथा में महादेव जी ने पार्वती जी को विश्वकर्मेश्वर लिंगं प्रकट होने की कथा कहते हुए त्वष्टा प्रजापति के पुत्र के संबंध में कहा:

प्रथम अवतार

विश्वकर्माभवत्पूर्व ब्रह्मण स्त्वपरोत्तनुः । त्वष्टः प्रजापते: पुत्रो निपुणः सर्व कर्मस ॥

अर्थःप्रत्यक्ष आदि ब्रह्मा विश्वकर्मा त्वष्टा प्रजापति का पुत्र पहले उत्पन्न हुआ और वह सब कामों में निपुण था।
दूसरा अवतार

स्कन्द पुराण प्रभास खण्ड सोमनाथ माहात्म्य सोम पुत्र संवाद में विश्वकर्मा के दूसरे अवतार का वर्णन इस भातिं मिलता है। ईश्वर उचावः **शिल्पोत्पतिं प्रवक्ष्यामि शृणु षण्मुख यत्नतः । विश्वकर्माऽभवत्पूर्व शिल्पिनां शिव कर्मणाम् ॥**

मदंगेषु च सभूताः पुत्रा पंच जटाधराः । हस्त कौशल संपूर्णाः पंच ब्रह्मरताः सदा ॥

एक समय कैलाश पर्वत पर शिवजी, पार्वती, गणपति आदि सब बैठे थे उस समय स्कन्दजी ने गणपतिजी के रत्नजडित दातों और पार्वती जी के जवाहरात से जड़े हुए जेवरों को देखकर प्रश्न किया कि, हे पार्वतीनाथ, आप यह बताने की कृपा करे कि ये हीरे जवाहरात चमकिले पदार्थों किसने निर्मित किये? इसके उत्तर में भोलानाथ शंकर ने कहा कि शिल्पियों के अधिपति श्री विश्वकर्मा की उत्पत्ति सुनो। शिल्प के प्रवर्तक विश्वकर्मा पांच मुखों से पांच जटाधरी पुत्र उत्पन्न हुए जिन के नाम मनु, मय, शिल्प, त्वष्टा, दैवेज थे। यह पांचों पुत्र ब्रह्मा की उपासना में सदा लगें रहते थे इत्यादि।

तीसरा अवतार

आर्द्व वसु प्रभास नामक को अंगिरा की पुत्री बृहस्पति जी की बहिन योगसिद्ध विवाही गई और अष्टम वसु प्रभाव से जो पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम विश्वकर्मा हुआ जो शिल्प प्रजापति कहलाया इसका वर्णन वायुपुराण अ.22 उत्तर भाग में दिया है: **बृहस्पतेस्तु भगिनो वरस्त्री ब्रह्मचारिणी । योगसिद्धा जगत्कृत्स्नमसक्ता चरते सदा ॥**

प्रभासस्य तु सा भार्या वसु नामष्ट मस्य तु । विश्वकर्मा सुत स्तस्यां जातः शिल्प प्रजापतिः ॥

मत्स्य पुराण अ.5 में भी लिखा है:

विश्वकर्मा प्रभासस्य पुत्रः शिल्प प्रजापतिः । प्रसाद भवनोद्यान प्रतिमा भूषणादिषु । तडागा राम कूप्रेषु स्मृतः सोमऽवर्धकी ॥

अर्थः प्रभास का पुत्र शिल्प प्रजापति विश्वकर्मा देव, मन्दिर, भवन, देवमूर्ति, जेवर, तालाब, बावडी और कुएं निर्माण करने देव आचार्य थे।

आदित्य पुराण में भी कहा है कि: **विश्वकर्मा प्रभासस्य धर्मस्थः पातु स ततः ॥**

महाभारत आदि पर्व विष्णु पुराण और भागवत में भी इसका उल्लेख किया गया है।

विश्वकर्मा ऋषि

विश्वकर्मा नाम के ऋषि भी हुए हैं। विद्वानों को इसका पूरा पता है कि ऋग्वेद में विश्वकर्मा सूक्त दिया हुआ है, और इस सूक्त में 14 ऋचायें हैं इस सूक्त का देवता विश्वकर्मा है और मंत्र दृष्टा ऋषि विश्वकर्मा है।

विश्वकर्मा सूक्त 14 उल्लेख इसी ग्रन्थ विश्वकर्मा-विजय प्रकाश में दिया है। 14 सूक्त मंत्र और अर्थ भावार्थ सब लिखे दिये हैं। पाठक इसी पुस्तक में देखे लें। यहाँ विश्वा भुवनानि इत्यादि से सूक्त प्रारम्भ होता है यजुर्वेद

4/3/4/3 विश्वकर्मा ते ऋषि इस प्रमाण से विश्वकर्मा को होना सिद्ध है इत्यादि। पाठकगण। वेदों और पुराणों के अनेक प्रमाणों से हम विश्वकर्मा को परमात्मा परमपिता जगतपिता, सृष्टि कर चुके तथा विश्वकर्मा के अवतारों को भी पुराणों से बता चुके हैं। अब भी कोई हटधर्मों करें तो हमारे पास उनका इलाज करने का तरीका भी है। इन टकापन्थी भोजन भट्टों ने बहुत धूर्तता की है। विश्वकर्मा देव की अवेहलना करने से ही इस समय ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि कष्टमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। न इनके पास खुद की उत्पत्ति है यह टकशाली ब्राह्मण यह देख पद्म पुराण के वचनों पर तनिक ध्यान नहीं देते, देखों कितना साफ कहा है। अर्थ विष्णु और विश्वकर्मा में कोई भेद नहीं।

विश्वकर्मा अनेक नामों से विभूषित जगतकर्ता विश्वकर्मा भौवन विश्वकर्मा, ऋषि विश्वकर्मा धर्म ग्रन्थों में अनेक अवतरण आये हैं। विषय अनेकानेक नामों में बटा हुआ है विश्वकर्मा ब्राह्मण कर्म है, अर्थात् विश्वकर्मा सन्तान कहने का दावा करने वाले तथा अपने को पांचाल शिल्पी ब्राह्मण बताने वाले खरे ब्राह्मण हैं। यहां हम धर्मग्रन्थों के प्रमाणों को देकर अन्त में ग्रन्थों के आधार पर भृगु, अंगिरा, मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और दैवेज आदि की वंशावली भी सप्रमाण दिखायेंगे।

प्राचीन धर्म शास्त्रों में शिल्पज्ञ, विश्वकर्मा ब्राह्मणों को रथकार वर्धकी, एतब कवि, मोयावी, पाँचाल, रथपति, सुहस्त सौर और परासर आदि शब्दों में सम्बोधित किया गया था। उस समय आजकल के सामान लोहाकारों, काष्ठकारों और स्वर्णकारों आदि सभी के अलग-अलग सहस्रों जाति भेद नहीं थे। प्राचीन समय में शिल्प कर्म बहुत उंचा समझा जाता था, क्योंकि धर्मग्रन्थों की खोज में हमें पता चलता है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों ही वर्ण रथ कर्म अर्थात् शिल्प कर्म करते थे। हम यहां विश्वकर्मा ब्राह्मणों के ब्राह्मणत्य विषयक कुछ प्रमाण देने से पूर्व यह उचित समझते हैं कि रथकार, पाचांल, नाराशस इत्यादि शब्दों के विषय में कुछ थोड़ा समझ दें। जिससे आगे को जो धर्म शास्त्रों के प्रमाण हम दिखायेंगे उनमें जब इन शब्दों में से कोई आवे तो हमारे पाठकों को समझने में कठिनाई न पड़ें।

रथकार

यह शब्द प्राचीन धर्मग्रन्थों में अनेक स्थलों पर आया है, और उनके शिल्पी ब्राह्मण के स्थान में प्रयोग हुआ है। अर्थात् लोककार, काष्ठकार, स्वर्णकार, सिलावट और तामकार सब ही काम करने वाले कुशल प्रवीण शिल्पी ब्राह्मण का बोध केवल रथकार शब्द से ही कराया गया है, और यही शब्दों वेदों तथा पुराणों में भी शिल्पज्ञ ब्राह्मणों के लिए लिखा गया है। स्कन्द पुराण नागर खण्ड अध्याय 6 में रथकार शब्द का प्रयोग हुआ है:

सद्योजाता दि पंचभ्यो मुखेभ्यः पंच निर्भये ॥ विश्वकर्मा सुता होते रथ कारास्तु पचं च ॥

तास्मिन् काले महाभागो परमो मय रूप भाक् ॥ पाषणदार कंटकं सौ वर्ण दशकं तदा ॥

काष्ठं च नव लोहानि रथ कृद्यों ददौ विभुः ॥ रथ कारास्तदा चक्रुः पचं कृत्यानि सर्वदा ॥

षडदशनादय नुष्ठानं षट् कर्मनिरताश्च ये ॥

अर्थ: शंकर बोले कि हे स्कन्द, सद्योजात् वामदेव, तत्पुरुष, अधीर और ईशान यह पांच ब्रह्म सजंक विश्वकर्मा के पांच मुखों से पैदा हुए। इन विश्वकर्मा पुत्रों की रथकार सजां हैं। अनेक रूप धारण करने वाले उस विश्वकर्मा ने अपने पुत्रों को टांकी आदि दस शिल्प आयुध अर्थात् दस औजार सोना आदि नौ धातु लोहा, लकड़ी आत्यादि दिया। उसके यह षटेकर्म करने वाले रथकार सृष्टि कार्य के पंचनिध पवित्र कर्म करने लगे।

रथकार शब्द क ब्राह्मण सूचक होने के विषय में व्याकरण में भी अष्टाध्यायी पाणिनि सूत्र पाठ सूत्र -

शिल्पिनि चा कुत्रः 6/2/76 सजांयांच 6/2/77

सिद्धांत कौमुदी वृत्तिः- शिल्प वाचिनि समासे अष्णते ।

परे पूर्व माद्युदातं, स चेदण कृत्रः परो न भवति ।

ततुवायः शिल्पिनि किम्- काडंलाव, अकृत्रः किं-कुम्भकारः ।

सज्जां यांच अणयते परे तंतुवायो नाम कृमिः ।

अकृत्रः इत्येव रथकारां नाम ब्राह्मणः पाणिनिसूत्र 4/1-151 कृवादिभ्योण्यः ।

ब्राह्मण जाति सूचक अर्थ को बताने वाले जो गोत्र शब्द गण सूत्र में दियें हैं, वह यह हैः कुरु, गर्ग, मग्नुष, अजमार, रथकार, बाबदूक, कवि, मति, काधिजल इत्यादि, कौरव्यां, ब्राह्मणा, मार्ग्य, मांगुयाः आजमार्याः राथकार्याः वावद्क्याः कात्या मात्याः कापिजल्याः ब्राह्मणाः इति सर्वत्र।

तात्पर्य यह है कि व्याकरण शास्त्र में भी रथकार शब्द को आर्य गोत्र, ब्राह्मण जाति बोधक सिद्ध किया हुआ है और उसका उदाहरण भी रथकारां नाम ब्राह्मण दिया है। जिससे सिद्ध किया गया है कि रथकार शब्द ब्राह्मण जाति बोधक है क्योंकि- रथं करोति इति रथकारः। अर्थात् रथ निर्माण करने वाले ब्राह्मण का बोध प्राचीन ग्रन्थों में रथकार शब्द से होता है। यहां यह भी लिख देना जरूरी जान पड़तां है कि स्मृतियों में रथकार एक संकीर्ण जाति को भी लिखा है, परन्तु जहां पवित्र देव शिल्प आदि का वर्णन आता है। वहां शिल्पी ब्राह्मण संतति रथकार का ही मतलब होता है। आपको रतकार विषय में शास्त्र के मन्त्र और रथकार का प्राचीन समय में जो मान, समान्न प्रतिष्ठा थी उस समय विश्वकर्मा का रथकार रूप विस्तृत था। राजे महाराजा सभी विश्वकर्मा रथकारां को आदर देते थे क्योंकि कलाकार राष्ट्रं के निर्माण करने में अग्रसर रखते थे यह ब्राह्मण वर्ग रथकारां में था।

पांचाल

रथकार शब्द के विषय के नमूने के तौर पर ऊपर उदाहरण देकर बता चुके हैं। अब इसी भाति एक दो उदाहरण पांचाल शब्द के विषय में भी देकर बतावेंगे कि विश्वकर्मा ब्राह्मणों को प्राचीन धर्म ग्रन्थों में पांचाल भी कहा गया है। बराह पुराण में कहा है:

पांचाल ब्राह्मणेति हासः कथं ॥ तत्र सुवर्णालंकार वाणिज्यों प जीविनः पांचाल ब्राह्मणा ॥

शैवागम में कहा है:

पंचालाना च सर्वेषामा चारोप्यथ गीयते । षट् कर्म विनिर्मित्यनी पचांलाना स्मुतानिच ॥

रुद्रवामल वास्तु तन्त्र में शिवाजी महाराज ने कहा कि:

शिवा मनुमंय स्त्वष्टा तक्षा शिल्पी च पंचमः ॥ विश्वकर्मसुता नेतान् विद्धि प्रवर्तकान् ॥

एतेषां पुत्र पौत्राणामप्येते शिल्पिनो भ्रूवि ॥ पंचालानां च सर्वेषां शाखास्याच्छौन कायनो ॥

पंचालास्ते सदा पूज्याः प्रतिमा विश्वकर्मणः ॥ रुद्रवामल वास्तु तन्त्र व्रत्यादि ॥

उपरोक्त प्रमाणों में पांचाल शब्द का प्रयोग विश्वकर्माके स्थान में किया गया है। अर्थात् रथकार और पांचाल दोनों शब्द विश्वकर्मा ब्राह्मण बोधक ही हैं।

स्थापत्य। यज्ञ कर्म और देव कर्म संबंधी कर्म में कहीं कहीं विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण की सज्जां स्थापत्य भी कही गई है। जैसे भागवत स्कन्द 3 में स्थापत्य विश्वकर्म शास्त्र लिखा है, इसका यही अर्थ है कि यज्ञ सम्बन्धी और देव संबंधी पवित्र शिल्प कर्म करने वाले विश्वकर्मा सन्तान ब्राह्मण हैं। इसकी पुष्टि अमर कोष के प्रमाण से भी होती है।

देखो - अमर कोष अ. ब्रह्मवर्ग - **सर्गीष्प तोष्टय्या स्थपति:**

अर्थः बृहस्पति सज्जंक इष्ट अर्थात् बृहस्पति सज्जां वाले यह कर्म करने वाले बृहस्पति गुरु को कहते हैं और दूसरे बृहस्पति विश्व-कर्म कुलोत्पन्न शिल्पाचार्य हुए हैं।

नाराशंस

अंगिरा महर्षि को ऋग्वेद में नाराशंस कहा है इसका प्रमाण ऋग्वेद अ. 8/2/1 में देखो -

नराः अगिरसः महर्षयः मनुष्य जाता वुत्पन्नत्वात् ते शंस्यते इति नाराशंसः।

बौधायन श्रौत सूत्र के महा प्रवराध्याय में भी लिखा है -

वसिष्ट शुनिकात्रि भृगु कणव वाघश्चाधूल राजन्य वैश्य इति नाराशंसः ॥

गोत्र प्रवर दर्पण में भी यह शब्द पाया जाता है -

भृगु गणे त्वष्ट्याः अग्ने नाराशंसान् व्याख्या स्यामः। वशिष्ठ शुनिकात्रि भृगु काणव बाघश्चाधूल इति ॥

नाराशंस शब्द पितर सज्ञां में भी प्रयुक्त हुआ है। देखो ऋग्देव अध्याय 8/1/16/3 -

मनोन्वा हुवामुहे नाराशंसेन सोमेने ॥

भाष्य - नरेः शस्यते इति नाराशंसः पितरः ॥

आश्वलायन श्रौत सूत्र में भी नाराशंस का प्रयोग मिलता है। देखो सूत्र 5/6/30 -

आप्यायिताश्चिमतान् सादयन्ति ते नाराशंस भवति ॥

उपरोक्त अनेक प्रमाण हमने रथकार पांचाल, रथापत्य और नाराशंस शब्दों के प्रयोग को जिखाकर यह सिद्ध किया हा कि यह सब जहां कही भी धर्म ग्रन्थों में भी लिखे गये हैं। वहां वह शिल्पी ब्राह्मणों के बोधक है। अब आगे हम यह सिद्ध करके दिखोयेंगे कि विश्वकर्मा वंश के ब्राह्मण होने के और भी अनेक प्रमाण सनातनी धर्म ग्रन्थों में खोजने से मिले सकते हैं। उपरोक्त रथकार, पांचाल, रथकार, नाराशंस यह सब स्तंभ प्रमाण संग्रह अर्थात् विश्वकर्मा - ब्राह्मण - भास्कर से संग्रहीत किए हैं। यह पुस्कत स्वः जयकृष्ण मणिठिया, शर्मा, गुरुदेव की संग्रहीत है जिसे विश्वकर्मा-विजय-प्रकाश में कई स्तम्भ संग्रहीत कर प्रकाशित किये हैं।

भृगु ऋषि कुल

वायु पुराण अध्याय 4 के पढ़ने से यह बात सिद्ध हो जाती है कि वास्तव में विश्वकर्मा सन्तान भृगु ऋषि कुल उत्पन्न है देखों लिखा है:

भार्य भृगोर प्रतिमे उत्तमेऽभिजाते शुभे ॥ हिरण्य कशिपोः कन्या दिव्यनाम्नी परिश्रुता ॥

पुलोम्नश्चापि पौलोमि दुहिता वर वर्णिनी ॥ भृगोस्त्वजनयद्विव्या काव्यवेदविंदा वरं ॥

देवा सुराणामाचार्य शुक्रं कविसुंत ग्रहं ॥ पितृंणा मानसी कन्या सोमपाना यशस्विनी ॥

शुक्रस्य भार्यागीराम विजये चतुरः सुतान् ॥ ब्राह्मणे मानसी कन्या सोमपाना यशस्विनीः ॥

तस्या मेव तु चत्वार पुत्राः शुक्रस्य जजिर ॥ त्वष्टावरूपी द्वावेतौ शण्डामर्कोतु ताबुभो ॥

ते तदादित्य सकाया ब्रह्मकल्पा प्रभावतः ॥

अर्थः हिरण्यकश्यप की बेटी दिव्या और पुलोमी की बेटी पौलीमी उत्तम कुलीन, यह दोनों मृग ऋषि को विवाही गई। दिव्या नाम वाली स्त्री के गर्भ से शुक्राचार्य पैदा हुए। सोम्य पितरों की मानसी कन्या अर्गी नाम वाली शुक्राचार्य को विवाही गई। शुक्राचार्य जी के सूर्य के समान ब्रह्म तेज वाले त्वष्टा, वस्त्र, शंड और अर्मक यह पुत्र पैदा हुए, इन चारों में त्वष्टा ब्रह्म तेज से विशेष सुकृत था। अर्थात् त्वष्टा में ब्रह्म तेज अधिक था। पाठक गण इससे स्पष्ट है कि त्वष्टा भृगु कुल में पैदा हुआ और ब्राह्मण था, ब्रह्म तेज की विशेषता ब्राह्मणत्व को साफ बता रही है। अब इसी कुल में त्वष्टा से विश्वकर्मा का जन्म सुनों।

त्रिशिरा विश्वरूपस्तु त्वष्टाः पुत्राय भवताम् ॥ विस्वरूपानुजश्चापि विश्वकर्मा प्रजापतिः ॥

अर्थः त्वष्टा प्रजापति के त्रिशिरा जिसका नाम विश्वरूप था बड़ा पराक्रमी और उसका भाई विश्वकर्मा प्रपति यह दो पुत्र इसी विश्वकर्मा प्रजापति के विषय में स्कन्द पुराण रे प्रभास खंड में यह लिखा है।

विश्वकर्म महदभूतं विश्वकर्मणाम् मदंगेषु च सम्भूताः ॥ पुत्रा पञ्च जटाधराः हस्त कौशल सम्पूर्णाः पञ्च ब्रह्मरताः सदा ॥

अर्थः शिल्पियों में विश्वकर्मा बड़ा महान् हुआ, जिसके पांच जटाधारी पुत्र हुए। इन्हीं विश्वकर्मा के पांच पुत्र मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और दैवज्ञ का वायु पुराण अध्याय, 4 में उल्लेख किया हुआ है इन्हीं पांच पुत्रों की सतांन जो हुई वह सब भृगु कुलोत्पन्न विश्व-ब्राह्मण या पांचाल ब्राह्मण कहलाई।

पाठकगण ध्यान दें कि उपरोक्त विदित वंश बिलकुल साफ-सुथरा और खरा है। इसमें कोई अण्ड-बण्ड ऐसी उत्पत्ति नहीं है। जैसा कि इस पुस्तक की भूमिका में हम अकसाली ब्राह्मणों की उत्पत्ति जाति भास्कर और ब्राह्मणोंत्पत्ति मार्तण्ड के अधार पर दिखा चुके हैं। पाठकों की जानकारी के लिए हम यहां भृगु कुल में उत्पन्न हुए सब ही ऋषियों का उत्पत्ति क्रमानुसार दिखाते हैं।

इस कुल में भृगु, च्यवन, दिवोदास और शौनक यह वेद मन्त्रं के द्रष्टा हुए हैं।

भृगुः ब्रह्मदेव का मानस पुत्र क् शाप से मर गये तब ब्रह्मदेव ने उनको फिर उत्पन्न किया और वह वरुण के यज्ञ में अग्नि से उत्पन्न हुए और वरुण ने इनको अपना पुत्र ग्रहण किया। इसी कारण यह वारूणी भृगु के नाम से प्रसिद्ध हुए। विशेष जिसे देखना हो वायुपुत्र अ. 4 मत्स्य पुराण अ.252 महाभारत अनुशासन पर्व अ.85 निरुक्त दैवज्ञ कांड भाग पृ. 193 और भारत वर्षीय प्राचीन ऐतिहासिक कोष में देख सकतें हैं।

भार्गवः भृगु ऋषि के पुत्र सुक्राचार्य का ही नाम भार्गव है। यह देवों और दत्यों के दोनों के ही पुरोहित अर्तात् आचार्य थे। इन्होंने शिल्प शास्त्र का ओशनस नामक ग्रंथ भी लिखा है। वायु पुराण और बृहत्संहिता अ.50 में विशेष रूप से देख सकतें हैं।

त्वष्टा: शुक्राचार्य के चार पुत्रों में सें थे। इनमें अधिक ब्रह्मतेज था। विश्वरूप और विश्वकर्माइनके दो पुत्र थे।
शौनकः यह शुनक ऋषि के पुत्र और ऋग्वेद के द्रष्टा ऋषि थे। पांचालों की शौन कायनी शाखा इन्हीं से चली है।

उपरोक्त सब ही ऋषि शिल्प कार्य करते थे। गोत्र प्रवर दीपिका में इस भृगु कुल के गोत्र प्रवर इस प्रकार दिये हैं।

भृगु ऋषि - भार्गव, च्यवन,, देवो दासेति।

वाध्न्यस्वा - भार्गव, वाध्न्यश्वा, देवो दासेति।

भार्गव - भार्गव, त्वष्टा, विश्वरूपेति।

वाधूल - भार्गव, वैतहव्य, सावेतसेति।

शुनक - शौनक, भार्गव, शौन हौत्र गार्त्समदप्ति।

किसी किसी ग्रन्थकार जैसे बोधयन नामक सूत्रकार ने वरिष्ठ शुनक अत्रि, भृगु, कण्व, वाध्न्यश्वा, वाधूल, यह गोत्र बी नाराशंस पांचालों के आर्षेय गोत्र लिखे हैं।

केवल आंगिरस कुल के प्रसिद्ध ऋषि

उपरोक्त अगिरा वशांवली दी गई है, यह प्रमाण-संग्रह से उधृत है। अगिरा ऋषि ब्रह्मा, के मुख से उत्पन्न हुये। इनका वर्णन वेद, ब्राह्मण ग्रंथं, श्रुति, स्मृति, रामायण, महाभारत और सभी पुराणों में उल्लेख है। अगिरा कुल परम श्रेष्ठ कुल है।

अंगिरा

अंगिरा ऋषि के विषय में मत्स्य पुराण, भागवत, वायु पुराण महाभारत और भारतवर्षीय प्राचीन ऐतिहासिक कोष में वर्णन किया गया है। मत्स्य पुराण में अंगिरा ऋषि की उत्पत्ति अग्नि से कही गई है। भागवत का कथन है कि अंगिरा जी ब्रह्मा के मुख से यज्ञ हेतु उत्पन्न हुए। महाभारत अनु पर्व अध्याय 83 में कहा गया है कि अग्नि से महा यशस्वी अंगिरा भृगु आदि प्रजापति ब्रह्मदेव हैं। ऋग्वेद 10-14-6 मे कहा है कि:

अमगिरासों नः पितरो नवग्वा अर्थर्वाणो भृगबः सोन्यासः। तेषां वयं सुभतों यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसः
स्यामः॥

अर्थः जिसके कुल में भरद्वाज, गौतम और अनेक महापुरुष उत्पन्न हुए ऐसे जो अग्नि के पुत्र महर्षि अंगिरा बड़े भारी विद्वान हुए हैं उनके वशं को सुनों। अंगिरस देव धनुष और बाण धारी थे, उनको ऋषि मारीच की बेटी सुरुपा व कर्दम ऋषि की बेटी स्वराट् और मनु ऋषि कन्या पथ्या यह तीनों विवाही गई। सुरुमा के गर्भ से बृहस्पति, स्वराट् से गौतम, प्रबंध, वामदेव उत्थय और उशिर यह पांछ पुत्र जन्में, पथ्या के गर्भ से विष्णु संवर्त, विचित, अयास्य असिज, दीर्घतमा, सुधन्वा यह सात पुत्र उत्पन्न हुए। उत्थय ऋषि से शरद्वान, वामदेव से बृहदुकथ्य उत्पन्न हुए। महर्षि सुधन्वा के ऋषि विभ्मा और बाज यह तीन पुत्र हुए। यह ऋषि पुत्र हुए। महर्षि सुधन्वा के ऋषि विभ्मा और बाज यह तीन पुत्र हुए। यह ऋषि पुत्र रथकार में बड़े कुशल देवता थे, तो भी इनकी गणना ऋषियों में की गई है। बृहस्पति का पुत्र महा यशस्वी भरद्वाज हुआ, यह सब अंगिरा भृगु आदि द्व शिल्प के निर्माण वाले रथकार नाम से प्रसिद्ध हुए। इसमें स्पष्ट सिद्ध हो गया की प्राचीन काल में शिल्पी ब्राह्मणों रथकार भी कहा करते थे और रथकार शब्द ब्राह्मण जाति बोधक है, इस विषय में हम पूर्व पर रथकार शब्द को व्याकरण की कसौटि पर कसकर ब्राह्मण बोधक सिद्ध कर चुके हैं।

महाभारत अमुसाशन पर्व अध्याय पर्व अध्याय 83 में अंगिरा ऋषि के आठ पुत्रों की आग्नेय सज्जां होने के विषय में यह उल्लेख है:

अष्टौ चांगिरसः पुत्राः आग्नेयास्तेऽप्युवाहताः। बृहस्पतिरूत्थयश्य पयस्यः शांतिरेवच। धोरो विरूपः संवर्तः
सुधन्वा चाष्टमः स्मृतः।



श्री प्रभू विश्वकर्मा कि वंशावली

भगवान विश्वकर्मा की वंशावली

भगवान श्री विश्वकर्मा के -	दादा	-	धर्म ऋषि
भगवान श्री विश्वकर्मा के -	पिता	-	प्रभास ऋषि
भगवान श्री विश्वकर्मा की -	माता	-	भूत्मा
भगवान श्री विश्वकर्मा के -	नाना	-	अंगिरा ऋषि
भगवान श्री विश्वकर्मा की -	नानी	-	अतिरुपा
भगवान श्री विश्वकर्मा के -	मामा	-	बृहस्पति (देवगुरु)
भगवान श्री विश्वकर्मा की -	पत्नी	-	प्रहलादी (रचना देवी)

पुत्र	पुत्रवधु
मनु-पत्नी	कंचना (सुपुत्री अंगिरस ऋषि)
मन-पत्नी	सुलोकना (सुपुत्री परवर्ष ऋषि)
त्वष्टा-पत्नी	जयन्ती (सुपुत्री भृगु ऋषि)
शिल्पी-पत्नी	करुणा (सुपुत्री भृगु ऋषि)
देवेज्ञ-पत्नी	चंद्रिका (सुपुत्री जैमिनि ऋषि)

पुत्री	दामाद
सिद्धि	श्री गणेश भगवान
बुद्धि (रिदि)	श्री गणेश भगवान
उज्ज्वलिति	श्री सुक्राचार्य
संज्ञा (रत्ना)	श्री सूर्य भगवान
पद्मा	श्री भूतु

पीत्र	विश्वरूप
दोहिता	शनिदेव



विश्वकर्मा वंशावली

सरवरिया ब्राह्मण, पंचालर ब्राह्मण, मागाध ब्राह्मण, मालवीय ब्राह्मण, कान्यकुञ्ज ब्राह्मण, रावत ब्राह्मण, महूलिया ब्राह्मण, लौषटा/लौटा ब्राह्मण, पिप्ला ब्राह्मण, त्रिवेदी ब्राह्मण, मैथिल ब्राह्मण, रामगढ़िया ब्राह्मण, नामधारी ब्राह्मण, ककुहास ब्राह्मण, सूत्रधार ब्राह्मण, मथुरिया ब्राह्मण, विश्वकर्मा संवाद परिवार

• श्री विश्वकर्मा चरित्र दर्पण

आदिकाल में भगवान विश्वकर्मा ने अपनी निजी शक्ति का द्वारा वैज्ञानिक वरदान देकर मानव को जीवन कला सिखाई थी । आज मानव भगवान विश्वकर्मा के बताये हुये मार्ग से भटक गया है । भौतिकवाद के इस युग में भगवान विश्वकर्मा की पूजा अर्चना व भक्ति करना नितान्त आवश्यक इसलिए है कि विज्ञान के युग में दुर्घटना व मानसिक अशान्ति से मुक्ति प्राप्त केवल मात्र भगवान विश्वकर्मा की शरण में जाने से ही सम्भव है । मस्तिष व मशीन का तादात्मय रहने से ही भौतिक व आध्यात्मिक प्रगति हो सकती है, इसलिये दोनों तत्वों की संचालन शक्ति भगवान विश्वकर्मा के आधीन है ।

स्वचलित परमाणु संयंत्र विमान व अन्य मोटर गाड़ी व रेलों की दुर्घटना का कारण एक ही है कि मानव सूर्य आदि सौर नक्षत्रों की गति नियमित व संचालित करने वाली समस्त ब्रह्माण्ड पर नियंत्रित रखने वाली अजस्त्र शक्ति भगवान विश्वकर्मा से विमुख होकर अपने द्वारा गढ़े हुए बहु भगवानों की पूजा व अन्य विश्वास के जाल में जकड़कर रह गया है, तथा भौतिकवाद की छाया का शिकार हो गया है । अतः मानव के भौतिक व आध्यात्मिक सुख साधन व विकास के लिये प्रजापति विश्व ब्रह्माण्ड के नियंत्रक व संचालक भगवान विश्वकर्मा की आराधना व पूजा पाठ करने के लिये मानव मात्र के स्वान्त सुख हेतु भगवान विश्वकर्मा की चरित्र लिला का दोहे व चौपाईयों के माध्यम से सुन्दर विश्वकर्मा का चरित्र दर्पण हुआ है ।

कलयुग में मानव जब तक विज्ञान शक्ति के प्रतीक भगवान विश्वकर्मा के चरणों में बैठकर तप व साधना नहीं करेंगे तो परमाणु बमो के विस्फोट का व परमाणु रिएक्टरों की दुर्घटना से विकिरण का भयंकर खतरा हमेशा बना रहेगा, क्योंकि मानव अपने द्वारा निर्भित कल्पित भगवानों की व रात्री जागरण करके विश्व का अजस्त्र शक्ति विश्वकर्मा का उपहास करके निन्दित कर्म करके समस्त वातावरण को कलुषित कर रहा है । भगवान विश्वकर्मा ही ऐसी महतो महियान अणोरणीयान शक्ति है जो कि विज्ञान के इस भयंकर युग में मानव को सर्वनाश होने से रक्षा कर सकती है ।

वेदों में इस विश्व की रचना व सृजन करने वाली आद्या शक्ति को भगवान के नाम से पुकारा गया । विश्वकर्मा शब्दों से बना है, पहले हम विश् शब्द की निष्पत्ति करते हैं । विश् प्रवेशने धातु से विश्व शब्द सिद्ध होता है ।

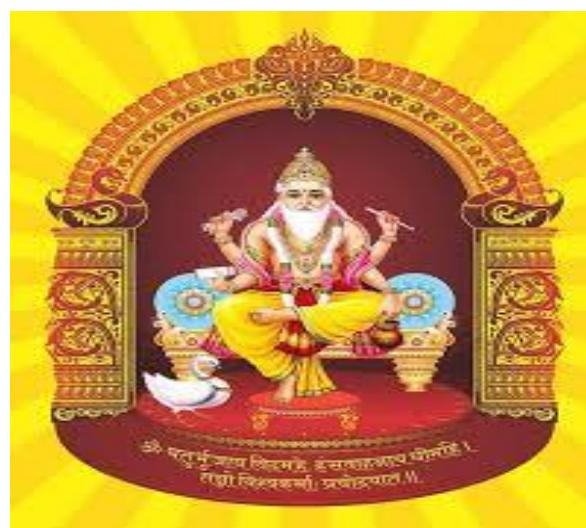
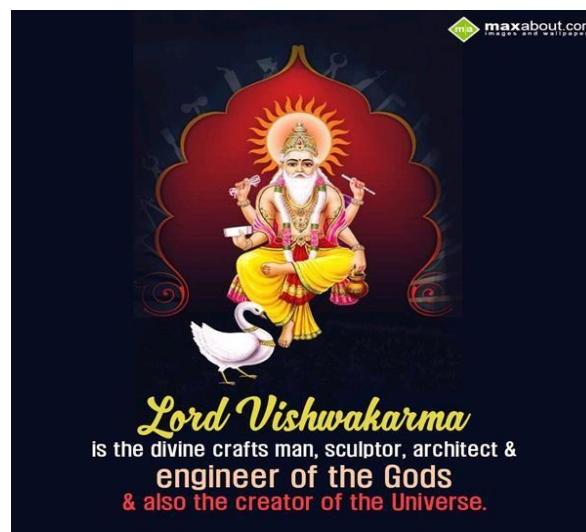
विशानि प्रविष्टानि सर्वाणि आकाशादीनि भूतानि यो, वोकाशादिष् सर्वेषु भूतेषु प्रविष्ट स वा विश्व कृत्स्न कर्म स विश्वकर्मा ईश्वर ॥

यहां तक ही नहीं ऋग्वेद मण्डल 10 अध्याय 81 मंत्र प्रथम में विश्वकर्मा के विषय में स्पष्ट रूप से आद्याशक्ति कोई काल्पनिक नहीं है जबकि भारत में तो असंख्य काल्पनिक भगवानों की भरमार है । विश्वकर्मा शब्द वैदिक है और यास्क मुनि ने अपने निरुक्त और निघन्टु वेदार्थ में विश्वकर्मा शब्द की निष्पत्ति व निरूपण करते हुए यूं कहा है कि आत्मा त्वष्टा प्रजापति आदित्य वाक् प्राण आदि विश्वकर्मा के ही वाचक है शतपथ ब्राह्मण में वाक् वै विश्वकर्मा, मंत्र वै विश्वकर्मा, शब्द वै विश्वकर्मा, छंद वै विश्वकर्मा अर्थात् वाक्, छंद, प्राण, शब्द को ही विश्वकर्मा कहते हैं । इसी बात को बाईबिल भी हमारी पुष्टी करते हुये कहती है कि आदि में शब्द या शब्द परमेश्वर था, शब्द परमेश्वर है । इसी बात की पुष्टी, गुरु वाणी में विश्व के महान अवतार गुरुनानक देव के शब्दों में होती है । शब्द ही धरती, शब्द हा आकाश, शब्द भयो प्रकाश । सगली सृष्टि शब्द के पाछे, कह नानक शब्द घटा घट आछे ॥ जब तक मानव को सत्य का बोध नहीं होता तो दुखों से मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता ।

अतः आज मानव केवल मात्र इन्द्रिययुखों की प्राप्ति के लिये दिन रात प्रयास में लगा हुआ है। परंतु फिर भी इन प्रयासों का परिणाम सुखमय न हो, दुःखों से ग्रस्त होता जा रहा है। इसी कारण समस्त विश्व आज भयंकर

विनास के कगर पे खड़ा है आज अशान्ति खी प्रचण्ड ज्वालाओं ये झूलस कर त्राहि मचा रहा है। संसार के समणीक प्रदार्थों की प्राप्ति होने पर भी दुःखों का भार बढ़ता जा रहा है, उसका केवल आज एक ही कारण है। भगवान विश्वकर्मा सें विमुखता होना। यदि मनुष्य को भौतिक विज्ञान व अध्यात्मिक कल्पित विज्ञान का स्वामी विश्वकर्मा है। तो एक दिन मानव कल्पित भगवानों की मृग तृष्णा से मुक्ति पाकर ऋग्वेद की (1-105-8) की इसी ऋचा का सार्थक प्रयोग करते हुए साथक निकर्थक काल्पनिक भगवानों की गिरफत से मुक्ति पा सकता है। वेद मंत्र यू हैः संमा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः। मुषो न शिशना व्यदन्ति माल्यः॥

अर्थात् कल्पित भगवान के पुजा पाठ मे फंस कर दुखाकान्त मनुष्य विश्वकर्मा भगवान से प्रर्थना करते हुए कहेगा कि मैं आधियों व व्याधियों के जटिल चंगुल में फंस गया हूँ कि जैसे अनेक सौतेली स्त्रियाँ पति को सन्तप्त करती रहती हैं और स्वार्थ पूर्ण तृष्णायें चहो की भान्ति खा रही हैं। अर्थात् ये इन सभी समस्याओं का समाधान विश्वकर्मा भक्ति में ही निहित है।



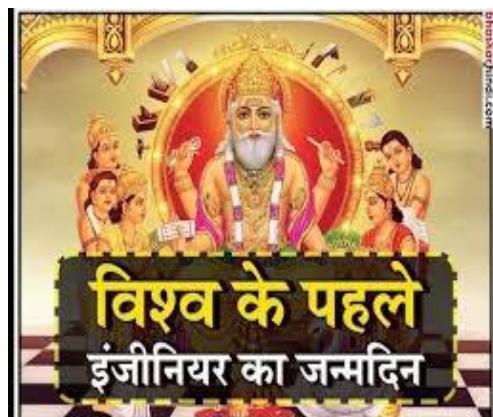
कहा जाता है कि प्राचीन काल में जितनी राजधानियां थी, प्रायः सभी विश्वकर्मा की ही बनाई कही जाती हैं। यहा तक कि सतयुग का 'स्वर्ग लोक', ब्रेता युग की 'लंका', द्वापर की 'द्वारिका' और कलयुग का 'हस्तिनापुर' आदि विश्वकर्मा द्वारा ही रचित हैं। 'सुदामापुरी' की तत्क्षण रचना के बारे में भी यह कहा जाता है कि उसके निर्माता विश्वकर्मा ही थे। इससे यह आशय लगाया जाता है कि धन-धान्य और सुख-समृद्धि की अभिलाषा रखने वाले पुरुषों को बाबा विश्वकर्मा की पूजा करना आवश्यक और मंगलदायी है।

एक कथा के अनुसार सृष्टि के प्रारंभ में सर्वप्रथम 'नारायण' अर्थात् साक्षात् विष्णु भगवान् जलार्णव (क्षीर सागर) में शेषशश्या पर आविर्भूत हुए। उनके नाभि-कमल से चर्तुमुख ब्रह्मा दृष्टिगोचर हो रहे थे। ब्रह्मा के पुत्र 'धर्म' तथा धर्म के पुत्र 'वास्तुदेव' हुए। कहा जाता है कि धर्म की 'वस्तु' नामक स्त्री (जो दक्ष की कन्याओं में एक थी) से उत्पन्न 'वास्तु' सातवें पुत्र थे, जो शिल्पशास्त्र के आदि प्रवर्तक थे। उन्हीं वास्तुदेव की 'अंगिरसी' नामक पत्नी से विश्वकर्मा उत्पन्न हुए। पिता की भाँति विश्वकर्मा भी वास्तुकला के अद्वितीय आचार्य बने। भगवान् विश्वकर्मा के अनेक रूप बताए जाते हैं- दो बाहु, चार बाहु एवं दश बाहु तथा एक मुख, चार मुख एवं पंचमुख। उनके मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी एवं दैवज्ञ नामक पांच पुत्र हैं। यह भी मान्यता है कि ये पांचों वास्तु शिल्प की अलग-अलग विधाओं में पारंगत थे और उन्होंने कई वस्तुओं का आविष्कार किया। इस प्रसंग में मनु को लोहे से, तो मय को लकड़ी, त्वष्टा को कांसे एवं तांबे, शिल्पी ईंट और दैवज्ञ सोने-चांदी से जोड़ा जाता है। भगवान् विश्वकर्मा की महत्ता स्थापित करने वाली एक कथा भी है। इसके अनुसार वाराणसी में धार्मिक व्यवहार से चलने वाला एक रथकार अपनी पत्नी के साथ रहता था। अपने कार्य में निपुण था, परंतु स्थान-स्थान पर घूम-घूम कर प्रयत्न करने पर भी भोजन से अधिक धन नहीं प्राप्त कर पाता था। पति की तरह पत्नी भी पुत्र न होने के कारण चिंतित रहती थी। पुत्र प्राप्ति के लिए वे साधु-संतों के यहां जाते थे, लेकिन यह इच्छा उसकी पूरी न हो सकी। तब एक पड़ोसी ब्राह्मण ने रथकार की पत्नी से कहा कि तुम भगवान् विश्वकर्मा की शरण में जाओ, तुम्हारी इच्छा पूरी होगी और अमावस्या तिथि को व्रत कर भगवान् विश्वकर्मा महात्म्य को सुनो। इसके बाद रथकार एवं उसकी पत्नी ने अमावस्या को भगवान् विश्वकर्मा की पूजा की, जिससे उसे धन-धान्य और पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई और वे सुखी जीवन व्यतीत करने लगे। उत्तर भारत में इस पूजा का काफी महत्व है।

पूजन विधि: भगवान् विश्वकर्मा की पूजा और यज्ञ विशेष विधि-विधान से होता है। इसकी विधि यह है कि यज्ञकर्ता स्नानादि-नित्यक्रिया से निवृत्त होकर पत्नी सहित पूजास्थान में बैठे। इसके बाद विष्णु भगवान् का ध्यान करे। तत्पश्चात् हाथ में पुष्प, अक्षत लेकर- ओम आधार शक्तपे नमः और ओम् कूमयि नमः; ओम् अनन्तम् नमः, पृथिव्यै नमः ऐसा कहकर चारों ओर अक्षत छिड़के और पीली सरसों लेकर दिग्बंधन करे। अपने रक्षासूत्र बांधे एवं पत्नी को भी बांधे। पुष्प जलपात्र में छोड़े। इसके बाद हृदय में भगवान् विश्वकर्मा का ध्यान करे। रक्षादीप जलाये, जलद्रव्य के साथ पुष्प एवं सुपारी लेकर संकल्प करे। शुद्ध भूमि पर अष्टदल कमल बनाए। उस स्थान पर सप्त धान्य रखे। उस पर मिट्टी और तांबे का जल डाले। इसके बाद पंचपल्लव, सप्त मृन्तिका, सुपारी, दक्षिणा कलश में डालकर कपड़े से कलश का आच्छादन करे। चावल से भरा पात्र समर्पित कर ऊपर विश्वकर्मा बाबा की मूर्ति स्थापित करे और वरुण देव का आह्वान करे। पुष्प चढ़ाकर कहना चाहिए- हे विश्वकर्मा जी, इस मूर्ति में विराजिए और मेरी पूजा स्वीकार कीजिए। इस प्रकार पूजन के बाद विविध प्रकार के औजारों और यंत्रों आदि की पूजा कर हवन यज्ञ करे।

हमारे देश में विश्वकर्मा जयंती (17 सिंतबर) पूरे धूमधाम से मनाई जाती है। इस दिन देश के विभिन्न राज्यों में, खासकर औद्योगिक क्षेत्रों, फैक्ट्रियों, लोहे की दुकान, वाहन शोरूम, सर्विस सेंटर आदि में पूजा होती है। इस

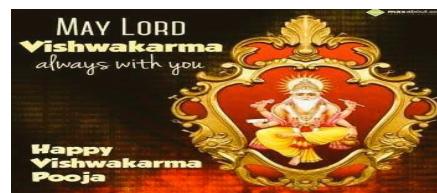
मौके पर मशीनों, औजारों की सफाई एवं रंगरोगन किया जाता है। इस दिन ज्यादातर कल-कारखाने बंद रहते हैं और लोग हर्षोल्लास के साथ भगवान् विश्वकर्मा की पूजा करते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, दिल्ली आदि राज्यों में भगवान् विश्वकर्मा की भव्य मूर्ति स्थापित की जाती है और उनकी आराधना की जाती है, लेकिन चंडीगढ़ और पंजाब में दीपावली के दूसरे दिन यह पर्व मनाया जाता है। 17 सितंबर को श्रम दिवस के रूप में जाना जाता है। विश्वकर्मा समाज के लोग बाबा विश्वकर्मा पूजा अवश्य करते हैं



आजादी के पहले अंग्रेजी हुकुमत में हिंदू त्योहारों पर पाबंदी लगा दिया गया था। कारण यह था कि, उस समय के भूमिगत क्रांतिकारी त्योहारों में आये हुये भीड़ का फायदा लेकर अंग्रेजों के खिलाफ क्रन्तिकारी मुहीम चलाते थे। उस जमाने में विश्वकर्मा समाज (सुतार/लोहार) पर ज्यादा नजर होती थी। अपने पारम्परिक औज़ारों की पूजा करने की प्रथा को विस्तृत रूप से अंग्रेजी हुकुमत को समझाने पर विश्वकर्मा समाज को पूजा करने की अनुमति मिल गई। समकालीन विश्वकर्मा समाज को विश्वब्रह्म कहा जाता था और विश्वकर्मा समाज अपने सभी कार्यों का आरम्भ करने से पहले औज़ारों की विधिवत पूजा करते थे, यंहा तक की पौराहित्य भी करते थे। दक्षिण भारत के मद्रास राज्य में चित्तूर जिले के सुतारपेरी (यंहा विश्वकर्मा समाज ९०% है) नामक गाँव में विश्वकर्मा समाज के घर शादी हो रही थी और शादी पौराहित्य विश्वकर्मा समाज के पुरोहित मार्क सहाचार्य करवा रहे थे। तभी गाँव के ब्राम्हण पंचानन कौन्डील्य ने शादी मंडप में आकार पौराहित्य करणे से मना कर दिया। विश्वकर्मा समाज और ब्राम्हण समाज में बड़ा झगड़ा हुआ और फिर दोनों पक्षों द्वारा केस मद्रास कोर्ट में दाखील कर दिया गया। समाज की ओर से शरबांण्णा कदरगार गाँव - कन्हड, तहसील - उपड, जिला - निजामपुर एवं पांचाल भिमाचार्य गाँव - गढवाल, मद्रास ने चित्तूर जिला फैसलनामा कोर्ट में वाद क्र.२५४ दि.१० जुलाई १९७ में पूजा अधिकार का दावा दाखिल किया। वेद/पुराण अनुसार विश्वकर्मा समाज को देववंशज साबित करने पर चित्तूर जिला अदालत हुकुमनामा (द्राविडी) असल नं.२०५ सन १८९८ को समाज को पुजा अधिकार मिला। लेकिन ब्राम्हण समाज ये मानने को तैयार नहीं था। फिर से केस चला सन १८२० को दोबारा फैसला समाज के हित में कायम रखा गया। ये दौर पुरे ६० साल तक चला। आखिर में जुन्नर सबआर्डीनेट जज कोर्ट मु.नं.१५५३ दि.३१ जनवरी १८७६ पुणे असि.कोर्ट अपील नं.४३ अनुसार दिनांक १८ जुलाई १८७६ को मद्रास सुबा चित्तूर जिला कोर्ट में वाद दाखील कर दिया। इस बार वेद/पुराण के अनुसार तथा हिंदूधर्म पिठाधिश आर्ध्य शंकराचार्य (विश्वकर्मा वंशिय त्वष्टा कुलीन) के हिंदु धर्मशास्त्र के आधार पर चित्तूर जिला फैसलनामा कोर्ट के ब्रिटिश जज जस्टिन फ्यारेन साहेब ने मद्रास नामदास हायकोर्ट ठाराव १८८५ कलेंडर नं.७८ पृष्ठ नं.१५२ अनुसार अंतिम फैसला तथा प्रथम प्रति दि.१६ सितंबर १८८५ को शरबांण्णा कदरगार को सुपुर्द कर दी गयी। मूल और अंतिम प्रति पांचाळ भिमाचार्य जी को सुपुर्द कर दिया गया।

ब्रिटिश कोर्ट पद्धतीनुसार ये फैसला १६ सितंबर को शाम ७ बजे के बाद रात को आया और लोगों ने इस फैसले की खुशी में उत्सव को मनाने का फैसला किया और उसके लिए सुबह होने तक का इंतज़ार किया और अगले दिन १७ सितम्बर के सूर्योदय की पहली किरण के साथ सभी जगह उत्सव मनाया जाना आरम्भ हो गया और लोगों ने अपने घरों को और औज़ारों को पारम्परिक तरीके से पूजा की। चूँकि इस पूजा को करने वाले प्रथम विश्वकर्मा वंशीय थे, इसी लिए इस पूजा का नाम धीरे धीरे विश्वकर्मा पूजा पड़ गया और यह विश्वकर्मा पूजा धीरे धीरे दक्षिण भारत से निकल कर पुरे भारतवर्ष में मनाया जाने लगा।

ब्रह्मश्री पंडित नारायण रावजी शास्त्री एवं बालशास्त्री रावजी द्वारा रचित लिखित "विश्वब्रह्मकुलोत्साह" पुस्तक से लिया गया है। आज की स्थिति कुछ ऐसी है कि, ऑनलाइन तथ्य विहीन जानकारी भी गलत तरीके अंकित कर दी गयी है जिससे समाज भ्रम की स्थिति में पड़ चूका है जबकि १७ सितम्बर विश्वकर्मा पूजा का मूल तथ्य यह है।



ॐ असर्पन्त ते भूता ये भूता भुमि संस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तास्ते नश्यन्तु शिवाजया ॥

यह मन्त्र पढ़कर चारों तरफ छिड़काना चाहिए, पश्चात् भूमि शुद्धि करना । और इस मंत्र से अपने के चारों ओर जलधारा देकर अपने आपको जाज्वल्यमान अग्नि के धेरे में स्थापित सपझ दोनों नाशा पुटों को दबाकर निम्नलिखित पाठ द्वारा अपने को शुद्ध करना चाहिए ।

ॐ मूलसृगडांदाच्छिरःसुषुम्ना पथेन जीवशिं परम शिव पदे योजयामि स्वाहा । ॐ यं लिंगं शरीर शोषण स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ रं शक्तोच शरीरं दह दह स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ परम सुषुम्ना पथत मूल सृगडं ज्वल प्रज्वल हंसःसोहं स्वाहा ॥ ३ ॥ पश्चात् हृदय में अपने इष्टदेव का ध्यान करे, फिर रक्षा दीपक जलाकर ग पुष्प लेकर इस प्रकार स्वास्ति वाचन करे । हरि ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो बृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाः विश्व वेदाः स्वस्तिनस्ताक्षर्योऽरिष्टनेमिः स्वास्तिनो वृहस्पतिर्दधातु ॥ ४ ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीय पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वती प्रदिशः सन्तु महयम् ॥ ५ ॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः शनपत्रेस्यो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्वोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ ६ ॥ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता बसवो देवता रुद्रादेवता दित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ७ ॥ दयौहू शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्व देवाः शान्तिब्रह्म शान्तिः सर्व शांतिः शांतिरेव शांतिः सामाशांतिरेधि सुशांतिर्भवतु ॥ ८ ॥ विश्वानिदेवि सवितुर्दुरितानिपरासुव यन्द्रदं तत्र आ सुव ॥ ९ ॥ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभारा सहे मतीः यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्व पुष्टं ग्रामेस्मिन्ननातुरम् ॥ १० ॥ एंत ते देव सवितर्यज्ञ प्रोहवृहस्पतये व्रह्म तेन यज्ञ मवतेन यज्ञर्पति तेत मा भव ॥ ११ ॥ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञ निमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ समिमं दधातु । विश्वे देवता सहमादयंता मोम प्रतिष्ठा ॥ १२ ॥ एषवै प्रतिष्ठा नाम यत्रै तेन यज्ञान यज्ञते सर्वमेव प्रतिष्ठतभवति ॥ १३ ॥ गणानात्वा गणापति हवामहे प्रियाणात्वा प्रियपति हवामहे वसो मम आहम् जाति गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ १४ ॥ नमो गणेभ्यो गणतिभ्यश्ववो नमो व्रातेभ्यो ब्रातपतिभ्यश्चवो नमोनमो गृत्सेभ्योगृतसपति भ्यश्चवो नमो नमो विरुपेभ्यो विश्वरुपेभ्यश्चवो नमो नमो ॥ १५ ॥ अम्बेम्बिकेबालिकेन मायति कश्चन । स सत्प श्वकः सुभद्रिकां कांपील वासिनी ॥ १६ ॥

श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः सुप्रतिष्ठो वरदो भवेताम् ।

ततः प्रार्थयेत्

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः । निर्विघ्न कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ १ ॥ सुमुखश्चेकदन्तश्चकपिलो गज कर्णकः । लम्बोदरश्च विकटों विघ्ननाशो विनायकः ॥ २ ॥ धूम केतुर्गणाधक्षः भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छुणुयादपि ॥ ३ ॥ विद्यरम्भे विवाहे च प्रवेशो निर्गमे तथा । सग्रामेसंकटश्चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ४ ॥ शुक्लाम्बरंघरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम् प्रसन्न वंदन ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये ॥ ५ ॥ अभोस्सितार्थं सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्व विघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ६ ॥ सर्वमगंल मांगलये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्येत्यम्बके गौरी नारायणि नमस्तुते ॥ ७ ॥ श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । ॐ विष्णुर्विष्णुः विष्णुः ॐ तत्सत् अथ श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराजया प्रवर्तमानय श्रीब्रह्मणोद्वितीय पराद्धे विष्णु श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैस्वत मन्वन्तरेअष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलि प्रथम चरणं जम्बूद्वीपे भूलोके भारत वर्षे भरत खण्डे आर्यावर्तक देशे बौद्धावतारे (गौड देशे अमुक प्रदेशे काली कुमारिका क्षेत्रे भागूरथ्याः पूर्व तटे) अमुक नाम सम्वत्सरे श्री सूर्य अमुकायने अमुक ऋतौ महा मांगल्यप्रदे मासोत्तमे मासे अमुर मासे अमपक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुक राशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थते सूर्य अमुक राशिस्थिते देवगुरुराशेषु ग्रहेषु यथायथा स्थितेषु सत्सु एनं

ग्रहगुणविशेषेणविशिष्टायां शुभं पुण्यं तिथौ अमुकं गोत्रोत्पान्नाह अमुकं शर्माहं वर्महं गुप्ताहं बा (दुसरे के लिये अमुकं गोत्रं अमुकं यजमास्य) श्रुतिस्मृति पुराणोक्तं फलपूर्वकं श्री विश्वकर्मा प्रीतिकामो षिल्पं नेपुण्यादि वृद्धिं द्वारा व्यापारात् क्रयं विक्रये लक्ष्मीं प्राप्त्यर्थ्यतोक्तं विधोनेमश्रीघटोपरि श्री विश्वकर्मा पूजनकरणार्थं निर्विघ्नता हेतवे गणपत्यादि देवानां सूर्यादि ग्रहाणां तथा च सत्यं स्वरूपशालिग्रामदेवपूजनकरिष्ये ।

(1) पश्चात् गणेशाम्बिका पूजनः

(यत्र हवनम् तत्र कर्मण्डभूतं पचञ्चभूस्स्कारादि पूर्वकं हवनं च करिष्यते इति विशेषः) इति सकंल्पः । श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पादयोपाद्यम् समर्पयामि । हस्तेऽर्ध्यं सम0 ॥ मुखे आचमनीयम् सम0 ॥ स्नानं सम0 ॥ मन्थम् सम0 ॥ अक्षतान् सम0 ॥ पुष्पणि दूर्वाङ्कुरच्च सं0 ॥ धूपमाघूयामि ॥ दीपं च दर्शयामि ॥ हस्तं प्रक्षालनम् ॥ नैवेद्यं निवेदयामि ॥ नैवेद्यान्तेऽद्यानम् ॥ आचमन्यार्थं जलम् सम0 ॥ हस्तं प्रक्षालनार्थं च (करोद्वर्तनार्थं) चन्दनम् ॥

मुखं शुद्धधर्यर्थं ताम्बूलं दलं पूर्णीफलं कृतायाः पूजायाः सागंता सिद्धयर्थं द्रव्यं दक्षिणां समर्पयामि नसस्करोमि । तःपुष्पांजलिः

वक्रतुण्डं महाकायं सूर्यकोटीं समप्रभः । निर्विघ्नं कुरु मे देव, सर्वं कार्येषु सर्वदा ॥ 1 ॥ सर्वं मगंलं मांगल्ये शिवे सर्वार्थं साधिके । शरण्ये व्यम्बिके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥ 2 ॥ । मन्त्रं पुष्पामजलि समाप्ता ॥

गौर्यादि षोडशं मातृकाओं का पूजनः

गौरीं पदमा शची मेघा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकं मातरः ॥ हण्ठिः पुष्टिस्था तुष्टिः आत्मनः कुलं देवता । गणेशेनाधिका होता वृद्धौ पूज्याश्च षोडशः ॥ गौर्यादि षोडशं मातृकेभ्यो नमः ॥ इति सम्पूजयेत् ॥

(2) ब्रह्मादि देवताओं का पूजनः

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमि सुतोबुधश्च । गुरुष्च शुक्रः शनि राहुं केतवः सर्वग्रहा शांति करा भवन्तु । ब्रह्मादि तथा च सूर्यादि सर्वेभ्यो नमः । इति सम्पूजयेत् ।

(3) कलशं वरुणं पूजनम्

ॐ वरुस्योस्तम्भनमसिव्यरुणस्यम्भस जर्सनीस्थो करुणस्य ऋतं सजन्यसि वरुणस्यऋतं सदनमसि वरुस्यऋतं सदनमासीद् । कलशे वरुणाय नमः । इति सम्पूजयेत् ॥

(4) ॐ कारादि पश्च प्रणवं पूजनः ॐ कारं बिन्दुं सयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः । कामदं मोक्षदं चैव ॐ काराय नमो नमः ॥ ॐ कारादि पश्च प्रणवैभ्यौ नमः ॥ इति सम्पूजयत् ।

(5) अथ त्रयम्बकं पूदनः

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिंतं पुष्टिं वर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धानान्मृत्योम्मुक्षीय मामृताम् ॥ ॐ त्रयम्बकायै नमः । इति सम्पूजयेत् ॥

(6) अथ चतुषष्टि योगिनीः

ॐ आवाहयाम्बहं देवी योगिली परमेश्वरीम् । योगाभ्यासेन सन्तुष्टं परं धायानं समन्विताः ॥ चतुषष्टिः योगिनीभ्यो नमः ॥ सम्पूजयोत् ॥

(7) अथ वासुक्याद्दण्टं नामं पूजनः

ॐ नमोस्तु येकेन पृथ्वी मनु ॥ येन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यो सर्पेभ्यो नमः ॥ वासुक्या दण्टकुलं नागेभ्यो नमः ॥ इति पत्तम्पूजयेत् ॥

॥ इति गणपत्यादि आदि मठंलं पूजनं क्रम ॥

॥ अथ प्रथानं घटस्थापनम् ॥

(1) पचंरंगं से सुन्दर अष्टदल कमल बनाकर इस भूमि को स्पर्श करेः

ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वधाया विश्वस्स भुवनस्स धर्मी । पृथिवीं यच्छ पृथिवीम् ददहं पृथिविं माहिं
सीः ॥ 1 ॥

(2) अष्टदल के ऊपर धान्य रखना ।

ॐ धान्यमासि धिनुहि देवान् प्राणयत्वो दानाय त्वा ध्यानायत्वा ॥

दीर्घामनु प्रसिति मनुष्य धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णात्वछिद्रणे पाणिना चक्षुषेत्वा महीनां पयोसि
॥ 2 ॥

(3) धान्य के ऊपर धान्य रखना ।

ॐ आजिघ कलशं महमात्वा विशन्त्वन्दवः। पुन रुजा निर्वत स्वासनः सहस्त्रां रुधारा पयस्वतः पुनर्मा
विशंताद्रयिः ॥ 3 ॥

(4) कलश में जल भरना ।

ॐ वरुणस्योत्मभनमसि वरुणस्यस्तम्भ सर्जनीस्यो वरुणस्यऋत सदनमसि वरुणाय ऋत सजनमसि वरुणस्यऋत
सदनमासीद ॥ 4 ॥

(5) कलश में गन्धाक्षत डालना ।

ॐ त्वां गन्धर्वा असनंस्त्वां वृहस्पतिः खासोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्षमादमुच्यत ॥ 5 ॥

(6) कलश में सर्वोषधि डालना ।

ॐ ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुं पुरा । ममैन बभूणामह शंत धामानि सप्त च ॥ 6 ॥

(7) दूर्वा डालना ।

ॐ काण्डात् काङ्क्षिप्ररोहन्ती परुषः परुस्परि । एवानो दूर्वे पिरतनु सहस्रेण शतेन च ॥ 7 ॥

(8)-पंच पल्ल रखना ।

ॐ अष्वत्वथेवा निगदंन पर्ण वो वसुतिष्कृता गो भाजकित्लासथ यत्स नवथ पुरुषम् ॥ 8 ॥

(9)-सप्तमृद - (गगां की मिट्टी)

ॐ स्यानो पृथिविनो भवाननृक्षरा निवेशनी यच्छान शर्मसाप्रथाः ॥ 9 ॥

(10)- कुशाः (दमि)

ॐ पवित्रेस्थो वैणव्यौ सवितुर्व प्रसवः उत्पुनाम्यछिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्यते पवित्र पते पूतस्य
जत्कामः पुने तच्छके यम् ॥ 10 ॥

(11) पूगीफलम् (सुपारं) या फलिनी या अफल अपुष्याश्च पुष्पिणीः बृहस्पति प्रसूता स्तानो मुच्चन्त्व हमसः ॥

(12) पचं रत्ननि (दक्षिणा)

ॐ परिवाज पति कविरग्निर्हव्य क्रमीत् । दधत्रत्नानि दशुषे ॥ 12 ॥

(13) हिरण्यम् (सोना या दक्षिणा)

ॐ हिण्य गर्भः समवर्ततये भूतस्य जातः परिरेक आसीत्।

(14) युम्तबस्त्र से कलश को लपेटना ।

ॐ सुजातौ ज्योतिषा सहशर्म वरुथ मास दत्स्वः वासोग्ने विश्वरूपसव्ययस्त्र विभानसो ॐ युवामुवासाः परिवीति
आगात्सउश्रेयान्भवति जायमानः तन्धीरासः सवयउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥ 14 ॥

(15) पूर्णपात्र कलश के ऊपर रखना ।

ॐ पूर्णादर्वि परात् सुपूर्णा पुनरापता वरने व विक्रिणा वहाइष मूर्जशतक्रतो ॥ 15 ॥

(16) कलशोपरि श्री पंल (नागरिकेलम्) स्थापयेन्

ॐ श्रीशते लक्ष्मीच पत्न्या वहोरात्रे पाश्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मङ्गाणा ॥16॥

(17) आबाहन ।

मकरस्थं पाशहस्तं स्वर्गं सम्पत्तिमीशगरम् । आवाहयेत्प्रतीचीषे वरुणं यादसां पतिम् ॥ ॐ तत्वायाकि ब्राह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमान्नो हविर्विः । अहेऽमानोवरुणेहवोध्यरुशं समानआयुः प्रमोषीः कलशेबरुणेसाङ्गंसपरिवाकं सायुधं सशक्तिकं आवाहयमि स्थापयामि ॐ अपाम्पतये वरुणाय नमः ।

॥ अथ गंगाद्यावाहनम् ॥

पश्चात गन्धादि से पचोंपतार कलस की पूजा कर गगडांदि नदियों का आबाहन करना चाहिए कला कलाडि देवानां दानवानंहि कला कला । सगृह्य निर्मितो येन कलशस्तेन कथ्यते ॥ 1 ॥ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मतृगणः स्मृताः ॥2॥ कुक्षौतु सागरः सप्ताः सप्तद्वोपा च मेदिनी । अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ॥3॥ काबेरी पृष्ण वेणी च गगडां चैव महानदी । ताप्ती गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ॥4॥ नद्याम्च विविधा जाता नद्यःसर्वास्तथा पराः । पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ॥5॥ सर्वे समुद्रा स्सरितः तीर्थानि जलदानदाः । आयान्तु मम शान्त्यर्थ दुरितक्षय कारकाः ॥6॥ ऋग्वेदोथयजुर्वेदः सामवनेदो हयथर्वणः । अग्नंश्चै सहिता सर्वे कलशस्तु समाश्रितः॥7॥ अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पिष्टिकरी तथा । आयान्तु मम शान्तर्थ दुरित क्षयकारकाः ॥8॥

फिर अक्षत हाथ मे लेकर

ॐ मनोजूतिर्जूषता माज्यस्य बृहस्पतिर्य मिमंतनो त्वारिष्ट यज्ञ समिमं दधातु । विश्वेदेवा स इहमादयन्ता मौं ३ प्रतिष्ठा वरुणद्यावाहित देवताः सुप्रतिष्ठा वरदो भवन्तु ॥ ॐ वरुणद्यावाहित अथ च विष्णावाद्यः वाहित देवाताभ्यो नमः॥

गन्धादि से यथोपचार पूजन कर जल लेकर
अनया पूजया वरुणावहितदेवः प्रीयन्ताम् नमः

अथ कलशा प्रार्थना

यह पढ़कर समर्पण करना चाहिए।

देव दानव मध्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोसि तदा कुम्भं विधृता विष्णुना स्वयम् ॥ 1 ॥ त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः । त्वयि तिष्ठन्ति त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिता ॥2॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवाः सपैतृका ॥3॥

॥ अथ वरुण प्रार्थना ॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेषि यतः कामफल प्रदाः। त्वत्प्रसादादिमां पूजां कुरुत्मीहे जलोदभव ॥4॥ सान्निध्यं कुरु मैं देव प्रसनो भव सर्वदा । विश्वकर्मार्तने यज्ञे कृपां कुरु विशेषतः। मनो नमस्ते स्फटिक नमो सुश्वेत हौराय सुमंगलाय सुपाशहस्ताय झाषासनायजलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥5॥

॥ अथशालिग्राम पूजनम् ॥

वग प्रान्त में प्रयः सब प्रजाओं में श्री नारायण की प्रधानता रहती है इसलिए सर्व साधारण के लाभ के लिये यहाँ पर श्री शालिग्राम स्वरूप नारायण का पूजन दे दिया गया है । जहां पर शालिग्राम देव का पूजन करना हो वो वहां निम्नलिखित क्रम से पूजन करना चाहिए शुद्धपात्र म् चन्दन से अष्टदल कमल बनाकर तुलसी पुष्प रखकर श्री शालिग्राम देवशिला को स्थापित कर ध्यान करना चाहिए ।

ध्यायेत् सत्यं गुणातीतं गुणत्रय समन्वितं । लोकनाथं त्रिलोकेशं कौस्तुभारणे हरिम् ॥ शुक्लवर्णं पीतवस्त्रं श्रीवत्सपद भूषितम् । गोविन्दं गोकुलानन्दं ब्रह्माद्यैरमि पूजितम् ॥ ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र-

पात् । स भूमि सर्वतस्पृत्वातिष्ट ददशांगुलम् ॥1॥ ध्यानम् समर्पयामि सत्यस्वरूपाय श्री शालिग्राम देवाय नमः
आसन- ऊँ पुरुष ऐवेद सर्व अदभूतं यच्च भाव्यम् । उतामृतत्वस्ये शानो यदन्नेनातिरोहति ॥2॥
पुष्पासनं सम
ऊँ एतावानस्य महिमतो ज्यायांश्च पूरुषः। पोदोस्य विश्वभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥3॥

पादयो पाद्यं समर्पयामि ।

अर्थः ऊँ त्रिपादौर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः । ततो विष्वड् व्याक्रानत्साशनान शने अभिः। हस्ते अर्ध्यम् स0
॥4॥ चमनीय जलम् - ऊँ तो विराङ्गजायत विराजो अधिपुरुषः । सजातो अत्यरिच्यत पश्चादभूमिमथोपुरः मुखे
आचमनीयम् सम0 ॥5॥

स्नानः ऊँ तस्माद्यजात्सर्वहुतः सभृतं पृष्ठदाज्यम् . पशुस्तांश्चक्रेवायव्यानार ण्याग्रम्याश्च ये ॥ स्नानं सम0
॥6॥

पश्चामृत स्नान तत्रादौ पयस्नानः

ऊँ पयः पृथिव्या पयओषधीषुयोतिव्यन्तरिक्षोपयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु महयम् ॥ पयस्नानं सम0 ॥

शुद्धोदक स्नानः

ऊँ शुद्धबालः सर्वशद्धः बासो मणिवालस्तगाश्विनाश्येतः १येताक्षारुणास्ते रुद्रायपशुपतये
कण्णायामाअवलोप्तारौद्रानमो रूपाः पार्जन्याः पथ स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं सम0 । दधि स्नान- ऊँ
दधिक्रावणोअकारिषं निष्णोरश्वस्यवजिनः । सुरभिना मुखाकरत्प्रणग्राय षितारिषत् ॥ दधिस्नानं सम0 ॥8॥
शुद्धोदक स्नानः

देवस्यत्वासवितुः प्रसन्नेश्वर्मीर्बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्यग्राम् शुद्धोदक स्नानं सम0 ॥

बृत स्नानः

ऊँ घृतघृतपालनः पिवत वसां वसा वसाणवनः पिवतान्तरिक्षस्यहविरसि स्वाहा ॥

दिशःप्रदिशआदिशोब्बिदिशउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा0 ॥

शुद्धोदक स्नानः

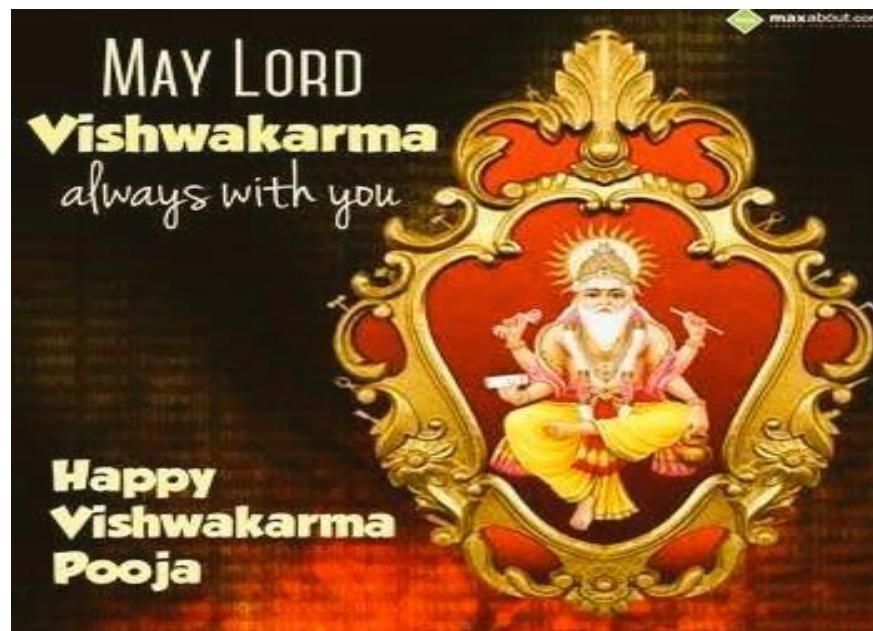
ऊँ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऊर्जर्जदधातन महेरण चक्षसे। योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः उशतोरिनमातरः ।
तस्माग्ररग्डंमावो यस्यक्षपायजिन्वथा ॥ आपोजनयथाचनः॥ घृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं सम0 ॥

मधु स्नानः

ऊँ मधुवाता कृतायते मधुश्ररन्ति सिन्धवः । माध्वीर्न संत्वोषधः। मधुनक्त मुतोषसो मधमत्पार्थिरजः मधुद्यौरस्तु
नः पिता। मधुमान्नोब्बनस्पतिर्मधुमांस्तुसूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः। मधुस्नानं सम0 ॥ ऊँ सप्तऋषयः
प्रतिहिता, जरीरे सतक्षन्तिसदम् । तप्तारः स्वपतो लोक मीयुस्तत्रजाग-तो अस्वप्नजो सत्र सदौ च देवो ॥
गौतमादि सप्तऋषि देवताभ्यो नमः आ0 स्था0 इहाग0 इहति0 । ऊँ सुगवौ देवाः सददा जकर्म यआजस्मेद सवनं
जुषाणाः भरमाणा वहमाना हवाष्यस्मे छुत कसवो वसूलि स्वाहा । अष्ट वसुभ्यो नमः ॥ आ0 स्था0 इहाग0 ॥
ऊँ यज्ञो देवार्ना प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः । आवोर्वाची बृत्याद हौशिचद्यो वरिवो वितराजसत्
आदित्येभ्यस्वा ॥ द्वादशदिभ्यो नमः आ0 स्था0 इहाग0 इहति0 । ऊँ एतनवन्तश्च भूया सश्चदियो रुद्र वितस्थिरे
तेषां इहा0 योजनेबधम्वा तिनन्मसि ॥ एकादश रुद्रेभ्यो नमः आ0 स्था0 इहा0 इहति0 ॥ ऊँ इमे मे वरुणश्रुषी
हवमहमाच मृडय । त्वामस्यु राचके सप्त समुद्रेभ्यो नमः आ0 स्था0 ॥ ऊँ प्रपर्वतस्य वृषभस्प

पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिच इवानाः ता आव बृन्नधरा गुदक्त अहिबुधन्य मनुराय माणा । विष्णार्विक्रमणमसि
विष्णोर्विक न्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि । पर्वतेभ्यो नमः आ0 स्था0 इहा0 इहति0 ॥ ऊँ बसन्तेव ऋतुनादेवा

वसस्त्रिवृतास्तुः रथन्तरेण तेजसा हयविस्नद् वयादधुः ॥ बसन्तादिष्ट् ऋतुदेवताभ्यो नमः ॥ आ० स्था० इहा० इहति० ॥ ऊँ अग्निमीले पुरेयितम् यज्ञस्यदेव ऋत्विजम् होतारं रत्न धातरम् ॥ ऋब्बवेदादि चतुर्वेदेभ्यो नमः ॥ आ० स्था० इहा० इहति० ॥ ऊँ वरतोष्पते प्रति जानिहयस्मारा स्वावेशो अनम वाभवान्नः यतमहे



पहला अध्याय

एक समय अनेक ऋषिगण धर्मक्षेत्र में एकत्र हुए और वहां धर्म के तत्व जानने वाले सूत जी से ऋषि कहने लगे - हे पुराण के मर्मज, महात्मने, आप हमारे ऊपर अत्यंत कृपा करके हमारे इस अचानक उत्पन्न हुए सशंय का नाश किजीए। हमने सर्व व्यापक विष्णु के अनेक रूप सुने हैं, उनमें से कौन सा रूप सर्वश्रेष्ठ है, यह हमे बताइयें। हे महात्मा, मुनियो, तुमने संसार के कल्याण के लिए यह सर्व शुभ काम करने वाला बड़ा प्रश्न किया है, जो तुमने यह संसार के हित के लिए प्रश्न किया है, अतएव मैं तुम्हारे लिए सब जगत् पालक परम पूज्य भगवान विष्णु के महाअद्भुत रूप का वर्णन करूँगा। हे तपस्वियो, उस परमात्मा के अनन्त रूप है, उनमें जो अनन्त श्रेष्ठ है, उस रूप को अदंर से सुनो। उस दिव्य रूप के स्मरणमात्र से महापातकी मनुष्य भी पाप से छुट जाते हैं, इसमें सशंय नहीं है। इस ही प्रश्न को संसार के कल्याण के लिए क्षीरसमुद्रं में लक्ष्मी न् भगवान विष्णु से एक बार पूछा था ।

लक्ष्मी कहने लगी - हे जगन्नाथ। आपके महान् अनेक रूपों को भक्तमनुष्य भक्तियुक्त होकर पृथ्वी पर पूजते रहते हैं। हे प्रिय। क्या वे रूप सब समान ही हैं या उनमें गौण और मुख्य किसी प्रकार का भेद है। विष्णु भगवान बोले - हे प्रिय, जब मैं समस्त ब्रह्माण्ड को आत्मा में सहंत करके स्वानुभव रूप से योगमाया के स्थित होता हूँ, तब मैं एक ही बहुरूप धारण करूँ, इस प्रकार इच्छा करता हुआ अपनी माया के वश में हुआ। जीवों को कर्मभोग के लिए क्षणमात्र में असंख्य ब्रह्मलोकादि लोकों को जिस रूप से रचता हूँ, हे देवी, उस रूप को मैं तुझसे कहता हूँ, तू ध्यान से सुन।

हे देवी, मैं यंहा अद्भुत सब ओर तेज से व्याप्त अनेक सूर्यों की चमक से अधिक चमकने वाले विश्वकर्मा रूप को धारण करता हूँ, और उनके अनन्तर मनुष्य सृष्टि करने की कामना करता हुआ सर्व प्रथम पुण्यात्मा तपस्वी ब्रह्म को रचता हूँ। उस ब्रह्मा की स्तुति यज्ञ और गान के प्रतिपादन करने वाले ऋग, यजुः और सम की अच्छी प्रकार उपदेश देता हूँ। इसी प्रकार शिल्प विद्या प्रतिपादक अतर्ववेद भी ब्रह्मा को प्रदान करता हूँ। यह वही वेद है जिससे शिल्पी लोगों ने शिल्प निकाल कर अनेक वस्तुओं की रचना की है। हे देवी, मेरे अनेक रूपों में यह विश्वकर्मा रूप मुख्य है। यही रूप है जिससे सारी सृष्टि क्षणमात्र में उत्पन्न होती है। इस विश्वकर्मा रूप परमात्मा के अद्भुत रूप का जो क्षणमात्र भी ध्यान करता है, उसके समस्त विध्न नष्ट हो जाते हैं। जो शिल्पी श्री विश्वकर्मा के प्रोजेक्ट दिव्य रूप का ध्यान से चिंतन करता है, उसके समस्त दुःख विशीर्ण हो जाते हैं।

श्री विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा माहात्म्य का पहला अध्याय समाप्त।

दूसरा अध्याय

सूत जी कहने लगे कि हे ऋषियों, इस प्रकार लक्ष्मी जी को अपने दिव्य रूप का वर्णन करके त्रिलोक्य पति भगवान विष्णु चुप हो गये। ऋषि लोग बोले-सर्व धर्म के जानने वाले, महाराज सूत जी, आपने यह दिव्य लक्ष्मी और भगवान विष्णु का दिव्य संवाद कैसे जाना। यह भगवान विष्णु को दिव्य विश्वकर्मा रूप किस प्रकार संसार में प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ और कैसे संसार ने इस रूप को जाना। सूत जी बोले, हे मुनियो, सुनो - जिस प्रकार मनुष्यों को कामना का देने वाला, यह समाचार मेरे कर्णगोचर है। एक महर्षि अंगिरा नाम वाले हुए है, जिन्होंने

हिमालय पर्वत के समीप गंगा तट पर बड़ा भारी तप किया था। बर्षा ऋतु में तो आवरण रहित स्थान में, शीतकाल में शीतल जल में ग्रीष्म काल में धूप में बैठकर वह अंगिरा मुनि तप करने लगे। तप करते करते भी उन ऋषि का मन सुखी नहीं था और इधर उधर इस प्रकार दौड़ता था कि जैसे मृग इधर उधर भागता है। तभी उस समय अचानक आकाशवाणी हुई कि हे तपोधन, तू वृथा श्रम करता है, लक्ष्य से च्युस हुआ वाण कैसे अपने लक्ष्य को बेध सकता है, वही तेरी गति हो गई है और तू लोक में उपवास को प्राप्त हो रहा है। उत्पत्ति स्थिति सहांर का करने वाला सबको अभीष्ट का सिद्धकर्ता, महातेजस्वी विश्वकर्मा संसार में प्रसिद्ध है। उसका पञ्चमुख और दशबाहु वाला, महादिव्य रूप सरस्वती और लक्ष्मी से पूजित है। उसका तू दिन रात ध्यान कर। इस रूप का स्वंय हरि ने क्षीर समुद्र में उपदेश दिया है। आज भी उनके ध्यान से मेरे रोमांच खड़े होते हैं। अमावस्या के दिन सब कामों को छोड़कर व्रत का आचरण कर और उसी दिन विधि पूर्वक विश्वकर्मा जी की पूजा कर। इस प्रकार आकाश को गूँजा देने वाली वाणी को सुनकर अंगिरा मुनि बड़े विस्मय को प्राप्त हुआ और भगवान का ध्यान करने लगे। श्री विश्वकर्मा जी का ध्यान करते समय उनके चित में शिल्पज्ञान का धारक, अर्थ सहित अर्थर्ववेद प्रविष्ट हुआ। उन तत्वज्ञ अंगिरा मुनि ने विमान रचना आदि की अनेक शिल्प विद्याओं का रस अर्थर्ववेद के ज्ञान से आविर्भाव किया। यह संसार श्रेष्ठ विश्वकर्मा भगवान की कृपा से ही सुखी है, क्योंकि उनके बताये जान से ही आवश्यक यानादि जगत् बनाता है। तभी से श्री विश्वकर्मा जी का महारूप संसार में प्रसिद्ध हुआ है। परम्परा से आये हुए इस कथानक ने मेरे कानों को भी पवित्र किया है। हे ऋषियों, इस परम रहस्य को जो मनुष्य श्रवण करेंगे, उनके लिए श्रवणमात्र से ही जान प्राप्ति हो जायेगी। यह महाज्योतिः रूप है जो संसार का उपकारक है, वह मनुष्य कृतघ्न और पापी है जो इस रूप का ध्यान नहीं करता है।

श्री विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा महात्मा का दूसरा अध्याय समाप्त।

तीसरा अध्याय

हे महाराज - आपसे कहे हुए श्री विश्वकर्मा के चरित्र को श्रवण करते हुए हमारे चित की तृप्ति नहीं होती है, जैसे अमृत के पान करने से देवताओं की तृप्ति नहीं होती है। अब भी श्री विश्वकर्मा जी के सच्चरित्र के श्रवण की इच्छा अस प्रकार बढ़ती जा रही है जैसे हवा से बार बार अग्नि बढ़ती है। सूत जी कहने लगे - है मुनि श्रेष्ठों, एकाग्र मन से तुम जगत्पूज्य, सच्चिदानन्दस्वरूप, श्री विश्वकर्मा जी का दिव्य आख्यान सुनों। प्राचीन काल में एक प्रमंगद नाम का राजा हुआ, जो अपनी प्रजा को संतान से समान पालता था और सब धर्म के कामों में बिल्कुल प्रमाद नहीं किया करता था। वह अपनी प्रजा का स्नेह से शासन करता था और कभी भी दण्ड से प्रजा का दमन नहीं करता था। दरिद्रता से आकांत हुए मनुष्य मेरा शासन मानेंगे, यह उसकी नीति नहीं थी, अतएव वह राजा सदा प्रजा की वृद्धि के लए यत्न करता था, उसका राज्य कृतघ्न और दुष्टों के अभाव के कारण सुखी था। उस राजा की कमल के समान नेत्र वाली, साक्षात् सती के समान सती, विदुषी, धर्म, कर्म, व्रत परायण कमला नाम भार्या थी। कभी दैवयोग से उस राजा के शरीर में दारूण कुष्ठ रोग उत्पन्न हो गया। बार-बार चिकित्सा किया हुआ भी वह रोग स्वरूप भी शांत न हुआ। उस रोग की पीड़ा से पीड़ित राजा बड़ा व्याकुल होने लगा।

ऋषि कहने लगे हे - सुदर्शन। सूत। यह पाप रोग धर्म से पृथ्वी पालन करने वाले महात्मा को कैसे हुआ। यदि इस प्रकार धर्मात्माओं को भी रोग उत्पन्न हो जाता है, तो फिर धर्म-कर्म में कोन विश्वास करेगा। सूतजी कहने लगे- हे ऋषियों। उस राजा ने पूर्वजन्म में स्वार्थान्ध होकर यह उपदेश दिया था कि यह संसार अनादि हैं, इसका कर्ता कोई विश्वकर्मा नहीं है यह इस कारण लोंगों की वंचता करता फिरता था और नास्तिक मत का प्रचारक था। आप जानते हो यदि- कर्मों के फल का देने वाला विश्वकर्मा परमात्मा म हो तो उपकार का कर्ता

उपकृत मनुष्य द्वारा मृत्यु के अनन्तर दिये आर्शीवादों से उत्पन्न पुण्य फल को कैसे प्राप्त कर सकता है। जब परोपकारी को अपने पुण्य का फल मिल ही न सकेगा तो क्यों कोई किसी का उपकार करेगा और जब कोई किसी का उपकार ही नहीं करेगा तो संसार का उच्छेद (नाश) हो जाएगा। इसलिए नास्तिक पाखण्डी की दुर्दशा अवश्य होती है। अनेक जन्मों के पाप-पुण्य कर्म एक जन्म में ही उसका फल नहीं देते हैं, अतः उस जन्म में यह फल प्राप्त हुआ इसमें कोई आशर्य नहीं है। अब मैं तुमसे आगे की कथा कहता हूँ ध्यान से सुनों।

कभी उस राजा को अधिक व्याकुल दोखकर, उसके दुःख से दुःखी हुई पतिव्रता बेचारी रानी बोली - हे राजन्, बड़ा तेजस्वी हमारा कुल पुरोहित अचानक अक्षि रोग से व्याप्त हुआ और बिल्कुल अन्धा हो गया। उसे उपमन्यु पुरोहित ने अपने अतीन्द्रिय ज्ञान से देखा तो यही प्रतीत हुआ कि उसे अमावस्या को व्रत कर और श्री विश्वकर्मा जी का पूजन करना चाहिए। तब से ही उस पुरोहित ने सब कामों को छोड़कर विधिपूर्वक व्रत किया। व्रत के दिन ब्रह्मचारी रहता और फलहार (या एक बार अन्नाहार) करता तथा धर्म चर्चा में लीन रहा करता था। उस व्रत प्रभाव के कारण पुरोहित को दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई और बुद्धार्पण में भी उसको देखने की दृष्टि नष्ट नहीं हुई। हे महाराज, मैं दीनता के साथ प्रार्थना करती हूँ कि आप भी दीनपालक श्री विश्वकर्मा की शरण में जाइए जिससे इस दुःख से छुटकारा मिले।

राजा बोले - हे प्रिये, तुमने ठीक कहा है, इसको सुनकर मेरा चित्त बड़ा प्रफुल्लित हो रहा है और मुझे निश्चय सा हो रहा है कि भगवान् श्री विश्वकर्मा के व्रत से रोग की अवश्य निवृत्ति होगी क्योंकि किसी भी कार्य की सिद्धि को चितोत्साह प्रथम ही कह दिया करता है। सूत जी कहने लगे कि उस दिन से लेकर वह राजा प्रतिदिन श्री विश्वकर्मा जी का पूजन और बद्धन करके भोजन करने लगा। अमावस्या के दिन सब कामों को छोड़कर व्रत विश्वकर्मा जी का पूजन और व्रत कराना चाहिए।

श्री विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा महात्मा का तीसरा अध्याय समाप्त।

चौथा अध्याय

सूतजी कहने लगे - हे मुनियों, मैंने तुमको श्री विश्वकर्मा जी के अद्भुत चरितामृत का पान कराया है। अब आगे जगत् को विस्मय करने वाले चरित का वर्णन करता हूँ। जगत् में धर्म के व्यवहार से चलने वाले, सतोंषी कोई स्थकार और उसकी पत्नी वाराणसी पुरी में रहते थे। अपने कर्म में कुशल, बुद्धिमान वह स्थकार बड़ा व्याकुल हुआ। अपने पर्याप्त निर्वाह के योग्य वृत्ति की खोज में दिन रात लगा रहता था। इस प्रकार लालच में पड़ा और सतत प्रयत्न करने के बाद भी कठिनाई से भोजन और आच्छादन ही प्राप्त कर सकता था।

उस स्थकार की स्त्री पुत्र न होने के कारण नित्य सोच करती रहती थी, कि मालूम नहीं बुद्धार्पण में कैसे निर्वाह होगा। इस प्रकार चिंतातुर वह स्त्री की इच्छा से मन्दिरों में महन्तों के पास व्याकुल होकर मन्त्र तन्त्रादि से पुत्र के अर्थ घूमने लगी। दाढ़ी मूँछ जिनके मुख पर बढ़ रही है, ऐसे ऐसे आडम्बरी म्लेच्छों (फक्कड़ों) के निकट भी वह दिन रात दौड़ती फिरती थी, परन्तु उसकी कामना कहीं भी सिद्ध नहीं होती थी। काश, कुश, यमुना की बालू में जल के भ्रम से दौड़ती मृगी की तरह उसकी दशा हो रही थी।

कोई कोई ठग मयूरपिच्छों की बनी हुई मोरछल के झाड़े से उसको बहकाता था और कोई भोजप्रत्र पर जंतर लिख कर उसको भुलावा देता था। कोई कोई धूर्त उसको कहता था कि मेरी देह में अमुक देवता आता है, वह प्रसन्न हो तेरे लिए वर प्रदान करेगा। यह कहकर श्वेत भस्म देकर घर भेज देता था। इस प्रकार शोच्य दशा को प्राप्त हुए नें दोनों स्त्री पुरुष बड़े दुःखी थे। उनको दुःखी देखकर एक पड़ोंसी ब्राह्मण बोला - हे रथकार, तू क्यों इधर उधर भटकता फिरता है, मेरी बुद्धि में तू सब तरह से मूर्ख प्रतीत होता है। तू वृथा ही शिखा और यज्ञोपवीत को धारण करता है, और तेरी भार्या भी बिल्कुल मूर्ख है। इसमें कोई सदेह नहीं। इन मिथ्या उपायों

से सतान उत्पन्न नहीं हुआ करती है और न धन मिलता है, और न कुछ भी सुख प्राप्त होता है। यह तो व्यर्थ की भाग दौड़ है। वे मनुष्य अज्ञानी हैं, जो इस प्रकार के व्यर्थ उद्योगों से अपने मनोरथ सिद्ध करना चाहते हैं। कहीं व्यर्थ उद्योग करने पर भी मनोगथ सिद्ध हुए हैं।

इन मनुष्यों से अधिक वे मूर्ख हैं, जो म्लेच्छों की फूंक की अग्नि ज्वाला से अपनी संतान का जीवन होना समझते हैं। म्लेच्छों की फूंक से दग्ध हुए कुमाता के पुत्रों की फिर धर्मशास्त्र के अमुकूल उत्तम बुद्धि उत्पन्न नहीं हो सकती है। इसलिए तू सब वृथा के उपायों कों छोड़ दे और केवल दयालु श्री विश्वकर्मा की शरण को प्राप्त हो। हे श्रेष्ठ पुरुष, विश्वकर्मा की कृपा से तेरी अवश्य सिद्धी होगी। समस्त दुःखों के नाश करने में श्री विश्वकर्मा के अतिरिक्त अन्य कोई भी समर्थ नहीं है।

कर्मों के फलदान देने में वह विश्वकर्मा परमेश्वर स्वतन्त्र है और आगे पीछे करके कर्मों के फल देते रहते हैं। यदि तेरी यह दुर्दशा अपने बुरे कर्मों के फल से हो रही है तो, वह विश्वकर्मा रूप ईश्वर अन्य योनियों में भी फल दे सकता है, क्योंकि वह सर्व शक्तिमान है। ईश्वर कर्मों के फलस्वरूप सुख दुःख देता है और इस सुख और दुःख के साधन उसके पास बहुत है। उसके पाप केवल दुःख देने के लिए निर्धन या निस्संतान बना देता ही साधन है। इसलिए तू सब कामों को छोड़कर अमावस्या को व्रत कर और जितेन्द्रिय रह कर भक्ति से विश्वकर्मा भगवान का श्रवण किया कर। जितना हो सके उतना दान, अद्ययन परोपकार के कार्य आदि करता रह। इस प्रकार ब्राह्मण के वचनों को सुन कर उस स्थकार के लोचन खुल गए। उस परोपकारी ब्राह्मण के चरणों को देर तक स्पर्श करके वह रथकर श्री विश्वकर्मा जी का ध्यान करता हुआ अपने घर को चला गया। उस दिन से लेकर वह धर्मात्मा, रथकार श्री विश्वकर्मा जी के चरण कमलों की शक्ति में लीन रहने लगा। उस रथकार की उत्तम स्त्री भी सब मिथ्या उपायों को छोड़कर श्री विश्वकर्मा के उत्तम गुणों में भक्ति करने लगी। अमावस्या के दिन इस दिव्य व्रत के प्रमाण से वह दम्पत्ती धन और पुत्रों से युक्त हुई। उस रथकार का एक दिन भी बिना वृत्ति के नहीं जाता था। उसका पुत्र बड़ां सुशील गुणवान विद्वान और अपने माता-पिता की सुश्रूषा करने वाला हुआ। इस प्रकार सब देवों से अतिशायी श्री विश्वकर्मा के प्रभाव से यह गृहस्थ सुख भोगने लगा। इसी प्रकार जो मनुष्य भक्तियुक्त चित से श्री विश्वकर्मा का ध्यान करते हैं वे इस लोक में पुत्र पौत्रादि से युक्त होकर सुखी होते हैं।

श्री विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा महात्मा का चौथा अध्याय समाप्त।

पांचवां अध्याय

ऋषियों ने कहा - हे सूत जी, विश्वकर्मा भगवान के जिन चरणों की पूजा देवता भी करते हैं, आनन्दमयी चरित्र को थोड़े से शब्दों में सुनकर हमारी इच्छा और भी बढ़ गई। जिस प्रकार हवि से अग्नि प्रचण्ड होती जाती है, ठीक इसी प्रकार ज्यों ज्यों हम विश्वकर्मा भगवान का चरित्र सुनते हैं त्यों त्यों उसके सुनने की इच्छा और भी बढ़ती जाती हैं।

सूत जी बोले - हे मुनि लोगों, आप लोग ने विश्वकर्मा के चरित्र को सुना, जिसके सुनने से देवता भी नहीं अघाये। एक बार नैमिषारण्य में मुनि और सन्यासी लोग एकत्र हुए और अपने अमीष्ट की प्राप्ति के लिए एक सभा की। विश्वमित्र कहने लगे कि हमें लोगों के आश्रमों में दुष्ट कर्मों के करते हुए राक्षस लोग यज्ञ करने वाले मुनियों के आस पास ही बड़े बड़े मनुष्य को अपना ग्रास बना लेते हैं। इस प्रकार यज्ञों को नष्ट करते हुए वह राक्षस लोग नर मासँ भक्षक करते हैं। मातंग मुनि कहने लगे कि हमारे पुज्य पुरोहित उपमन्यु जो ब्रह्मचर्य व्रत में स्थित रह कर और कन्द मूल खाकर सदा धर्म कार्यों में सलग्न रहते हैं, तथा जो प्रतिदीन सारे कामों को छोड़ परमात्मा का ध्यान करते रहते हैं, तथा वह भी राक्षसों को नष्ट करने में समर्थ हो सकते हैं। (इसलिए अब हमें उनके कुकृत्यों से बचने का कोई उपाय अवश्य करना चाहिए।)

सूत जी बोले - हे ऋषियों, इस प्रकार ऋषइ मुनियों के वचन सुनकर वरिष्ठ मुनि जी कहने लगे कि एक बार पहले भी ऋषि मुनियों पर इस प्रकार का कष्ट आ पड़ा था। उस समय वह सब मिलकर स्वर्ग में ब्रह्मा जी के पास गये। चतुर्भज ब्रह्मा ने पद्मासन लगाये हुए शान्त भाव से ध्यानवस्थित में उन्होंने ऋषि मुनियों को देखा जो दुख से छुटकार देने वाले शिव रूप भगवान का ध्यान कर रहे थे। उन प्रभु जो सब का पिता है यह सब बात आदि से अन्त तक जान ली और ऋषि मुनियों को दुःख से छुटकारा पाने के लिए विश्वकर्मा भगवान की कथा का उपदेश दिया।

सूत जी बोले - हे ऋषियों, इस प्रकार उनके वचन सुलकर विश्वामित्र मुनि को बड़ा आश्चर्य हुआ और वह जरा निकट आ गए। तब ब्रह्मा के बताये हुए और पक्के सुख के उपाय को सुनकर विश्वामित्र मुनि मन को प्रसन्न करने वाले वचन कहने लगे। विश्वकर्मा मुनि बोले कि मुनि लोगों। आप लोग वरिष्ठ जी के कथन को सुनो। वस्तुतः यह बात निश्चित ही है कि ब्रह्मा ही सब दुखों का उपाय है, इसलिए हमें इसके लिए कुछ अधिक सोच विचार की आवश्यकता नहीं। सारे पापों को दूर करन् वाला और दुःखों को हटाने वाला एक ही ब्रह्मा है।

सूत जी बोले - ऋषि लोंगों ने ध्यानपूर्वक सुना और गद्गद वाणी से कहने लगे कि विश्वकर्मा मुनि ने ठीक ही कहा है कि ब्रह्मा की ही शरण जाना उपसुक्त है। ऐसा सुन सब ऋषि-मुनियों ने स्वर्ग को प्रस्थान किया वह राक्षसों से हुई अपनी दुर्दशा ब्रह्मा को सुना सकें। मुनियों के इस प्रकार कष्ट को सुनकर ब्रह्मा जी को बड़ा आश्चर्य हुआ, उसी समय ब्रह्मा तेज से प्रकाशित अपनी आँखों को मूँदकर विचारमग्न हुए। इस प्रकार राक्षसों द्वारा की गई सारी दुर्दशा को समझा ब्रह्मा जी जो बड़े तेजस्वी थे मन को आनन्द देने वाले वचन कहने लगे। ब्रह्मा जी कहने लगे कि हे मुनियों। राक्षसों से तो स्वर्ग में रहने वाले देवता को भी भय लगता रहता है। फिर मनुष्यों का तो कहना ही क्या जो बुढ़ापे और मृत्यु के दुखों में लिप्त रहते हैं। सुनों। उन राक्षसों को नष्ट करन् में महातेजस्वी विश्वकर्मा ही है जो सब प्रकार के बलों से युक्त और सारे विश्व में प्रसिद्ध है। उसी की पूजा से तुम लोग राक्षसों को नष्ट करने में समर्थ हो सकते हो। इस वास्ते उसी दयालु विश्वकर्मा की शरण में जाओ। देवताओं को हवि के पहुंचानें वाला अग्नि नामक देवता संसार में प्रसिद्ध है उसी का पुत्र यज्ञों में श्रेष्ठ पुरोहित होता है। अग्निरा उसका नाम है और सब मुनियों में श्रेष्ठ है। वही आपकों दुखों से पार कर देगा इसमें कोई सदेंह नहीं है। इसलिए हे मुनियों। आप उन्हीं मुनि श्रेष्ठ के चरण कमलों को छुआ और उन्हीं से अपने को कष्टों से मुक्ति पाने के लिए प्रार्थना करो।

सूत जी बोले कि ब्रह्मा जी के कथन के अनुसार ऋषियों ने सब यज्ञ अनुष्ठान आदि किए और अंगिरा ऋषि के वचनों को सुनने के लिए उत्सुक हुए। अंगिरा ऋषि कहने लगे कि हे मुनियों। तुम लोग क्यों इधर-उधर मारे-मारे फिरते हो? दुखों को काटने में विश्वकर्मा के अतिरिक्त और कोई भी समर्थ नहीं, इसलिए तुम्हें चाहिए कि जितेन्द्रियं रहते हुए अमावस्या के दिन अपने साधारण कर्मों को रोक कर भक्ति पूर्वक विश्वकर्मा की कथा सुनों। जिसके सुनने मात्र से जन्म जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते हैं। मुनि लोग ब्रह्माचर्य व्रत में स्थित हो विश्वकर्मा देव की पूजा द्वारा ध्यान करते हुए सब प्रकार के सुखों को प्राप्त करते हैं। सूत जी कहने लगे कि मुनि लोग इस प्रकार महर्षि अंगिरा के वचनों को सुनकर अपने-अपने आश्रामों को चले गये और यज्ञ में विश्वकर्मा देव का पूजन किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि उसकी पूजा से सारे राक्षस भस्म हो गए। यज्ञ विघ्नों से रहित हो गए तथा नाना प्रकार के सुखों से सम्पन्न हो गए। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक विश्वकर्मा को चिन्तन करता है वह सुखों को प्राप्त करता हुआ संसार में बड़े पद को प्राप्त करता है।

श्री विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा महात्मा का पांचवां अध्याय समाप्त।

छठावां अध्याय

सूत जी बोले - हे मुनियों, मैं आपसे सब लोकों में विख्यात श्री विश्वकर्मा का माहात्म्य फिर कहता हूँ तुम

ध्यान से सुनों। उज्जैन नगरी में एक सर्वश्रेष्ठ धर्म तत्पर, उदार, धनंजय नामक सेठ था। उस सेठ का कोष (खजाना) लाल मोती हीरे जवाहरातों से ऐसा भरा था जैसा कुबेर का भण्डार भरा हो। विवाह, व्यवहार, अभियोग रोग संकट में प्रत्येक मनुष्य उसके धन का उपयोग किया करता था। उपकार में लगें हुए इस सेठ का धन क्षीण हो गया और वह ऐसा दुख पाने लगा जैसा कीचड़ में फँसा हुआ हाथी दुःखी होता है। उस सेठ की यह प्रबल आशा थी, कि पूर्व उपकार किए मेरे मित्र मेरी अवश्वय सहायता करेंगे। परंतु उसकी आशा व्यर्थ हुई और उन कृतघ्न मित्रों में कोई भी उसके उपकार के लिए समर्थ नहीं हुआ। उसके मित्र क्षण मात्र में शत्रु हो गए और वे उपकृत मित्र ही सर्वप्रथम उस सेठ की निन्दा करने लगे। उसके वे पुराने मित्र अपनी दृष्टियों को छिपा छिपा कर निकल जाते थे, बात तो यह है कि स्वार्थी मित्र विपत्ति में साथी नहीं हुआ करते हैं।

इस नीच वृत्ति से उस धनंजय सेठ को एक बारगी ही संसार से विरक्ति और मनुष्यों से घृणा उत्पन्न हो गई। वह अपने नगर को छोड़कर और कृतघ्नों के मुख पर थूक कर वन को चला गया। कन्द, मूल, फल आदि से प्रयत्नपूर्वक अपनी वृत्ति करता था और मनुष्य मात्र को देख कर दूर भाग जाता था। एक बार घूमते हुए सेठ ने पर्वत की गुफा पे पद्मासन बाधें शांत, लोगों से व्याप्त, लोमश मुनि को देखा। उस धनंजय ने उस मुनि को कोशों से व्याप्त देख कर पसु समझा और कुतूहल (तमाशा) की इच्छा से उसके पास अच्छी तरह बैठ गया, मुनि ने पास बैठ हुए धनंजय से पूछा - हे महात्मन् कुशल तो हो, कहां से पधारे हो। उस धनंजय ने इस पशु को मनुष्य के समान बोलता देख कर बड़ा अचम्भा किया और प्रारम्भ से अपना सारा वृतान्त उस ब्रह्मर्षि को दिया।

यह सुनकर मुनिश्रेष्ठ धनंजय से बोला - यदि तुझे पापी कृतघ्नों से घृणा है, तो तू केसें विश्वकर्मा से विमुख हो रहा है। हे श्रेष्ठिन्, सब सुखों के भोगने की शक्ति वालें तुझ को उसी विश्वकर्मा ने बनाया है। वह विश्वकर्मा को भूल जाने से कैसे सुक मिल सकता है। नास्तिक कृतघ्न उपकार को तब ही भूलता है जब वह प्रथम परमेश्वर को भूल जाता है, इसलिए तू अद्भुत शक्ति वाले विश्वकर्मा की शरण को प्राप्त हो। ऊर्ध्वमूल जगत् के कारण उस विश्वकर्मा के नाना रूप हैं। कोई रूप द्विबाहु कोई चतुर्बाहु और कोई दसबाहु का है इसी प्रकार एकमुख, चतुर्मुख और पंचमुख के रूप हैं। मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और दैवज से विश्वकर्मा के साकार रूप के पुत्र हैं। सेतुबंध के समय श्री रामचंद्र जी ने भी क्षी विश्वकर्मा का पूजन किया है। श्री कृष्णचन्द्र ने द्वारका रचना के समय श्री विश्वकर्मा की पूजा की है इसी से वे भी द्वारका जैसी सुंदर पुरी की रचना कर सकें हैं।

हे धनंजय, तू भी उसी श्री विश्वकर्मा का पूजन और वंदन कर, इस प्रकार सब दुखों से छुट कर सब सिद्धी प्राप्त करेगा। इस प्रकार उस लोमश ऋषि का उपदेश सुनकर उस श्रेष्ठी को बड़ा सतोंष हुआ और दिन से ही लेकर वह क् श्री विश्वकर्मा का भक्त हो गया, उन श्री विश्वकर्मा जी के पूजन स् उसके समस्त पाप दग्ध हो गए और अन्त को देवता बन कर सुख स्वर्ग भोगने लगा। जो मनुष्य भक्ति युक्त चित्त से श्री विश्वकर्मा का ध्यान करता है वह सुखी होकर क्षई विश्वकर्मा जी के चरण कमलों का भक्ति प्राप्त करता है। श्री विश्वकर्मा जी का यश बड़ा पवित्र है, उसकों जो तत्वज मनुष्य सुनता है वह पृथ्वी पर सब सुखों को प्राप्त करके अन्ते में श्री विश्वकर्मा जी के शाश्वत पद को प्राप्त करता है।

श्री विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा महात्मा का छटावां अध्याय समाप्त।

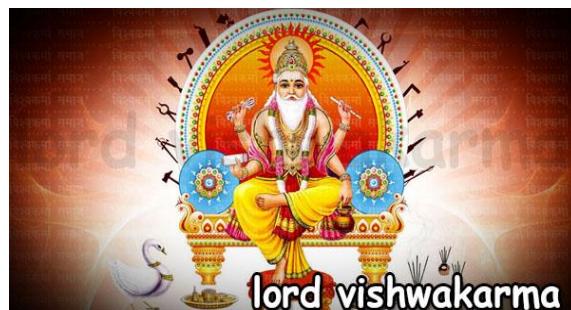
सातवां अध्याय

ऋषि कहने लगे - भगवान विश्वकर्मा की पवित्र कथआ को श्रवणकर हमको बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हुई है अब आगे और सुनना चाहते हैं। चित्त में उद्वेग होने पर क्या करना चाहिए, दरिद्र किस प्रकार नष्ट होता है, मृतव सा अर्थात जिस स्त्री के उत्पन्न होकर बच्चा मर जाता है उसकी शान्ति का क्या उपाय है ? हे तपोधन, पहिले जन्म में किये गये पाप इस जन्म में फल देते हैं। रोग, दुर्गति, अमीष्ट वस्तुओं का नाशक और समसेत पीड़ाओं

के हरण करने वाले भगवान् विश्वकर्मा के पूजन को कहता हूँ। दूध पीने वाले छोटे बालकों तथा तरुण बालकों का मरना मृतवत्सा स्त्रा का शालित के लिए और चित का वैकल्प दूर करने के लिए भगवान् विश्वकर्मा का पूजन करना चाहिए।

प्राचीन काल में रथन्तर कल्प में एक दन्तवाहन नाम का राजा हुआ। वह सूर्य के सामन प्रभावशाली लोकों में प्रसिद्ध था। उसी का कृतवीर्य नाम का एक प्रतापी पुत्र हुआ जो सातों द्वीपों पर्यन्त पृथ्वी की शासन करता था। उस राजा के 11 पुत्र पूर्व जन्म में किये पाप के वश पैदा होते ही नष्ट हो गये, तब तो रानी शोक करती हुई पृथ्वी पर पछाड़े खाती हुई रुदन करने लगी और राजा से बोली कि मैं अपने यौवन को नष्ट करके पुत्रहीन कैसे धैर्य धारण करूँ। तब राजा अपनी स्त्री को सन्तोष दिला कर गुरु के घर गया और प्रणाम कर बोला - हे भगवन मेरे पुत्र होकर मर जाते हैं यह किस देन की मुझसे अवहेलना होती है सो कहिए, क्योंकि दिन - रात उत्पन्न हुए पुत्रों को याद करके रानी बहुत रुदन करती हैं और धैर्य धारण नहीं करती हैं।

गुरु बोले हे - राजन, अब बहुत शोक मत करो, तुम्हारे एक वशं को बढाने वाला चिरंजीवी पुत्र होगा। देवों के देवेश भगवान् विश्वकर्मा का पूजन करों, उनके प्रसन्न होने पर अवश्य पल सिद्धि होगी, उनकी पूजा के आगे अन्य देवों की पूजा से क्या? तब राजा ने धर्म से दृढ़ होकर अपनी पत्नी सहित भगवान् विश्वकर्मा का पूजन किया। वस्त्र आभूषणों से ब्रह्मणों को सनतुष्टं किया। तब भगवान् विश्वकर्मा के प्रसन्न होने पर उसकी स्त्री ने गर्भ धारण किया और दसवें महीनें में सुन्दर से पुत्र को जन्म दिया। मृतवत्सा को शक्ति के लिए चित का भ्रम होने पर विश्वकर्मा प्रभु का अर्चन करना चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य की इच्छायें पूर्ण होती हैं दरिद्रता का नाश बाल पीड़ा और दुःस्वप्न का भय नहीं होता। विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा महात्मा का सातवां अध्याय समाप्त।



• श्री विश्वकर्मा शतकम्

धीमतो द्विजवरस्य महर्षः शिल्पशास्त्र रचनानिपुणस्य ।

विश्वकर्मविबुधस्य मुदेहि स्वागतां वितनुमः शतकेन ॥१॥

शिल्पशास्त्र के रचयिता, धीमान् ब्राह्मण, महर्षि विश्वकर्मा के आविर्भाव का इन 100 संस्कृत श्लोकों द्वारा स्वागत करता है।

(क) रतोदध्ता वृत्तम्

प्रक्रियां रचियता रथोदधतां येन वेदविदुषा विजन्मना ।

शिल्पतल्यमविकल्पि कल्पितं विश्वकर्मविबुधं तमीड्महे ॥२॥

वेद् के विद्वान् जिस ब्राह्मण ने स्थादि निर्माण की प्रक्रिया को रचते हुए असंदिग्ध शिल्पशास्त्र को प्रकट क्या है,

उस विश्वकर्मा धीमान् की हम स्तुति करते हैं।

शिल्पिनां प्रियतमेन धीमात् ब्राह्मणेन भुवि विश्वकर्मणा ।

यन्नृणामुपकृतं ब्रह्मत्तम् तं महर्षिननिशं स्तुवीमहं ॥३॥

समस्त शिल्पियों के प्यारे धीमान् विश्वकर्मा ने संसार में जो मनुष्यों का बहुत भारी उपकार किया है,

उसके लिए हम उस महर्षि का हर समय स्तुति करते हैं।

यस्त नाम भुवने महद् यशो भौवनस्य बहुशः प्रकाशते ।

तत्प्रशस्ति मधिकृत्य संस्कृतुं विश्वकर्मसतकं निबध्यते ॥४॥

जिस भुवन के पुत्र (रक्षक) भौवन विश्वकर्मा का बहुत यशस्वी नाम संसार में प्रकाशित है उसकी प्रशंसा के निमित यह संस्कृत श्लोकों में ‘विश्वकर्मशतकम्’ नामक लघु ग्रंथ बनाया जाता है।

(उपजाति वृत्तम्)

ब्रह्माण्डमूलं प्रथमो विघाता स विश्वकर्मा परमेश्वरो स्ति ।

वेदानुकूलं जगतः स्वशक्तृया सृष्टि स्थिति संहतिमातेमानोति ॥५॥

प्रथम ब्राह्मण का मूल, विधान करने वाला विश्वकर्मा परमेश्वर है जो अपनी शक्ति से

वेदानुकूल जगत् की उत्पत्ति और प्रलय करता है।

उत्पादयामास या आदिशिल्पी वर्णान् यशास्वं गुणकर्मयुक्तान् ।

विशिष्टलोकव्यवहारहेतून् सब्राह्मान् क्षत्रियवैसश्य शूद्रान् ॥६॥

जिस आदि शिल्पी ने अपने-अपने गुण कर्म स्वभाव के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों को

विशेष लोक व्यवहार की सिद्धि के लिए बनाया है।

समस्तमेतद् भुवनं स देवः कर्मपथानं रचयन् समन्नात् ।

चेष्टाभिरिष्टामि स्नल्प शिल्पत्रिया विशैषाहनिह तन्तनोति ॥७॥

वह देव इस समस्त विश्व को सब और से कर्म प्रथान बनाता हुआ अपनी चेष्टाओं से बहुत बंडी शिल्प क्रियाओं को फैला रहा है।

तपस्विनः संयमिनः पुरा ये ख्यातिं गताः कर्मणि कौशलेन ।

तेषा समेषामपि कर्म मुख्यं मतं स्वतो जीवनयापनाय ॥८॥

जो पहले तपस्वी संयमी लोग अपनी कर्म कुशलता से प्रसिद्धि को प्राप्त हुए हैं, उन सबने भी अपना जीवनयापन

करने के लिए कर्म को ही मुख्य माना है।

शुभानि कर्मणि सदैव शतं समाः साधु जिजीविषेन्ना ।

एतद् यजुर्वेदवचः प्रमाणं मत्वा क्रियाशिल्पविदेह भव्यम् ॥९॥

मनुष्य इस संसार में सदा श्राम कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा रखें। इस यजुर्वेद के वचन को प्रमाण

मानकर शिल्पक्रिया का जानकर होना चाहिए।

संसिद्धिमाप्ताः खलु कर्मणैव लोके प्रसिद्धा जानकादयोपि ।

तस्माद् बुधैः कर्मर्यवित्थै स विश्वकर्मा प्रभुरेषणीयः ॥10॥

लोक मे प्रसिद्ध जनक आदि राजर्षि भी कर्म से ही सिद्धि को प्राप्त हुए हैं। इसलिए विद्वान् लोगो को कर्म का रहस्य

जानने के लिए उस विश्वकर्मा प्रभु की उपासना करनी चाहिए।

ज्येष्ठं परं ब्रह्म विराङ् महेशस्त्वष्टा जगद् योनिरचिन्त्यशक्तिः।

विश्वस्य धाता भगवान् पुराणः स विश्वकर्मा प्रभुर्चर्चनीयः॥11॥

सबसे बड़ा, ज्येष्ठ ब्रह्म, विराट् शक्तिसंपन्न, महेश्वर, शिल्प रचना करने वाला, जगत् का कारण, अलैकिक सामर्थ्यशाली, विश्व का धाता, भगवान् पुरातन वह विश्वकर्मा प्रभु पूजनीय है।

यः शिल्पमुख्यः प्रमुरीश्वरः स क्वचित् कदाचिन्न विनाशमेति ।

सर्वत्रगं ज्योतिरिदं तदीयं, तस्यैव भासा सकलं विभाति ॥12॥

जो शिल्पियों में मुख्य प्रभु ईश्वर है वह कहीम पर कभी नाश को प्राप्त नहीं होता।

सर्वत्र उसी की यह ज्योति फैली हुई है। उसी के प्रकाश से सब प्रकाशित होता है।

पुरःसरोऽसौं समवर्तताये समग्रसंसारमजीनच्च ।

अनल्पशिल्पेन बुधोन तेन प्रवर्तिता सृष्टिरयं पुराणी ॥13॥

वह सबका अग्रणी पहले विद्यमान था। सारे संसार को उसी ने बनाया। बहुत बड़े शिल्प वाले उसी विद्वान की चलाई

हुई यह पुरातन सृष्टि चल रही है।

होता पिता नः स इमान् समस्तांकल्लोकान् गुरुत्वात् सतत बिर्भाति।

उपाददानो निजशिल्पवितं प्रैर्णन्महिम्ना प्रथमच्छद्न्यान् ॥14॥

वह हमारा पालन पिता, हवन करले वाला, पुकारने वाला योग्य, अपने गौरव से उन समस्त लोकों का पालन-पोषण करता है। अपने शिल्प धान को लेकर निजमहिमा से अन्यों को ढक देता है।

सबसे सबको ढकने वाला वही देव है।

अन्तर्निविष्टो भुवनेषु गृदं से प्रौढि स प्रौढनिविष्टभारः ।

जगद् विचित्रं तनुते स्वशिल्पचक्रेन विचाल्यमानम् ॥15॥

क्योंकि वह देव अन्यों से अशक्य सब दुष्कर शुभकर्मों के करता है इसलिए अर्थातनुकूल 'विश्वकर्मा' इस उत्तम सज्जां को धारण करके शोभित हो रहा है।

इमा स भूमि जनयन् विशालां द्यो चापि सद्यः कृतशिल्पविद्य ।

आरम्भणे तन्निजमाययैव स्वयं हमधिष्ठानमपि न्यामान्त्सीत् ॥16॥

स्वंय शीघ्र विद्या का निर्माण करना वाले उस देव ने इस विशाल भूमि और द्युलोक को पैदा किया। उसके आधार तथा निर्माण साधान को भी निज माया से ही उसने बनाया।

किं स्वित् वनं ततजजतत् क्व स वृक्ष आसीद् यतो भुवं दया त विस्ततक्ष।

मनीषिणोऽद्यापि विचारयन्ति प्रत्युतं तस्य नचाप्नुवन्ति ॥17॥

वह कौन-सा वन तथा उश वन में कहां वह वृक्ष था जिसने उसने द्योलोक भूलोक का निर्माण किया। विचारशील लोग आज भी इस बात का विचार करते हैं किन्तु उसका जवाह नहीं मिलता।

सप्तर्षिमुख्यः स महान् महर्षि स्वयं स्वधामान्याखिलानि वेद ।

मर्धभिषिकतो रविचन्द्रताराग्रहादिसृष्टयास्ति विचित्रमूर्तिः ॥18॥

वह महान् महर्षि सप्तर्षियों में मुख्य है। स्वयं अपने धामो को जानता है। तब का शिरोमणि,

सूर्य चन्द्र तारागणदि की सृष्टि से विचित्र मूर्ति वाला है।

मुग्धा भवामोऽस्य जगद् विसृष्टि मुहुर्लोचनलोभनीयाम् ।

स एव भूरि प्रथितोऽत्र सूरिरस्माकमूरी कुरुतान् प्रशस्तिम् ॥19॥

आंखों को लुभाने वाली उस देव की विचित्र सृष्टि को देखकर हम लोग मुग्ध होते हैं। वहीं विद्वान् इस संसार में प्रसिद्ध है। हमारी की हुई भारी प्रशंसा को स्वीकार करें।

पुरोऽस्य देवस्य दिवस्पृथिव्यो नन्नम्यमाने इव समविभातः।

स्तब्धो भयादुदधिजमानरूपे उभे अतनद्रे निजकर्माणि स्तः ॥20॥

इस देव के सामने दयुलोक और झुके हुए से दिखते हैं। निश्चल भय से मानो कापते हुए दोनों अपने काम में जागरूक हैं।

द्रष्टा तटस्थो जडचेतनस्य मध्ये विराजत्यविलिप्तरूपः।

स देव एवेतरदेवनाम्नामाम्नाममुच्चैश्चरितेन धते ॥21॥

वह देव तटस्थ द्रष्टा बना हुआ जड़ और चेतन के मध्य में अलिप्तरूप से रहता है।

अपने ऊचे चरित्र बल से सब अन्य देवताओं के नामों को धारण करता है।

सर्वाः समस्या भुवि यस्य पाश्वे गता अयत्नेन समाहिताः स्युः ।

प्रकृष्टसंतुष्टिसुखस्य दाता स विश्वकर्मास्तु सदा नमस्यः ॥22॥

जिस देव कैसे इस अद्भुत सृष्टि को बनाता है और कैसे उसका पालन करता है,

जिजासु लोग उसको इस महिमा को जताने के लिए ही उससे प्राप्त शिल्प विद्या का विस्तार करते हैं।

कथ स सृष्टिः रचयत्यपूर्वा कथं च तत्पालनमातनोति ।

जिजासवस्तन्महिमामेते तच्छल्पिनः शिल्पमनल्पयन्ति ॥23॥

वह देव कैसे इस अद्भुत सुष्टि को बनाता है और कैसे उसका पालन करता है,

जिजासु लोग उसको इस महिमा को जताने के लिए ही उससे प्राप्त शिल्प विद्या का विस्तार करते हैं।

सूक्ष्माच्य सूक्ष्मः स परात् परेस्ति विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता ।

सुशिल्पविज्ञाननिधि तमेव श्री विश्वकर्माण स्तवीमि ॥24॥

वह देव सूक्ष्म और परे से परे हैं। विश्व भुवन का कर्मा और रक्षक हैं।

सुन्दर शिल्पविद्या के निधि उस विश्वकर्मा देव की मैं स्तुति करता हूँ।

सम्यड् न, ज्ञातुममी समर्था देवा मनुष्या असुराश्च सर्वे ।

अन्तःस्थितो यश्व सदा समेषां तं विश्वकर्माणमहं स्तवीमि ॥25॥

जिस देव को देव, असुर, मनुष्य में सब ठीक तरह से जानन् में असमर्थ हैं।

जो सदा सबके अदंर स्थित हैं बस विश्वकर्मा देव की मैं स्तुति करता हूँ।

अज्ञानिनो जन्मामिमानवन्तो निर्गलं वाचमुदीरयन्ति ।

यं तत्त्वते नव विदुस्तन्व श्री विश्वकर्माणमहं स्तवीमि ॥26॥

जाता का अभझमान रखने वाले अज्ञानी लोग जिस देव को यशावत् नहीं जानते।

व्यर्थ वाणी बोलते हैं। उस विश्वकर्मा देव की मैं स्तुति करता हूँ।

जना यथार्थप्रविवेकशून्य मुधौ व वाचो ग्लपयन्ति परिमन्।

देवं तमन्तः प्रधिधानदश्यमं श्री विश्वकर्माणमहे स्तवीमि ॥27॥

यथार्थ विचार से शून्य लोग जिस देव के विषय में व्यर्थ वाणी का प्रयोग करते हैं।

अन्तःसमाधि से देखने योग्य उस विश्वकर्मा देव को मैं स्तुति करता हूँ।

यस्तात् पूरा किचनं नैवजातं यः सर्वमेतजनयत्यज्जस्त्रम् ।

प्रजापतिः स्वप्रजया समेतो ज्योतिस्वयं द्योतयते स एव॥28॥

जिस देव से पहले कुछ भी नहीं जिसने यह सब निरतं प्रवाह से उत्पन्न किया।

वह प्रजापति विश्वकर्मा देव अपनी प्रजा के साथ वर्तमान हुआ अग्नि,

विद्युत और सूर्य इन तीनों ज्योतियों को चमकाता हैं।

प्राणादिमिः वोडशमिः कलाभिर्विभक्तरूपास्य विभाति शक्तिः।

अमुं शुभे कर्मणि योजयन्तं श्रीविश्वकर्माणमहं स्तवीमि ॥29॥

प्राण श्रद्धा आदि 16 कलाओं में विभक्त जिस देव की शक्ति प्रकट होती है।

शुभ कर्म में लगाने वाले उस विश्वकर्मा देव की में स्तुति करता हूँ।

आकारहीनोऽप्यथ निर्विकारो गुणेः समेतापि स निर्गुणोस्ति।

कल्याणिनस्तस्य महेश्वरस्य कुर्वे प्रणामान् वहुशोऽभिरामान् ॥30॥

यह देव निराकार तथा निर्विकार है। सगुण होकर भी निर्गुण है।

कल्याणकारी उस महान् ईश्वर विश्वकर्मा को मैं बहुत सुंदर प्रमाण करता हूँ।

स जीवमात्राय तदीयकर्म-फलोपभोगं क्रमंशः प्रदास्यन् ।

सृजन विसृष्टि बहाता विचित्र समाट स्वयं राजति विश्वकर्मा ॥31॥

वह विश्वकर्मा देव जीवमात्र के उसके कर्माफलानुसार क्रम से भोग देने के लिए इस विचित्र सृष्टि को बनाता है। इसका स्वयं समांट होकर विराजता है।

पर्याप्तकामस्य शिवस्य तस्य प्रेयान स्वभावोऽयमिहाविरस्ति ।

एको बहु स्यामहमित्यमीप्यन् स्वललिया क्रीडति विश्वमध्ये ॥32॥

सब कामनाओं से पूर्ण उस शिव देव का यह प्रिय स्वभाव यहां प्रकट होता है कि वह अपनी लीला से एक होता हुआ भी अनेक हो जाऊँ यह सोचकर विश्व में क्रीडा करता है।

तस्योपचारात् तदपत्यामादौ शरीरधारी कुशलस्तपस्वी ।

शिल्पक्रियाकाण्डविशेषविज्ञः पुमानपि स्यादिह विश्वकर्मा ॥33॥

उस देव के उपलक्षण से उसको आदिम सतांन, कुशल, तपस्वी, शिल्पशास्त्र का विशेष विद्वान्, देहधारी पुरुष भी विश्वकर्मा कहाता है।

मन्त्रर्थदश्वा स ऋषिः प्रसिद्धः पवित्रस्कारविशेषयुक्तः।

धीमान् द्विजन्मा भुवि शिल्पवंशप्रवर्तकः कीर्तिमितो महात्मा ॥34॥

पवित्र संस्कारों वाला वह विश्वकर्मा मनुष्य प्रसिद्ध मन्त्रार्थ द्रष्टा ऋषि हुआ है।

जो महात्मा धीमान् ब्राह्मण होकर शिल्पियों के वशं का प्रवर्तक माना गया।

त्वष्टा सुधन्वा मय आर्यशिल्पी ब्रह्माथ विष्णुः स सदाशिवोस्ति ।

तस्यैव नामानि शुभानि यानि स्मरामि, पुण्यार्थमंह हि तानि ॥35॥

वही विश्वकर्मा त्वष्टा, सुधन्वा, मय, आदि शिल्पी, ब्रह्म, विष्णु,

सदाशिव आदि शुभ नाम वाला है, मैं पुण्यार्थ उसके नामों का स्मरण करता हूँ।

यद् दृश्यते किंचिदपि त्रिलोक्यांचित्रं विचित्रं च पदार्थजातम् ।

विमानयन्त्राचंल वा तद् विश्वकर्मेव ससजं सर्वम् ॥36॥

तीनों लोकों में जो कुछ भी विमान यत्र आदि चल अचल, चित्र, विचित्र पदार्थ नजर आता है

वह सब विश्वकर्मा का ही बनाया हुआ है।

ततोधित्रजे स्थकास्कर्म यानादिनिर्माणकला च साक्षात् ।

आयार्यभावे भजमान आस्ते स्थापत्यशिल्पेषि स निर्विकल्पनम् ॥३७॥

उसी विश्वकर्मा से काष्ठ शिल्पियों का काम उत्पन्न हुआ। यान आदि के बनाने की कला भी साक्षात् उसी से पैदा हुई।

वहीं असांदिग्धरूप रूप से स्थापत्य एवं गृहनिर्माणदि कला का भी आचार्य है।

मतः पुरो देवपुरोहितोऽसौ बृहस्पतिः सूर्य उदहतश्च।

धीमान् महान् वक्तुतमोर्ध्यक्लास्त्रेन्यरूपि विश्वस्य च सूत्रधारः ॥३८॥

वह विश्वकर्मा पहला देवों का पुरोहित है वही बृहस्पति, सूर्यहै। धीमाने अर्थशास्त्र का महान् वक्ता और विश्व का सूत्रधार शिल्पी भी वही है।

ऋषिस्वंय सप्तसु मुख्य उक्तः स्वयं वसिष्ठदिषु पुण्यवत्यु ।

प्रशंसयामास च शिल्पवर्ग जगत्प्रभुः सेवकधर्मक्त्वतः ॥३९॥

वह वसिष्ठदि सातों पुण्यवान् ऋषियों में मुख्य है। सेवक धर्म का महत्व देने वाले उसने जगत् में शिल्पियों के कार्य को प्रससिंत बनाया है।

दैवज्ञमन्वादिभिरात्मभूतैर्विशुद्धचितैः स्वसुतैरूदातेः।

अनारतं लोकहिताय भूप। प्रावीवृतद् वसंमसौ निजाशम् ॥४०॥

दैवज्ञ, मनु आदि अपने शुद्ध चित उदात् पुत्रों द्वारा उस विश्वकर्मा ने विरतं लोक हित के लिए अपने वशं को चलाया।

तदाननै पञ्चभिरेव जाता द्विजातयः पशञ्ज च सत्नगाद्या ।

शिल्पक्रियामायां परमप्रवीण गतोघ्नभूनाख्यऋषि प्रसिद्धिम् ॥४१॥

उस विश्वकर्मा के पांच मुखों से पांच सल्ग आदि द्विज पैदा हुए। जिन्होंने शिल्पक्रिया में अतिनिपुण होकर सब प्रकार से लोकहित किया।

लोहस्य कर्माकृत सत्नगस्तु सनातनश्चातत दार्कर्म ।

स्वर्णादिनिर्माणकलाप्रवीणो गतोघ्नभूनाख्याऋषि प्रसिद्धिम् ॥४२॥

विश्वकर्मा के पांच पुत्र सनग न लोहे का काम, सनातन ने लकड़ी का काम किया।

अहभून ऋषि सोने चांदी बनाने की कला में प्रसिद्ध हुए।

प्रत्नस्तु विश्वस्य हिते रतोघ्नभूत समस्तशिल्पाधिपतिर्मनीषी ।

सुपर्णसजंश्च महर्षिरासीत् स्वामी किरीटादिविभूषणानाम् ॥४३॥

विश्वकर्मा के पुत्र प्रत्न ने विश्व कल्याण के लिए सभी शिल्पों को आधिपत्य स्वीकार किया।

सुपर्ण ऋषि किरीट आदि घडने का स्वामी बना।

सप्त ऋषियों द्वारा विश्वकर्मा जी की पूजा

ऋग्वेद के दशम् मण्डल के सूक्त 81 व 82 दोनों सूक्त विश्वकर्मा सूक्त है। इनमें प्रत्येक में सात-सात मंत्र है। इन सब मंत्रों के ऋषि और देवता भुवनपुत्र विश्वकर्मा ही हैं। ये ही चौदह मंत्र यजुर्वेद अध्याय के 17वें में मंत्र 17 से 32 तक आते हैं, जिसमें से केवल दो मंत्र 24वां और 32वां अधिक महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक मागंलिक पर्व यज्ञ में गृह प्रवेश करते समय, किसी भी नवीन कार्य के शुभारम्भ पर, विवाह आदि सस्कारों के समय इनका पाठ अवश्य करना चाहिए।

इतिहास साक्षी है कि विभिन्न अवसरों पर भी ऋषि मुनियों, देवताओं और महापुरुषों पर भी सकंट आया श्री विश्वकर्मा जी ने उनको नाना प्रकार के आयुध प्रदान किये और उन् का सकंट निवारण किया और उन्होंने विश्व विश्वकर्मा जी की पूजा आराधना और स्तुति की। श्री कृष्ण एवं भीम सवांद में उल्लेख आया है कि महर्षि मरिच, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलड, ऋतु, वरिष्ठ, आदि सप्तऋषियोंने ब्राह्मणत्व प्राप्त करने के लिए विश्वकर्मा जी की प्रार्थना की जो इस प्रकार है:

अस्माकम् दीयतां शीघ्रं भगवन् यज्ञ शीलताम्।.....कर्माणि तदा मयात्।

अर्थात् हे प्रभु! अब आप कृपा कर हमें यज्ञशीलता प्रदान कीजिए। हे महाविभों! यज्ञ करना, यज्ञ कराना, वेद पढ़ना कथा पढ़ाना, दान देना और दान लेना आदि षट्कर्मों का अधिकार दीजिए। महर्षियों के ये शब्द सुनकर श्री विश्वकर्मा जी ने उनको वरदान दिया और षट्कर्माधिकार की आज्ञा दी।

यह वर प्राप्त करके सप्तर्षियों ने शिल्पधिपति देवाधिदेव विश्वकर्मा जी की मुक्त कंठ से स्तुति की जो इस प्रकार है: "हे शिल्पाचार्य विश्वकर्मन् देव। हम आपके कृतज्ञ हैं। हम पर आपकी कृपा हो, हम आपको बारम्बार प्रमाण करते हैं एवं तत्वज्ञानी शिल्पाचार्य मनु, मय, त्वष्टा, दैवेज, शिल्पी आपके पुत्रों को भी हम प्रमाण करते हैं। इस संदर्भ में सप्तऋषि आगे कहते हैं- हे देव। आप की कृपा से हमें शुद्ध ब्राह्मणत्व प्राप्त हुआ है। अब हम अपने मार्ग पर जाते हैं ऐसा कहकर उन ऋषियों ने श्री विश्वकर्मा जी को बारम्बार प्रणाम किया, उनकी प्रदक्षिणा की इस प्रकार श्री विश्वकर्मा जी सप्तऋषियों के गुरु भी है।"

इन्द्र द्वारा विश्वकर्मा जी की पूजा ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्ण जन्म खण्ड के अध्याय 47 के राधा-कृष्ण संवाद में उल्लेख आता है कि देवाधिदेव इन्द्र ने भी कलाधिपति विश्वकर्मा जी की आराधना एंव स्तुति की जिसका विवरण इस प्रकार है: "श्री कृष्ण कहते हैं कि, हे परम सुंदरी। जिससे सभी प्रकार के पापों का विनाश होता है ऐसे पुण्य वृतान्त को सुन। हे सुन्दरी। जब विश्व रूप की ब्रह्म हत्या से मुक्त होकर इन्द्र पुनः स्वर्ग में आया तो सब देवों को अत्यंत आनंद हुआ। इन्द्र अपनी पुरी में पूरे सौ वर्ष के बाद आये थे उनके सत्कारार्थ विश्वकर्मा जी ने अमरावती नामक पुरी का निर्माण किया था जो कि नौ-नौ प्रकार की मणियों और रत्नों से सुसज्जित थी। इस अत्यंत सुंदर नगरी को देखकर इन्द्र अति प्रसन्न हुए। उन्होंने विश्वकर्मा जी का आदर सत्कार किया, उनकी पूजा की, अराधना की एंव उनकी स्तुति की। इन्द्र ने कहा, हे विश्वकर्मा। मुझे आशीर्वाद दो कि मैं इस पुरी में वास कर सकूँ।"

भगवान् श्री राम् और श्री विश्वकर्मा जी

इसके अलावा इतिहास साक्षी है वाल्मीकि रामायण के लकां काडं, सर्ग 125 श्लोक 20 अनुसार भगवान् राम ने भी विश्वकर्मा जी की अराधना एंव पूजा की। यह बात स्वयं श्री राम ने अपने मुख से कही, जिस समय लंका पर विजय प्राप्त करके महावीर आदि के साथ विमान में सीता सहित श्री राम अयोध्या आ रहे थे तो सीता से कहा कि: "हे सीता, जब हम तेरे वियोग में व्याकुल होकर वन-वन घूम रहे थे तो समुद्र तट स्थान पर चातुर्मास

किया था और विश्वकर्मा प्रभु की पूजा भी करते थे। उसी विश्वकर्मा की कृपा से हमें सामंगी प्राप्त हुई और, उसी की कृपा से यह सेतु हमने बांध कर लकां में प्रवेश किया और रावण का वध किया है।" यहां महाप्रभु विश्वकर्मा को ही महादेव कहा गया है। संत शिरोमणी तुलसी के रामचरितमानस मे भी श्री राम ने विश्वकर्मा पुत्रों नल और नील की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और उनके प्रति अपना आभार प्रकट किया।

द्वापर युग में मंवादी पांचों पुत्रों के सहित विश्वकर्मा की महादेव और द्वारका वासी श्री कृष्ण ने इस प्रकार पूजा की। कलियुग में भी विश्वकर्मा वंशीयों देवऋषि अर्थात् शिल्पी ब्राह्मणों की महाजन जनमेजय ने अपनी यज्ञ में यथोक्त पूजा की है। सारांश यह कि शिल्पी ब्राह्मण सर्वदा से ही सबके पूज्य रहे हैं। अतः यह पूर्ण रूपेण स्पष्ट है कि देवाधिदेव विश्वकर्मा जी समस्त शास्त्रों के ज्ञान, वेद वेदांग में परंपरागत, तप और स्वाध्याय के प्रेमी, इंद्रियों को जीते हुए, क्षमाशील ब्राह्मण कुमार थे। स्वयं भगवान होते हुए भी वे भगवान का अराधना करते थे। वे सर्वव्यापी, समर्थ और सर्व शक्तिमान थे। संसार की प्रत्येक वस्तु पर उनका पूर्ण अधिकार था। परतु किसी भी वस्तु में उनकी आसक्ति, ममता, स्पृहा और कामना नहीं थी। समय-समय पर उन्होंने सभी देवी देवताओं की सहायता की, अमोध, अस्त्र, शस्त्र, आयुव प्रदान किये, ऐश्वर्य के साधन उपलब्ध कराए, संसार का लालन-पालन किया। महान, शूरवीर, धीर, दयालु उदार, त्यागशील, निष्पाप, चतुर, दद्ध प्रतिज्ञ, सत्य प्रिय, बुद्धिमान विद्वान, जितेन्द्रीय और ज्ञानी थे। देवता, गन्धर्व, राक्षस, यक्ष, मनुष्य और नागों में कोई भी ऐसा नहीं जो उनकी कला का सामना कर सके। बल, वीर्य, तेज, शीघ्रता, लघुडस्तता, विशाद-हीनता और धैर्य ये सारे गुण सिवा विश्वकर्मा जी के और किसी में विद्वमान नहीं थे।

विश्वकर्मा संतान

जिस प्रकार विश्वकर्मा भगवान के अस्तित्व, समय, काल, जन्म, शिक्षा आदि विषयों को लेखकों ने जटिल एवं अस्पष्ट बना दिया है, ऐसे ही विश्वकर्मा जी की संतान के सबंधों के सबंध में विद्वानों के अलग-अलग मत है। विश्वकर्मा जी की संतान के सबंध में जिन प्रश्नों को जानने की जिजासा साधारण व्यक्ति के मन में उत्पन्न होती है। वे कुछ इस प्रकार हैं, जैसे विश्वकर्मा के कितने पुत्र थे? उनकी शिक्षा कैसे और कहां हुई? उन्होंने जीवन में क्या-क्या उपलब्धियाँ प्राप्त की? उनके शादी विवाह कौन-कौन से परिवार में हुए? समाज में उनकी क्या प्रतिष्ठा रही होगी? वे क्या-क्या काम करते थे? आदि बहुत से प्रश्न हैं, जिनकीबाबत आज का प्रबुद्ध व्याति जानकारी प्राप्त करना चाहेगा। आज के युग में कोई भी पढ़े लिखा व्यक्ति किसी के कुल और जाति की जानकारी बाद में चाहता है। पहले इस बात को जानना चाहेगा कि अमुक व्यक्ति ने संसार में आकर क्या प्राप्त किया और इस संसार को क्या दिया। अंतः भ्रमं पैदा करने वाले प्रश्नों को छोड़ कर हम उपर्युक्त प्रश्नों की ओर अधिक ध्यान देंगे।

स्कन्द पुराण में लिखा है कि: "विश्वकर्मा जी के पांच पुत्र थे, जिनके नाम मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी तथा दैवेज थे। विश्वकर्मा जी के पांचों पुत्र सृष्टि के प्रवर्तक थे। विश्वकर्मा जी के उपर्युक्त पाचों पुत्रों का नीचे अलग-अलग विवरण दिया जा रहा है, विवाह आदि का उल्लेख करें। विश्वकर्मा जी के पाचों पुत्र पिता समान प्रत्येक क्षेत्र में पांरगत एवं प्रवीण थे। तप, त्याग, तपस्या के कारण ही इनको महर्षि की उपाधि प्राप्त थी। महाप्रभु विश्वकर्मा ने अपने सद्योत्जातादि पंच मुखों से मनु आदि पांच देवों को उत्पन्न किया। इनके पांच पुत्र थे मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और दैवेज। दैवेज को विश्वज्ञ भी कहते हैं। क्रमशः ये सानग, सनातन, अहभूत, प्रयत्न और सुपर्ण के नाम से भी जाने जाते हैं।" जिनका विवरण कुछ इस प्रकार है।

• श्री विश्वकर्मा सूक्त

ऋग्वेद के दशम् मण्डल के सूक्त 81 व 82 दोनों सूक्त विश्वकर्मा सूक्त है। इनमें प्रत्येक में सात-सात मंत्र हैं। इन सब मंत्रों के ऋषि और देवता भुवनपुत्र विश्वकर्मा ही हैं। ये ही चौदह मंत्र यजुर्वेद अध्याय के 17वें में मंत्र 17 से 32 तक आते हैं, जिसमें से केवल दो मंत्र 24वां और 32वां अधिक महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक मागंलिक पर्व यज्ञ में गृह प्रवेश करते समय, किसी भी नवीन कार्य के शुभारम्भ पर, विवाह आदि स्त्रियों के समय इनका पाठ अवश्य करना चाहिए।

ऋग्वेद दशम मण्डल सूक्त 81

य इमा विश्वा भुवानानि जुहृषिर्हीता न्यसीदत् पिता नः ।
स आशिषा द्रविणमिच्छमानः प्रथमच्छदवरां आविवेश ॥1॥
किं स्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं कतमत्स्वित्क्यासीत् ।
यतोऽभ्यु जनयान्विश्वकर्मा वि द्यामौर्णोन्महिना विश्वक्षाः ॥2॥
विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुख विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एक ॥3॥
किं स्विंदनं क उ स बृक्ष आस यतो द्यावापृथिवि निष्टतक्षुः ।
मनीषिणो मनसा पृच्छतेदु तद्यदध्यतिष्ठद् भुमानानि धारयन् ॥4॥
या ते धामानि परमाणि यावमा या मध्यमा विश्वकर्मभुतेमा ।
शिक्षा सखिभ्यो हविषि स्वधावः स्वयं यजस्व तन्त्रं बृथानः ॥5॥
विश्वकर्मन् हविषा वातृथानः स्वयं यजस्वपृथिवीमुत धाम् ।
मुहमन्त्वन्ये अभितो जनास इहास्माकं मधवा सूरिरस्तु ॥6॥
वाचस्पति विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजे अद्या हुवेम ।
स नो विश्वानि हवानानि जोषद् विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा ॥7॥

ऋग्वेद दशम मण्डल सूक्त 82

चक्षुषः पिता मनसा हि धीरो घृतमेने अजनन्भम्नमाने ।
यद्रेदन्ता अद्रष्टव्यं पूर्व आदिद् द्यावापृथिवी अप्रथेताम् ॥1॥
विश्वकर्मा विमना आदिहाया धाता विधाता परमोत सन्छक्।
तेषामिष्टनि समिया मदन्ति यत्रा सप्त पर एकमाहुः ॥2॥
यो नः पिता जनिया यो विधाता धामानि वेद भुवानानि विश्वा ।
यो देवानां नामधा एक एवं तं सप्रश्नम्भुवना यन्त्यन्या ॥3॥
त आयजन्त द्रविणं समस्मा ऋषयः पूर्वं जरितारों न भूना ।
असूर्तं सूर्तं रजसि निषते ये भूतानि समकृण्वन्निमानी ॥4॥
परो दिवा पर एना पृथिव्या परो देवेभिरसुरैर्यदस्ति ।
कं स्विद् गर्भं प्रथमं दध्य आपो यत्र देवाः समपश्चन्त पूर्वं ॥5॥
तमिद्गर्भं प्रथमं दध्य आपो यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे ।
अजस्य नाभावध्योक्मर्पितं यस्मिन्विश्वानि भुवानि तस्थुः ॥6॥
न तं विदाथ य इमा जजानाऽन्यद्युष्माकमन्तरं बभूव ।

नीहारेण प्रावृता जल्प्या चाऽसुतृप उकथाशासश्चरन्ति ॥७॥

यजुर्वेद के 17वें अध्याय का 24वां महत्वपूर्ण मंत्र

विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारभिन्द्रमकृणोरवध्यम् ।
तस्मै विसः समनमन्तं पर्वीरयमुग्रो विहव्या यथाऽसत् ॥२४॥

यजुर्वेद के 17वें अध्याय का 32वां महत्वपूर्ण मंत्र

विश्वकर्मा हाजनिष्ट देव आदिद् गन्धर्वो अभवद् द्वितीयः ।

तृतीयः पिता जानितौषधीनामपां गर्भ व्यदधात्पुरुत्वा ॥३२॥



• विश्वकर्मा प्रश्नावली

निर्माण के देवता विश्वकर्मा जी के विषय में अनेकों भाँतियां हैं, बहुत ये विद्वान विश्वकर्मा इस नाम को एक उपाधि मानते हैं, क्योंकि सस्कृत साहित्य में वि समकालीन कई विश्वकर्माओं का उल्लेख मिलता है।

निःसदेह यह विषय निर्भय नहीं है। हम स्वीकार करते हैं प्रभास पुत्र विश्वकर्मा, भुवन पुत्र विश्वकर्मा तता त्वष्टापुत्र विश्वकर्मा आदि अनेकों विश्वकर्मा आदि अनेकों विश्वकर्मा हुए हैं। यह अनुसंधान का विषय है। सम्पूर्ण सस्कृत साहित्य का अवलोकन किया जाय, विदेशो में भी खोज की जाय, क्योंकि यूरोपिय लोग भी लिश्वकर्मा को “फॅंडर ऑफ आर्ट्स”(father of Arts) मानते हैं यह उत्कृष्ट विद्वानों का महान कार्य है, परन्तु अब तक की खोज के आधार पर जो निष्कर्ष सम्मुख आया है उसी के आधार पर कहा जा सकता है कि मूल पुरुष विश्वकर्मा के पश्चात् ही उपाधि प्रचलित होती है। प्रारंभ से नहीं। विश्वकर्मा ही नहीं इन्द्र, व्यास, ब्रह्मा, जनक, धन्वन्तरि आदि अनेकों ऐसी उत्कृष्ट विभूतियँ उपाधियों के रूप में प्रचलित हैं, परन्तु इनका मूल पुरुष अवश्य है। जैसे देवराज नामक इन्द्र द्वारा जब विश्वकर्मा पुत्रों की हत्या करके ब्रह्महत्या का पता लगा तो ऋषियों और देवताओं ने मिलकर देवराज इन्द्र को पदच्युत कर इन्द्र को गद्दी पर आसीन कर दिया, इसी प्रकार सीताजी को जिस राजा जनक की पुत्री माना जाता है उसका नाम राजा सीरध्वज था। व्यास और ब्रह्मा उपाधि धारकों के लिये भी मूल पुरुष की खोज की जा सकती हैं।

हमारा उद्देश्य तो यहां विश्वकर्मा का परिचय कराना है, माना कई विश्वकर्मा हुए हैं और आगे चलकर विश्वकर्मा के गुणों को धारण करने वाले ऋष्ठ पुरुष को विश्वकर्मा की उपाधि से अलंकृत किया जाने लगा हो तो बात भी मानी जानी चाहिये। शास्त्र में भी लिखा है:

स्थपति स्थापनाईः स्यात् सर्वशास्त्रं विशारदः । न हीनागडों अतिरिक्तगडों धार्मिकस्तु दयापरः ॥१॥

अमात्सर्यो असूयश्चातन्द्रियतस्त्वभिजातवान् । गणितज्ञः पुराणज्ञ सत्यवादी जितेन्द्रियः ॥१२॥

गुरुभक्ता सदाहष्टा: स्थपत्याजानुगाः सदा । तेषाम्ब स्तपत्याख्यो विश्वकर्मेति सस्मृतः ॥१३॥

अर्थः जो शिल्पी निर्माण कला में सिध्दहस्त सन्पूर्ण शास्त्रों का पूर्ण पंडित हो जिसके शरीर का कोई अवयव न अधिक हो न कम हो, दयालु और धर्मात्मा तथा कुलीन हो ॥११॥ जो अहंकार करनेवाले ईर्ष्यालु और प्रमादी न हो, गणित विद्वा का पूर्ण पंडित हों, वेदों के व्याख्यान रूप ब्रह्मण ग्रथों और इतिहास में पारंगत हो, सत्यवादी तथा इन्द्रियों को जीतने वाला आज्ञाकारी हो इस प्रकार के गुणों से युक्त रचियता को विश्वकर्मा कहते हैं ॥१३॥ मयमत्म् के कथन से स्पष्ट होता है कि कालान्तर में विश्वकर्मा एक उपाधि प्रचलित हो गई थी, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि विश्वकर्मा नाम का कोई मूल पुरुष या पुरुष हुआ ही न हो !विव्दानों में मत भेद इस पर भी है कि मूल पुरुष विश्वकर्मा कौन से हुए? कुछेक विव्दान अंगिरा पुत्र सुधन्वा को आदि विश्वकर्मा मानते हैं तो कुछ भुवन पुत्र भौवन विश्वकर्मा को आदि विश्वकर्मा मानते हैं, परन्तु महाभारत के खिल भाग सहित सभी पुराणकार प्रभास पुत्र विश्वकर्मा को आदि विश्वकर्मा मानते हैं, परन्तु महाभारत के खिल भाग सहित सभी पुराणकार प्रभास पुत्र विश्वकर्मा को आदि विश्वकर्मा मानते हैं। स्कंद पुराण प्रभास खण्ड के निम्न श्लोक की भाँति किंचित पाठ भेद से सभी पुराणों में यह श्लोक मिलता है:

**बृहस्पतेस्तु भगिनी भुवना ब्रह्मवादिनी । प्रभासस्य तस्य भार्या बसूनामष्टमस्य च । विश्वकर्मा
सुतस्तस्यशिल्पकर्ता प्रजापतिः ॥१६॥**

अर्थः महर्षि अंगिरा कं ज्येष्ठ पुत्र बृहस्पति की बहन भुवना जो ब्रह्मविद्या जानने वाली थी वह अष्टम् वसु महर्षि प्रभात की पत्नी बनी और उसमें सम्पूर्ण शिल्प विद्या के ज्ञाता प्रजापति विश्वकर्मा का जन्म हुआ। पुराणों में कहीं योगसिद्धा, वरस्त्री नाम भी बृहस्पति की बहन का लिखा है ऐसा पाठभेद अवश्य है ।

आप आदि विश्वकर्मा किसे मानते हैं?

हम प्रभात पुत्र भुवना माता से उत्पन विश्वकर्मा को ही आदि या मूल विश्वकर्मा मानते हैं।

यह बात आप किस आधार पर कहते हैं?

हजारों वर्ष पहले महाराज भोज देव ने जो सस्कृत के प्रकांड पंडित थे वास्तु विद्या का ग्रंथ “समरागंण सूत्रधार ” लिखा था उसमें लेखक ने अपना इष्टदेव भगवान विष्वकर्मा को माना है उन्होने ग्रंथ के आदि में अपने इष्ट का स्वतवन करते हुए लिखा है:

तदेशः त्रिदशाचार्य सर्व सिद्धिं प्रवर्तकः । सुतः प्रभासस्य विभो स्वस्त्रीयश्च बृहस्पतेः ॥

अर्थः शिल्प शास्त्र का कर्ता वह ईश विश्वकर्मा देवताओं का आचार्य है, सम्पूर्ण सिद्धियों का आचार्य है, वह प्रभास ऋषि का पुत्र है और महर्षि अंगिरा के ज्येष्ठ पुत्र देवगुरु बृहस्पति का भानजा है। अर्थात् अंगिरा का दौहितृ (दोहित) है। अंगिरा कुल से विश्वकर्मा का संबंध तो सभी विद्वान स्वीकार करते हैं। भोजदेव के प्रमाण में किसी को शंका यों नहीं होनी चाहिये कि आधुनिक काल के महाविद्वान महर्षि दयानन्दने लिखा है- “महाभारत के पश्चात हजारों वर्ष व्यतीत होने पर झोज को वेदों का ज्ञान था। भोजकाल मे ही शिल्पयों ने काठ का घोड़ा बनाया था। जो एक घन्टे मे सत्ताईस कोस चलता था। ऐसा ही एक पखां बनाया था बिना मनुष्य के चलाये पुष्कल वायु देता था। यदि ये पदार्थ आज तक बने रहते तो अंग्रेजों को इतना गर्व नहीं होता। भोजकाल में किसी ने वेद विरुद्ध पुराण खड़ा किया था तो राजा भोज ने उसके हाथ कटवा दिये थे। हमारा कथन यह है कि जब हजारों वर्ष पहले तक आदि विश्वकर्मा को महर्षि प्रभाव का पुत्र मानने का प्रचलन

था या परम्परा थी तो अब इस काल में शंका क्यों की जाती है ? विश्वकर्मा कोई आधुनिक काल का देवता तो है नहीं ये तो वैदिक कालीन है। ऋग्वेद जो विश्व का सबसे प्रचीन ग्रंथ माना जाता है उसमे चौदह ऋताओं वाला विश्वकर्मा सूक्त है। यदिपुराणों की वेदव्यास की रचना माना जाये तो पद्मपुराण भू खण्ड के इन शब्दों पर विचार करें: **सर्व देवेषु यत्सूक्तं पठ्यते विश्वकर्मणः। चतुर्दशा वृत्तेनैनेऽयमेत्यादिना यजेत् ॥१॥** अर्थात् सभी देवगण विश्वकर्मा संबंधी जिस सूक्त का पाठ कर यजन करते हैं वह 8 सूक्त यहमाभुवनानि मंत्र से आरंभ होता है और ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 82 के सातवें मंत्र तक 14 ऋचाओं में पूर्ण होता है। यास्काचार्य ने भी निरक्त मे विश्वकर्मा के सार्वभौम यज्ञ का वर्णन करते हुए लिखा है: **तदभिवादिनी एषा ऋक् भवति । यहमा विश्वा भुवनानि जुहवत इति ।** इस कथन में भी ऋग्वेद के यहमा शब्दों से आरंभ होने वाली ऋचा का उल्लेख है जिसके द्वारा आरंभ करके सूक्त के चौदहों मंत्रों से यज्ञ सम्पन्न हुआ। चौदह मंत्रों का यह सूक्त और इसका देवता तथा ऋषि तीनों ही विश्वकर्मा नाम से ऋग्वेद में उल्लिखित है। हजारों-हजारों वर्षों के ये शास्त्रीय प्रमाण सिद्ध करते हैं कि निर्माण के देवता विश्वकर्मा की पूजा के प्रसंग में अत्यतं प्राचीन काल से यजन याजन होते रहे हैं। भारतीय इतिहास में इतनी प्राचीन वैदिक पूजा पद्धति और किसी देवता की नहीं मिलती।

सूक्त का क्या अर्थ है और वेदों में कितने सूक्त होते हैं?

सूक्त शब्द सू + उक्त इस प्रकार बना है सू का उर्थ है सुन्दर ढंग से या भली प्रकार उक्त का अर्थ है कहना या बताना जिस मंत्र समूह में किसी विषय को भली प्रकार कहा जाय अर्थात् सुन्दर अभिव्यक्ति को सूक्त कहते हैं। वेदों में सैकड़ो ही सूक्त हैं जैसे इन्द्र सूक्त, अग्नि सूक्त इसी प्रकार विश्वकर्मा सूक्त आदि हैं।

यह बात तो समझ में आ गई जब प्रभात पुत्र विश्वकर्मा की आदि विश्वकर्मा के रूप में हजारों वर्ष पूर्व से मान्यता रही है तो यह विवाद का विषय नहीं रहा। परन्तु एक शकां नए सिरे से उभरकर सामने आई है, आपने बताया विश्वकर्मा सूक्त का मंत्र द्रष्टा ऋषि भौवन है जिसे दूसरे विद्वान् भुवन पुत्र विश्वकर्मा बताते हैं। प्रभास पुत्र विश्वकर्मा के साथ तो भौवन शब्द कैसे सिद्ध होगा या फिर वेदमंत्र द्रष्टा ऋषि दूसरा विश्वकर्मा मानना पड़ेगा?

हमने जैसा कि पहले बताया है विश्वकर्मा का विषय गहन अनुसधान का फिर भी भौवन शब्द का निराकरण वेद के भाष्य कर्ता शतायु विद्वान् श्रीपाद दामोदर सातवलाकर ने अपनी लिखी पुस्तक “विश्वकर्मा ऋषि का तत्वज्ञान” में अनेकों विद्वानों के मत से इस प्रकार किया है कि प्रभात पुत्र विश्वकर्मा की माता जो देवगुरु बृहस्पति की बहन है उसका नाम भुवना होने के कागण पुत्रका नाम भौवन विश्वकर्मा माना गया है, और यही भौवन विश्वकर्मा वैदमंत्र ऋषि है। भुवना शब्द भुवन से बना है जिसका अर्थ हैं लोक। तीनों भुवनों (लोकों) मे जिसकी ख्याति हो उसे भुवना कहते हैं।

आपने विश्वकर्मा को सभी देवताओं का आचार्य बताया है। हमें यह मान्यता पक्षपातपूर्ण लगती है, स्पष्टीकरण कीजिये।

हमनें नहीं, महाराज भोजदेव ने अपने ग्रन्थ ‘समरांगण सूत्रधार’ में उन्हें तदेश **त्रिदशाचार्य सरेव सिद्धी प्रवर्तकः** अर्थात् सम्पूर्ण सिद्धियों का जनक और देवताओं का आचार्य माना है। अष्ट सिद्धी और नव निधिंया मानी गई है। आज भी जिस समाज ऐर राष्ट के नागरिकों के शिल्प विज्ञान का ज्ञान है सम्पूर्ण सिद्धियों मौजुद है वे ही

देवताओं का आचार्य है। भोजदेव ने ही क्यों पुराणों में विश्वकर्मा जी को सर्व देव मय माना हैं। स्कन्द पुराण नागर खण्ड में लिखा है: **विश्वकर्माभवत्पूर्व ब्रह्म मरस्त्वपरात्नः**। अर्थात् पूर्व काल में ब्रह्मा जी और विश्वकर्मा जी का एक ही शरीर था। यहां विश्वकर्मा को ब्रह्मा का स्वरूप माना है। वायु पुराण में आता है 'विष्णुश्च'

विश्वकर्माचनभिद्येतेपरस्परम्' विष्णु भगवान और विश्वकर्मा में कोई भेद नहीं मानना चाहिये। ज्योतिष के प्रसिद्ध ग्रंथ बृद्धवाशिष्ठ में लिखा है माघे शुक्ले त्रयोदश्यांदिवा पुण्ये पुनर्वसौ। अष्टा विंशति में जातः**विश्वकर्मा भवनि चा** अर्थात् शिवाजी महाराज अपनी पत्नी पार्वती को कह रहे हैं माघ के शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी के दिन पुनर्वस नामक नक्षत्र के अट्ठाईसवें अशं में विश्वकर्मा स्वरूप में उत्पन्न हुआ। यहां शिव अपने को विश्वकर्मा स्वरूप मे मान रहे हैं। पुराणों मे स्पष्ट उल्लेख है 'कृष्णश्च विश्वकर्मा च न भिद्येते परस्परम्।' अर्थात् भगवान कृष्ण और विश्वकर्मा में कोई भेद नहीं है। पुराणों के इन प्रमाणों से सभी शिरोमणि देवगण ब्रह्मा, विष्णु, शिव और भगवान कृष्ण तक विश्वकर्मा स्वरूप मे अपने को स्वीकार करते हैं। देवियों मे विद्या की अधिष्ठात्री देवी प्रथम वन्दनीय मानी जाती है उसके लिये भी पुराणकार कहते हैं त्वाष्ट्ररूपा सरस्वती सर्व देवी भी विश्वकर्मा जी का ही स्वरूप है। पुराण तो वेदाव्यास जी महाराज के लिखे माने जाते हैं। जब वेदाव्यास जी सम्पूर्ण देवी देवताओं को विश्वकर्मा स्वरूप मानते हैं तो विश्वकर्म जी को देवताओं का आचार्य मानने में किसे सन्देह हो सकता है?

जैसा कि आपने भी माना है सभी विद्वान ऐर शास्त्रकार विश्वकर्मा जी कों अंगिरा ऋषि कुल से जोड़ते हैं परन्तु अंगिरा ऋषि को तो ब्राह्मण मात्र गोत्रकार ऋषि मानते हैं फिर आपका ही विशेष लगाव कैसे माना जाय?

निःसंदेह महाभारत में लिखा है भार्गवांगिरसो लोके संताल लक्षणौ इसका तात्पर्य है पृथ्वी पर सभी मनुष्य भृगु और अंगिरा की संतान है इसलिये इन ऋषियों पर सभी का अधिकार माना जा सकता है। परन्तु विश्वकर्मा वंशजों का तो अंगिरा से सीधा ही संबंध है। विश्वकर्मा ब्राह्मण लोग अर्थर्ववेद हैं, अर्थर्ववेद का जान परमात्मा ने अंगिरा ऋषि द्वारा ही ब्रह्मा और दूसरे ऋषियों तक पहुचाया है, सृष्टी के आरंभ में चार ऋषियों द्वारा ही चारों वेदों का ज्ञान मानव मात्र के लिये दिया, ऐसा वेदों की मान्यता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामदेव और अर्थर्ववेद का ज्ञान क्रमः अग्नि, वायु आदित्य और ऋषियों द्वारा ही मानव जाति को प्राप्त हुआ। इस बात को वेदों के सभी विद्वान स्वीकार करते हैं, चारों वेदों के चार ही उपदेव हैं सस्कृत साहित्य के ग्रंथ चरणव्युह आदि में स्पष्ट उल्लेख हैं।

आयुर्वेदश्चिकित्सा शास्त्रंऋग्वेदस्योपवेदः। धनु वेदो युद्ध शास्त्रंयजुर्वेदस्योपवेदः। गंधर्ववेद सर्गीत शास्त्रं सामवेदस्योपवेदः। अर्थव्दो (स्थापत्यवेदो) विश्वकर्मादि शिल्प शास्त्रं अर्थर्ववेदस्योपवेदः ॥

अर्थः ऋग्वेद का उण्वेद आयुर्वेद है जिसे चिकित्सा शास्त्र कहते हैं। यजुर्वेद का उपदेव धनुर्वेद है जिसे सर्गीत शास्त्र कहते हैं और अर्थर्ववेद का उपदेव अर्थर्ववेद है जिसके अन्तर्गत विश्वकर्मा का सम्पूर्ण शिल्प शास्त्र आता है। इस प्रकार हम वंशावली के साथ-साथ अर्थर्ववेदी होने सीधे अंगिरा ऋषि से जुड़ जाते हैं।

गुरुभक्ता सदाहष्टा: स्थपत्याजानुगाः सदा । तेषाम्व स्तपत्याख्यो विश्वकर्मेति सस्मृतः॥३॥

अर्थः जो शिल्पी निर्माण कला में सिध्दहस्त सन्पूर्ण शास्त्रों का पूर्ण पंडित हो जिसके शरीर का कोई अवयव न अधिक हो न कम हो, दयालु और धर्मात्मा तथा कुलीन हो ॥३॥। जो अहंकार करनेवाले ईर्ष्यालु और प्रमादी न हो, गणित विद्वा का पूर्ण पंडित हों, वेदों के व्याख्यान रूप ब्रह्मण ग्रथों और इतिहास में पारंगत हो, सत्यवादी तथा इन्द्रियों को जीतने वाला आज्ञाकारी हो इस प्रकार के गुणों से युक्त रचियता को विश्वकर्मा कहते हैं ॥३॥। मयमतम् के कथन से स्पष्ट होता है कि कालान्तर में विश्वकर्मा एक उपाधि प्रचलित हो गई थी, परन्तु इसका

यह अर्थ नहीं है कि विश्वकर्मा नाम का कोई मूल पुरुष या पुरुष हुआ ही न हो !विव्दानों में मत भेद इस पर भी है कि मूल पुरुष विश्वकर्मा कौन से हुए ? कुछेक विव्दान अंगिरा पुत्र सुधन्वा को आदि विश्वकर्मा मानते हैं तो कुछ भुवन पुत्र भौवन विश्वकर्मा को आदि विश्वकर्मा मानते हैं, परन्तु महाभारत के खिल भाग सहित सभी पुराणकार प्रभास पुत्र विश्वकर्मा को आदि विश्वकर्मा मानते हैं, परन्तु महाभारत के खिल भाग सहित सभी पुराणकार प्रभास पुत्र विश्वकर्मा को आदि विश्वकर्मा मानते हैं। स्कंद पुराण प्रभास खण्ड के निम्न श्लोक की भाँति किंचित पाठ भेद से सभी पुराणों में यह श्लोक मिलता है:

**बृहस्पतेस्तु भगिनी भुवना ब्रम्हवादिनी । प्रभासस्य तस्य भार्या बसूनामष्टमस्य च । विश्वकर्मा
सुतस्तस्यशिल्पकर्ता प्रजापतिः ॥१६॥**

अर्थः महर्षि अंगिरा कं ज्येष्ठ पुत्र बृहस्पति की बहन भुवना जो ब्रम्हविद्या जानने वाली थी वह अष्टम् वसु महर्षि प्रभात की पत्नी बनी और उसमें सम्पूर्ण शिल्प विद्या के जाता प्रजापति विश्वकर्मा का जन्म हुआ। पुराणों में कहीं योगसिद्धा, वरस्त्री नाम भी बृहस्पति की बहन का लिखा है ऐसा पाठभेद अवश्य है।

आप आदि विश्वकर्मा किसे मानते हैं?

हम प्रभात पुत्र भुवना माता से उत्पन विश्वकर्मा को ही आदि या मूल विश्वकर्मा मानते हैं।

यह बात आप किस आधार पर कहते हैं?

हजारों वर्ष पहले महाराज भोज देव ने जो सस्कृत के प्रकांड पडिंत थे वास्तु विद्या का ग्रंथ “समरागंण सूत्रधार” लिखा था उसमें लेखक ने अपना इष्टदेव भगवान विष्वकर्मा को माना है उन्होने ग्रंथ के आदि में अपने इष्ट का स्वतवन करते हुए लिखा है:

तदेशः त्रिदशाचार्य सर्व सिद्धिं प्रवर्तकः । सुतः प्रभासस्य विभो स्वस्त्रीयश्च बृहस्पतेः ॥

अर्थः शिल्प शास्त्र का कर्ता वह ईश विश्वकर्मा देवताओं का आचार्य है, सम्पूर्ण सिद्धियों का आचार्य है, वह प्रभास ऋषि का पुत्र है और महर्षि अंगिरा के ज्येष्ठ पुत्र देवगुरु बृहस्पति का भानजा है। अर्थात अंगिरा का दौहितृ (दोहित) है। अगिरा कुल से विश्वकर्मा का संबंध तो सभी विद्वान स्वीकार करते हैं। भोजदेव के प्रमाण में किसी को शंका यों नहीं होनी चाहिये कि आधुनिक काल के महाविद्वान महर्षि दयानन्दने लिखा है- “महाभारत के पश्चात हजारों वर्ष व्यतीत होने पर डोज को वेदों का ज्ञान था। भोजकाल मे ही शिल्पियों ने काठ का घोड़ा बनाया था। जो एक घन्टे मे सत्ताईस कोस चलता था। ऐसा ही एक पखां बनाया था बिना मनुष्य के चलाये पुष्कल वायु देता था। यदि ये पदार्थ आज तक बने रहते तो अंग्रेजों को इतना गर्व नहीं होता। भोजकाल में किसी ने वेद विरुद्ध पुराण खड़ा किया था तो राजा भोज ने उसके हाथ कटवा दिये थे। हमारा कथन यह है कि जब हजारों वर्ष पहले तक आदि विश्वकर्मा को महर्षि प्रभाव का पुत्र मानने का प्रचलन था या परम्परा थी तो अब इस काल में शंका क्यों की जाती है ? विश्वकर्मा कोई आधुनिक काल का देवता तो है नहीं ये तो वैदिक कालीन है। ऋग्वेद जो विश्व का सबसे प्रचीन ग्रंथ माना जाता है उसमे चौदह ऋताओं वाला विश्वकर्मा सूक्त है। यदिपुराणों की वेदव्यास की रचना माना जाये तो पद्मपुराण भू खण्ड के इन शब्दों पर विचार करें: सर्व देवेषु यत्सूक्तं पद्यते विश्वकर्मणः। चतुर्दशा वृत्तेनैनं यडमेत्यादिना यजेत् ॥२॥ अर्थात सभी देवगणं विश्वकर्मा संबंधी जिस सूक्त का पाठ कर यजन करते हैं वह ४ सूक्त यडमाभुवनानि मंत्र से आरंभ होता है और ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 82 के सातवें मंत्रं तक 14 ऋचाओं में पूर्ण होता है। यास्काचार्य ने भी निरक्त मे विश्वकर्मा के सार्वभौम यज्ञ का वर्णन करते हुए लिखा है: तदभिवादिनी एषा ऋक् भवति । यडमा विश्वा भुवनानि जुहवत इति । इस कथन में भी

ऋग्वेद के यहमा शब्दों से आरंभ होने वाती ऋचा का उल्लेख है जिसके द्वारा आरंभ करके सूक्त के चौदहों मत्रों से यज्ञ सम्पन्न हुआ। चौदह मत्रों का यह सूक्त और इसका देवता तथा ऋषि तीनों ही विश्वकर्मा नाम से ऋग्वेद में उल्लिखित है। हजारों-हजारों वर्षों के ये शास्त्रीय प्रमाण सिद्ध करते हैं कि निर्माण के देवता विश्वकर्मा की पूजा के प्रसंग में अर्थात् प्राचीन काल से यज्ञ याज्ञ होते रहे हैं। भारतीय इतिहास में इतनी प्राचीन वैदिक पूजा पद्धती और किसी देवता की नहीं मिलती।

सूक्त का क्या अर्थ है और वेदों में कितने सूक्त होते हैं?

सूक्त शब्द सू + उक्त इस प्रकार बना है सू का उर्थ है सुन्दर ढंग से या भली प्रकार उक्त का अर्थ है कहना या बताना जिस मंत्र समूह में किसी विषय को भली प्रकार कहा जाय अर्थात् सुन्दर अभिव्यक्ति को सूक्त कहते हैं। वेदों में सैकड़ों ही सूक्त हैं जैसे इन्द्र सूक्त, अग्नि सूक्त इसी प्रकार विश्वकर्मा सूक्त आदि हैं।

यह बात तो समझ में आ गई जब प्रभात पुत्र विश्वकर्मा की आदि विश्वकर्मा के रूप में हजारों वर्ष पूर्व से मान्यता रही है तो यह विवाद का विषय नहीं रहा। परन्तु एक शकां नए सिरे से उभरकर सामने आई है, आपने बताया विश्वकर्मा सूक्त का मंत्र द्रष्टा ऋषि भौवन है जिसे दूसरे विद्वान् भुवन पुत्र विश्वकर्मा बताते हैं। प्रभास पुत्र विश्वकर्मा के साथ तो भौवन शब्द कैसे सिद्ध होगा या फिर वेदमंत्र द्रष्टा ऋषि दूसरा विश्वकर्मा मानना पड़ेगा?

हमने जैसा कि पहले बताया है विश्वकर्मा का विषय गहन अनुसधान का फिर भी भौवन शब्द का निराकरण वेद के भाष्य कर्ता शतायु विद्वान् श्रीपाद दामोदर सातवलाकर ने अपनी लिखी पुस्तक “विश्वकर्मा ऋषि का तत्वज्ञान” में अनेकों विद्वानों के मत से इस प्रकार किया है कि प्रभात पुत्र विश्वकर्मा की माता जो देवगुरु बृहस्पति की बहन है उसका नाम भुवना होने के कागण पुत्रका नाम भौवन विश्वकर्मा माना गया है, और यही भौवन विश्वकर्मा वैदमंत्र ऋषि है। भुवना शब्द भुवन से बना है जिसका अर्थ हैं लोक। तीनों भुवनों (लोकों) में जिसकी ख्याति हो उसे भुवना कहते हैं।

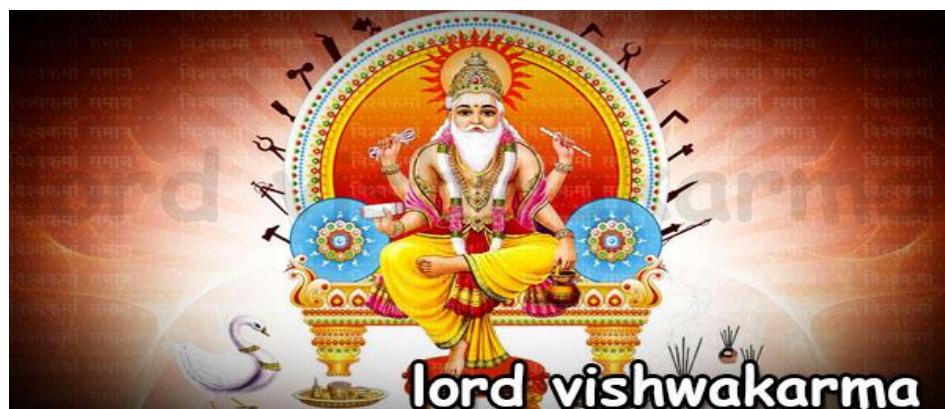
आपने विश्वकर्मा को सभी देवताओं का आचार्य बताया है। हमें यह मान्यता पक्षपातपूर्ण लगती है, स्पष्टीकरण कीजिये।

हमनें नहीं, महाराज भोजदेव ने अपने ग्रन्थ ‘समरांगण सूत्रधार’ में उन्हें तदेश विदशाचार्य सरेव सिद्धी प्रवर्तकः अर्थात् सम्पूर्ण सिद्धियों का जनक और देवताओं का आचार्य माना है। अष्ट सिद्धी और नव निधिंया मानी गई हैं। आज भी जिस समाज ऐर राष्ट के नागरिकों के शिल्प विज्ञान का ज्ञान है सम्पूर्ण सिद्धियों मौजुद है वे ही देवताओं का आचार्य हैं। भोजदेव ने ही क्यों पुराणों में विश्वकर्मा जी को सर्व देव मय माना हैं। स्कन्द पुराण नागर खण्ड में लिखा है: विश्वकर्माऽभवत्पूर्व ब्रह्मरस्त्वपरात्। अर्थात् पूर्व काल में ब्रह्मा जी और विश्वकर्मा जी का एक ही शरीर था। यहां विश्वकर्मा को ब्रह्मा का स्वरूप माना है। वायु पुराण में आता है 'विष्णुश्च विश्वकर्माचनभिद्येतेपरस्परम्' विष्णु भगवान् और विश्वकर्मा में कोई भेद नहीं मानना चाहिये। ज्योतिष के प्रसिद्ध ग्रंथ बृद्धवाशिष्ठ में लिखा है माये शुक्ले त्रयोदश्यांदिवा पुण्ये पुनर्वसौ। अष्ट विंशति में जातःविश्वकर्मा भवनि च। अर्थात् शिवाजी महाराज अपनी पत्नी पार्वती को कह रहे हैं माघ के शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी के दिन पुनर्वस नामक नक्षत्र के अट्ठाईसवें अशं में विश्वकर्मा स्वरूप में उत्पन्न हुआ। यहां शिव अपने को विश्वकर्मा स्वरूप में मान रहे हैं। पुराणों में

स्पष्ट उल्लेख है 'कृष्णश्च विश्वकर्मा च न भिद्येते परस्परम्।' अर्थात् भगवान् कृष्ण और विश्वकर्मा में कोई भेद नहीं है। पुराणों के इन प्रमाणों से सभी शिरोमणि देवगण ब्रह्मा, विष्णु, शिव और भगवान् कृष्ण तक विश्वकर्मा स्वरूप में अपने को स्वीकार करते हैं। देवियों में विद्या की अधिष्ठात्री देवी प्रथम वन्दनीय मानी जाती है उसके लिये भी पुराणकार कहते हैं त्वाष्ट्ररूपा सरस्वती सर्व देवी भी विश्वकर्मा जी का ही स्वरूप है पुराण तो वेदाव्यास जी महाराज के लिखे माने जाते हैं। जब वेदाव्यास जी सम्पूर्ण देवी देवताओं को विश्वकर्मा स्वरूप मानते हैं तो विश्वकर्म जी को देवताओं का आचार्य मानने में किसे सन्देह हो सकता है?

जैसा कि आपने भी माना है सभी विद्वान् ऐर शास्त्रकार विश्वकर्मा जी कों अगिरा ऋषि कुल से जोड़ते हैं परन्तु अगिरा ऋषि को तो ब्राह्मण मात्र गोत्रकार थि मानते हैं फिर आपका ही विशेष लगाव कैसे माना जाय?

निःसंदेह महाभारत में लिखा है भार्गवांगिरसो लोके संताल लक्षणौ इसका तात्पर्य है पृथ्वी पर सभी मनुष्य भृगु और अंगिरा की संतान है इसलिये इन ऋषियों पर सभी का अधिकार माना जा सकता है। परन्तु विश्वकर्मा वंशजों का तो अंगिरा से सीधा ही संबंध है। विश्वकर्मा ब्राह्मण लोग अर्थर्ववेद हैं, अर्थर्ववेद का ज्ञान परमात्मा ने अंगिरा ऋषि द्वारा ही ब्रह्मा और दूसरे ऋषियों तक पहुंचाया है, सृष्टि के आरंभ में चार ऋषियों द्वारा ही चारों वेदों का ज्ञान मानव मात्र के लिये दिया, ऐसा वेदों की मान्यता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अर्थर्ववेद का ज्ञान क्रमः अग्नि, वायु आदित्य और ऋषियों द्वारा ही मानव जाति को प्राप्त हुआ। इस बात को वेदों के सभी विद्वान् स्वीकार करते हैं, चारों वेदों के चार ही उपदेव हैं सस्कृत साहित्य के ग्रंथ चरणव्युह आदि में स्पष्ट उल्लेख हैं: आयुर्वेदश्चिकित्सा शास्त्रंऋग्वेदस्योपवेदः। धनु वेदो युद्ध शास्त्रंयजुर्वेदस्योपवेदः। गंधर्ववेद सर्गीत शास्त्रं सामवेदस्योपवेदः। अर्थवदो (स्थापत्यवेदो) विश्वकर्मादि शिल्प शास्त्रं अर्थर्ववेदस्योपवेदः ॥ अर्थात् ऋग्वेद का उण्वेद आयुर्वेद है जिसे चिकित्सा शास्त्र कहते हैं। यजुर्वेद का उपदेव धनुर्वेद है जिसे सर्गीत शास्त्र कहते हैं और अर्थर्ववेद का उपदेव अर्थर्ववेद है जिसके अन्तर्गत विश्वकर्मा का सम्पूर्ण शिल्प शास्त्र आता है। इस प्रकार हम वंशावली के साथ-साथ अर्थर्ववेदी होने सीधे अंगिरा ऋषि से जुड़ जाते हैं।



[/ku nsus ;ksX; dqN ckrs](http://www.vishwakarmajan.org)

सभी पांचाल बन्धुओं से विनती है कि स्वयं को पहचाने की हम कौन हैं, और किस वंसज से हैं] ये सभी कहते हैं और मानते भी हैं कि (पांचाल समाज) भगवान् विश्वकर्मा जी के वंसज हैं ओर विश्वकर्मा जी ब्राह्मण कुल से हैं और उनका विवाह भी ब्राह्मण कुल में ही हुआ था] लेकिन फिर भी आये दिन इस बात पर लोग बहस करते हैं कि हम ब्राह्मण कैसे हैं हम तो लुहार हैं और समझने की बिल्कुल कोशिश भी नहीं करते आज उन लोगों के लिए यह एक विशेष लेख लिखा जा रहा है जो अपने को विश्वकर्मा वंशी तो मानते हैं लेकिन ब्राह्मण नहीं ॥ उन महानुभावों से विनती है कि लिखे हुए लेख को ध्यान पूर्वक पढ़े और समझें और मानें] हमारा पांचाल समाज लुहार केवल इसलिए कहलाता है कि हम लोग श्री विश्वकर्मा जी के ज्येष्ठ पुत्र मनु की औलाद हैं वंसज हैं और श्री मनु जी को लौह कार्य करने की जिमेदारी भगवान् श्री विश्वकर्मा जी से मिली थी अथार्त हम लोग कर्म से लुहार हैं नाकि जाति से ॥

नीचे लिखे लेख को ध्यान पूर्वक पढ़ने की विनती करता हूँ ॥

विश्वकर्मा महान् ऋषि ही नहीं बल्कि देवों में प्रमुख देव है ।

विश्वकर्मा सर्वस्य कर्ता

संसार के समस्त कर्मों का जिसे जान है वो विश्वकर्मा है । विश्वकर्मा जी के पाँच पुत्र थे ।

1 मनु - लोहकार (पांचाल)

2 मय - काष्ठकार (सुथार)

3 त्वष्टा - ताम्रकार (ताँबे काँसे के कार्य कर्ता)

4 शिल्पी - पाषानकार (सलाट)

5 देवज - स्वर्णकार (सोनी)

इन पुत्रों को पाँच विशेष शिल्प विधा का जान था । जिससे वे 10 कार्य करते थे -

1 कृषि

2 जल नोका बनाना

3 खनिज शास्त्र

4 रथ शास्त्र

5 विमान शास्त्र

6 वास्तु शास्त्र

7 युद्ध शास्त्र

8 नगर रचना

9 यंत्र शास्त्र

10 स्वर्ण चाँदी आदि धातुओं से महत्वपूर्ण आभूषण बनाना ।

विश्वकर्मा ब्रह्मकुल में पैदा हुए, इनकी माता का नाम भुवना था] जो देवगुरु बृहस्पति की बहन थी महर्षी अंगीरा की पुत्री थी । ये दोनों कुल ब्राह्मण थे और वे माने हुए कुल थे । विश्वकर्मा सप्तऋषियों के गुरु तो थे परंतु खास बात है की आपने ही गणपति के विवाह में आचार्य की भूमिका निभाई थी ।

56 जाति है अलग अलग ब्राह्मण कह कर हो गये ऐक

सारे कुकर्मा शामिलित हैं पंडित कह कर हो गए नेक

40 जाति सम्मिलित होकर निर्णय कर लिया ऐक जाति हमारी भले अलग

पर हम सिफ़्र कहगे पटेल

अहीर ग्वालवाल 24 जाति के ऐक हुआ परिवार यादव बन सब ऐक है

कहता मुख्यमंत्री परिवार

हरिजन मिल बहुजन भये करते मिल कर काम

जिनको कोई न जानता उनके ऊंचे ऊंचे नाम

विश्वकर्मा विश्व की शान है कैसे कहूँ नादान

विश्वकर्मा वो है जिसका करते हैं सब गुणगान

विश्वकर्मा है सृष्टि रचयिता जिनका दुनिया में सम्मान

परंतु राजनीति में है निम्नतम स्थान

इस रिक्तता को भरना जरूरी अन्यथा गुलामी, गुलामी और गुलामी होगी हमारी मजबूरी

अहंकार तोड़े, 1000 संगठनों में बटे विश्वकर्मा को जोड़ें मानसिकता परिवर्तन करें ग्राम, जिला, राज्य,

देश पर राज करें, करना है इतना काम मेरे साईं

कि धीमान है मेरा भाई, कि टम्टा है, मेरा भाई, कि कुम्हार है मेरा भाई,

कि सुनार है मेरा भाई, कि रथकार है, मेरा भाई, कि कर्मकार है मेरा भाई, कि राणा है मेरा भाई,

कि जांगिड़ है मेरा भाई, की मैथिल है, मेरा भाई, की झा है मेरा भाई, कि सुथार है मेरा भाई,

कि राणा है मेरा भाई, कि महाराणा है, मेरा भाई, कि सुतार है मेरा भाई, कि चारी है मेरा भाई,

कि आचारी है मेरा भाई, कि जांगड़ा है, मेरा भाई, कि अलगोत्रा है मेरा भाई, कि तिरखान है मेरा भाई, कि

रामगढ़िया है मेरा भाई, कि गज्जर है मेरा भाई, कि मिस्त्री है मेरा भाई कि वडगामा है मेरा भाई, कि कर्मा है

मेरा भाई, कि सरमा है मेरा भाई, कि कसेरा मेरा भाई है,

सोमपुरा मेरा भाई है, कि सिद्धपुरा मेरा भाई है, कि कड़िया मेरा भाई है,

कि मूर्तिकार मेरा भाई है, कि ठेरा मेरा भाई है, कि ताम्कार मेरा भाई है

कि लोहकार मेरा भाई है, कि पांचाल मेरा भाई है

कि प्रजापति मेरा भाई है, कि स्वर्णकार मेरा भाई है

कि शिल्पकार मेरा भाई है

यदि इतनी समझ और बुद्धि आई

तो हो जाएगी भारत में वाह वाही।

Vishwakarma Vansaj International Federation Team Members Photo's Gallery



Sh. Manmohan Singh (PM of India) With Dr. Ajay Sharma And Team Members (Director) VVI Federation



Sh. Manmohan Singh (PM of India) With Dr. Ajay Sharma And Team Members (Director) VVI Federation



Sh. I.K. Gujral (PM of India) With Dr. Ajay Sharma And Team Members (Director) VVI Federation



Sh. I.K. Gujral (PM of India) With Dr. Ajay Sharma And Team Members (Director) VVI Federation



Sh. V.P. Singh (PM of India) With Dr. Ajay Sharma And Team Members (Director) VVI Federation.



Sh. Joginder Singh (Ex. Director CBI) With Dr. Ajay Sharma And Team Members (Dir.) VVI Federation



Sh. P.A. Sangma (Lok Shabha Speaker) With Dr. Ajay Sharma And Team Members (Dir.) VVI Federation



Smt. Meera Kumar (Lok shabha Speaker) With Dr. Ajay Sharma And Team Members (Dir.) VVI Federation



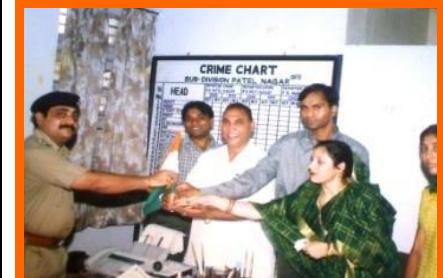
Smt. Sheela Dixit (CM Delhi Govt.) With Dr. Ajay Sharma And Team Members (Dir.) VVI Federation



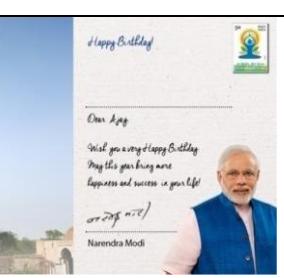
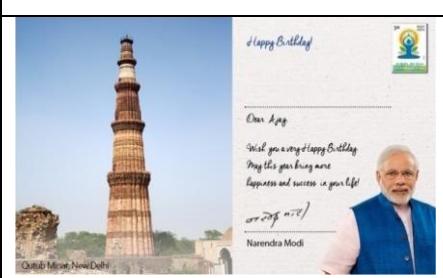
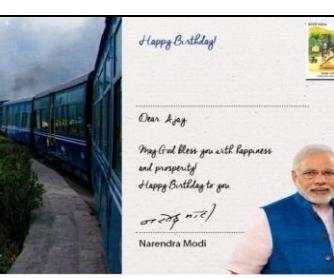
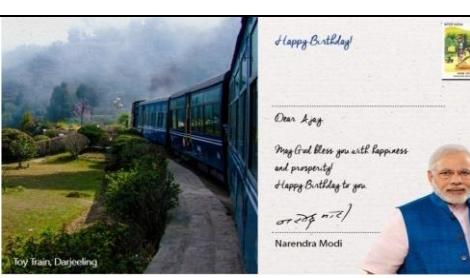
Sh. M.S. Bitta (Chairman AIATF) With Dr. Ajay Sharma And Team Members (Director) VVI Federation



Sh. Divesh Srivastav IPS (Jt. Commissioner of Police) With Dr. Ajay Sharma And Team Members (Director) VVI Federation.



Mohd Asif Ali (ACP) With Dr. Ajay Sharma And Team Members (Director) VVI Federation.





ॐ जय श्री मगवान् विश्वकर्मा जी के ॐ
विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन
Vishwakarma Vansaj International Federation

Registered: Under Section 6(1) of companies Act 2013 (Ministry of Corporate Affairs, Govt. of India)
 Registered: Niti Aayog (Govt. of India), MSME Udyam (Govt. of India) An ISO certified 9001: 2015 Org.

एक सामाजिक एवं धार्मिक अन्तराष्ट्रीय संस्थान
 गवान् जी विश्वकर्मा जी के पांच पूज्य परम अत्मज्ञान जी भगवन् ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी देवता जी के बंधनों वर्ते एक सामाजिक एवं धार्मिक संस्था के गवान् से उत्पन्ना वर्ते अन्तराष्ट्रीय संप्रति गवान् ब्रह्मा जीव देवता गवान् ब्रह्मा जीव हैं।

विश्वकर्मा वंशज समाज के विकास हेतु संस्थान का हिस्सा बने

सदस्यता अभियान में सदस्यता लेकर समाज को मजबूत करे।

विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन कि सामाजिक सेवाएं निम्नलिखित हैं सदस्यता लेकर कर समाज को अपने बहुमुल्य अनुभव को वितरण कर समाज को प्रगति/सफलता कि उचाईयों पर पहुचाने में अपना योगदान दे, और इन सेवाओं का लाभ एवं समाज विकास हेतु सम्पर्क करे।

- विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन परिवारों कि जन गणना करना इन सभी आंकड़ों के आधार पर उचित माध्यम के द्वारा समाज कि उन्नति हेतु, सहायत कार्य करना।
- कानूनी सहायता हेल्पलाईन।
- रोजगार सहायत हेल्पलाईन।
- महिला उत्पीड़न कानूनी सहायता हेल्पलाईन।
- बालक एवं बालिका शिक्षा सहायता सरकारी/गैर सरकारी स्कूलों में दाखिला या अन्य किसी भी प्रकार कि परेशानी हो तृप्तना मिले/ लिले।
- चिकित्सा संबंधी सहायता हेल्पलाईन।
- वरिष्ठ नागरिक सरकारी पेशन/सहायता मार्ग दर्शन हेल्पलाईन।
- विजनैस गोष्ठी सहायत मार्ग दर्शक पुस्तिका।
- वास्तु दोष निवारण मार्ग दर्शन।
- ज्योतिष शास्त्र के द्वारा मार्ग दर्शन।
- आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिये विवाह सहायता।
- आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिये शिक्षा केन्द्र/पीढ़ शिक्षा केन्द्र कि सुभारम्भ करना।
- भगवान् विश्वकर्मा जी के मंदिरों एवं धर्मशालाओं का निर्माण कार्य हेतु प्रयत्नशील होना।
- भगवान् विश्वकर्मा जी का प्रचार व प्रसार करना।
- सभी विश्वकर्मा वंशज परिवारों को एक सूत्र / एक माला में संगठित करने के लिये विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन निरंतर प्रयास करने में तत्पर है।
- प्रतिदिन विश्वकर्मा बाबा कि पूजा जरूर करे जिससे कि आपके परिवार और कारोबार को विश्वकर्मा बाबा की असीप कृपा निरंतर मिलती रहे।
- आप सभी से निवेदन हैं संगठित रहे/ सुरक्षित रहे। समाजिक कार्यों में रुचि रखे। प्रतिदिन एक नेक कार्य जरूर करे।
- आप सभी साथीयों से अनुरोध समाज के उथान हेतु, एक छोटी सी सहयोग राशि देकर बाबा विश्वकर्मा का आर्थिक प्राप्त करे। विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन सहयोग हेतु बैक की बीटा।

बैक का नाम	बैक आफ बड़ी
आता नम्बर	58180200000311
आता का प्रकार	चालू आता
बंध	लोगी, गाँजियाबाद, बूपी०
IFSC	BARB0LONIXX (BARBzeroLONIXX)
Payment Links	https://pmny.in/nIY2qFTR8dS
BHIM UPI	8860430007@upi
Paytm	8860430007

जनसम्पर्क कार्यालय :

विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन (पंजीकृत)

(एक सामाजिक एवं धार्मिक संस्था, नर सेवा ही नारायण सेवा है।)

ठाऊ अजय शर्मा (राष्ट्रीय अध्यक्ष / संस्थापक/ समाज सेवक)

लाल न०७२८ गली न०२, चुनिता विहार, लोगी, गाँजियाबाद, 211012 उत्तर प्रदेश, भारत

मो०८८६०४३०००७, website: www.vishwakarmavansajfederation.com,

Google App. <https://play.google.com/store/apps/details?id=vishwakarmavansaj.federation.techsell>
 email id.: vishwakarmavansajfederation@gmail.com, info@vishwakarmavansajfederation.com
 facebook id:Vishwakarma Vansaj Antararasteeya Fed





We are provide well qualified,uniformed Security Guards/Gunman/Bouncers/Housekeeping staff for Delhi NCR,Please contact # 9999881949,9999881954,9999881959

Absolute City Pro Private Limited

We are provide well qualified,uniformed Security Guards/Gunman/Bouncers/Housekeeping staff for Delhi NCR,Please contact # 9999881949,9999881954,9999881959



INDO GROUP®
VISION, IN A CHANGING WORLD
Risk & Facilities Management Enterprises

We are provide well qualified,uniformed Security Guards/Gunman/Bouncers/Housekeeping staff for Delhi NCR,Please contact # 9999881949,9999881954,9999881959

मदर इंडिया आतंकवाद विरोधी सेना **MOTHER INDIA ANTI TERRORIST SENA**

मदर इंडिया आतंकवाद विरोधी सेना का एक ही जारा आतंकवाद 'मुक्त' हो हिन्दुस्तान हमारा

Smart
Easy
Long lasting
Functional

Defence

A scientific approach

Special Self Defence

(For women Only)

For fresher wanting to learn simple.....

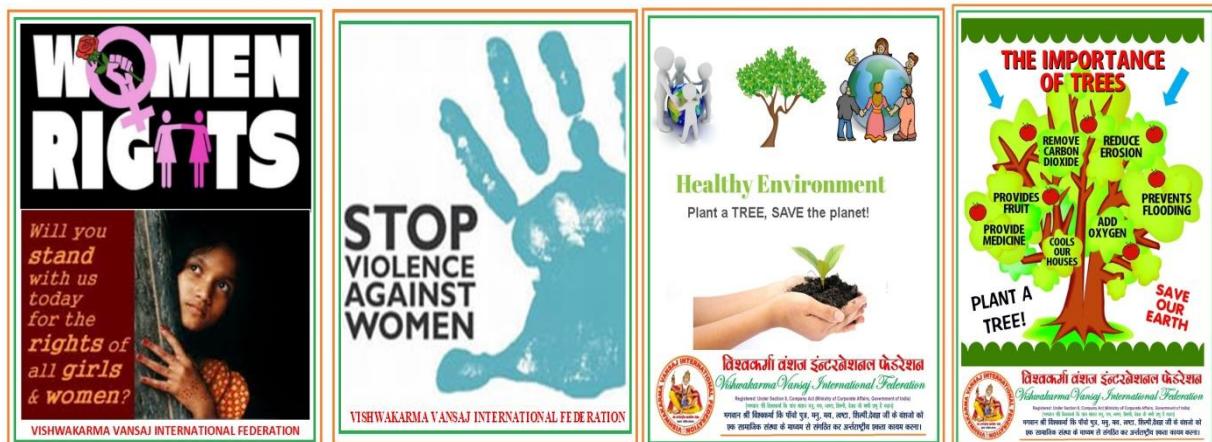
MKV Karate Skill Development Academy

YOU CAN DISPLAY YOUR ADVERTISEMENT THIS BOOKLET
PLEASE CONTACT #8860430007

मित्रो राष्ट्र और समाज के निर्माण मे युवाओ कि मागीदारी हेतू
विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फोडरेशन
के सदस्य बने।

Website: www.vishwakarmavansajfederation.com email vishwakarmavansajfederation@gmail.com
Contact No. 8860430007 what's App No.8860430007

gekjs dqN iz;kl



विश्वकर्मा वंशज चेरिटेबल डिस्पेंशनी

स्वस्थ जीवन सबका अधिकार

Website: www.vishwakarmavansajfederation.com, email id: vishwakarmavansajfederation@gmail.com
Contact No. 8860430007, 9999881959, what's App No.8860430007



रोजगार सहायता सेन्टर

विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन का सपना सबको रोजगार हो अपना
समाज से बेरोजगारी समाप्त करने हेतु संगठन कि सभी को रोजगार मुहिम

Website: www.vishwakarmavansajfederation.com, email id: vishwakarmavansajfederation@gmail.com

Contact No. 8860430007, 9999881959, what's App No.8860430007



कानूनी सहायता सेन्टर

यदि आपके आसपास समाज के किसी भी व्यक्ति पर मानवाधिकार, महिला अधिकार, बाल अधिकारों का
हनन हो रहा है, पुलिस प्रशासन से आपको च्याय नहीं मिल रहा। कृप्या संगठन कायालय मे सम्पर्क करें

Website: www.vishwakarmavansajfederation.com, email id: vishwakarmavansajfederation@gmail.com

Contact No. 8860430007, 9999881959, what's App No.8860430007



विश्वकर्मा वंशज युवा सेना

ॐ जय श्री विश्वकर्माय नमः ॐ
एक सामाजिक एवं धार्मिक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान
भगवान् श्री विश्वकर्मा जी के पांचो पुत्र परम आदरणीय श्री मनु, प्रथा, त्वष्टा, शिल्पी, देवज्ञ जी के वंशजों को एक
सामाजिक एवं धार्मिक संस्था के माध्यम से संगठित करके अन्तर्राष्ट्रीय एकता कायम करना हमारा लक्ष्य है।
Website: www.vishwakarmavansajfederation.com, email id: vishwakarmavansajfederation@gmail.com



विश्वकर्मा वंशज



गुरुग्राम सेना

देश और समाज के निर्माण मे

युवाओं कि भागीदारी

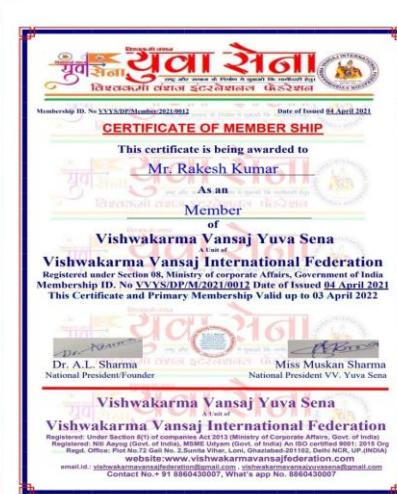
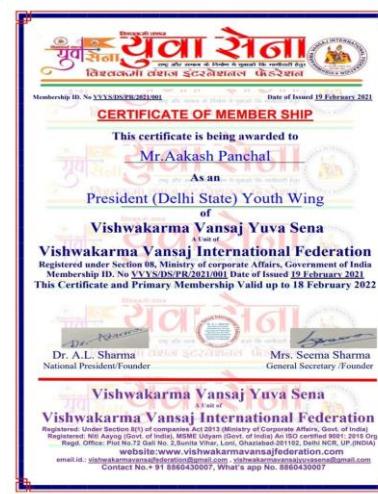
विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन

Web site: www.vishwakarmavansajfederation.com

email: vishwakarmavansajfederation@gmail.com

Contact No. 8860430007 what's App No.8860430007

Many Many Congratulation for All Members



विश्वकर्मा ज्ञान संदेश



मित्रो राष्ट्र और समाज के निर्माण मे युवाओ कि भागीदारी हेतू
विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन
के सदस्य बने।

Website: www.vishwakarmavansajfederation.com email vishwakarmavansajfederation@gmail.com
Contact No. 8860430007 what's App No.8860430007



मित्रो राष्ट्र और समाज के निर्माण मे युवाओ कि भागीदारी हेतू
विश्वकर्मा वंशज युवा सेना
के सदस्य बने।

Website: www.vishwakarmavansajfederation.com email vishwakarmavansajfederation@gmail.com
Contact No. 8860430007 what's App No.8860430007



An ISO 9001:2015 Org

Respected Sir/Madam

Please call or contact us if any Suggestions/Queries/Enquiry/Complaint:

Vishwakarma Vansaj International Federation® NGO



ॐ जय श्री विश्वकर्माय नमः ॐ

विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन

Registered: Under Section 8(1) of companies Act 2013 (Ministry of Corporate Affairs, Govt. of India)
Registered: Niti Aayog(Govt. of India), MSME Udyam (Govt. of India), An ISO certified 9001:2015 Org.

(एक सामाजिक एवं धार्मिक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान)
एवम्



विश्वकर्मा वंशज युवा सेना

देश और समाज के निर्माण मे युवाओ कि भागीदारी हेतू सदैव तत्पर संगठन

जनसम्पर्क कार्यालय

प्लाट नं 72ए, गली नं 2, सुनिता विहार, लोनी, गाजियाबाद, 201102 उत्तर प्रदेश, भारत

सम्पर्क सूत्र: 8860430007, website: www.vishwakarmavansajfederation.com ,
email id.: vishwakarmavansajfederation@gmail.com , info@vishwakarmavansajfederation.com

मित्रो आपका विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन पंजीकृत में हार्दिक स्वागत है आप से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में संगठन से जुड़े और विश्वकर्मा समाज को मजबूत करने में हमारी मदद करे, विश्वकर्मा वंशज इंटरनेशनल फेडरेशन से जुड़ने के लिए इन लिंक को क्लिक करें। धन्यवाद आपका सेवक

डॉ अजय शर्मा (राष्ट्रीय अध्यक्ष) संगठन की अधिक जानकारी हेतु वेबसाइट पर क्लिक करें।

<http://www.vishwakarmavansajfederation.com>

संगठन से जुड़ने के लिए प्ले स्टोर ऐप पर जाकर लिंक पर क्लिक करें।

<https://play.google.com/store/apps/details?id=com.techsell.vkvf>

संगठन से फेस बुक पर जुड़ने के लिए क्लिक करें।

<https://www.facebook.com/vishwakarmavansaj.federation>

संगठन से ट्विटर पर जुड़ने के लिए क्लिक करें।

<https://twitter.com/VishwakarmaVan3?s=09>

संगठन से इंस्टाग्राम पर जुड़ने के लिए क्लिक करें।

I'm on Instagram as @vansajvishwakarma. Install the app to follow my photos and videos.

https://www.instagram.com/invites/contact/?i=kvhacsy45cp&utm_content=e712h8s

संगठन से YouTube चैनल पर जुड़ने के लिए क्लिक करें, और अधिक से अधिक लाइक और शेयर कर चैनल को सब्सक्राइब करें।

<https://youtube.com/channel/UCMi-5fAWV-ra02Sx9s20cWw>

संगठन से जुड़ने के लिए व्हाट्स ऐप ग्रुप्स पर क्लिक करें।

<https://chat.whatsapp.com/EuZa3scaBXi4Wd3XgfenvQ>

<https://chat.whatsapp.com/CxBEQvFGaLYGZuxB4MpgE1>

<https://chat.whatsapp.com/ILG3NQPovB6GQFpGT2N6dp>

संगठन से जुड़ने के लिए व्हाट्स ऐप पर विश्वकर्मा इतिहास ज्ञान ग्रुप पर क्लिक करें।

<https://chat.whatsapp.com/E3Cht52BLm3BmBJF2viqXm>

<https://chat.whatsapp.com/D6FhTO11AV66BW9TEiQe3Y>

<https://chat.whatsapp.com/Bg2ihd5aGNf8MHr3fy8LIY>

<https://chat.whatsapp.com/FqLYIzr31F9CsmGUpdNFqJ>

<https://chat.whatsapp.com/GnWMRxPVx5f5Ofmj0H08jR>

<https://chat.whatsapp.com/JUp07HLwQj9L2kVNNnvash>

<https://chat.whatsapp.com/IUjFrYPX9h76ySIx55Ru1n>

संगठन से जुड़ने के लिए व्हाट्स ऐप पर विश्वकर्मा युवा सेना ग्रुप पर क्लिक करें।

<https://chat.whatsapp.com/D63Hxv7yA7zGJt70MDraWu>

संगठन से जुड़ने के लिए व्हाट्स ऐप पर विश्वकर्मा वंशज शादी विवाह गाइडेंस के लिए ग्रुप पर क्लिक करें।

<https://chat.whatsapp.com/IuhRjRahMtq9Q36JDuc5c7>

संगठन से जुड़ने के लिए व्हाट्स ऐप पर कानूनी सहायता के लिए ग्रुप पर क्लिक करें।

<https://chat.whatsapp.com/DJTAD6o6I99IOxPk39OOiI>

संगठन से जुड़ने के लिए व्हाट्स ऐप पर रोजगार मार्गदर्शन के लिए ग्रुप पर क्लिक करें।

<https://chat.whatsapp.com/Hfl0JQQ16pg70fXRw8qRBW>

संगठन से जुड़ने के लिए टेलीग्राम ग्रुप में क्लिक करें।

Hey, I'm using Telegram to chat. Join me! Download it here: <https://telegram.org/dl>

संगठन को कोई सुझाव या सिकायत हेतु संगठन के अध्यक्ष के व्हाट्स ऐप पर क्लिक करें।

<https://wa.me/message/PJD3ZSEUL5BAK1>

संगठन के द्वारा समाज के उत्थान हेतु आर्थिक रूप से मदद के लिए पेमेंट गेटवे पर क्लिक करें।

<https://pmny.in/nIFY2qFTR8dS>

संगठन के द्वारा चलाए गए रोटी बैंक से जुड़ने के लिए व्हाट्स ऐप के लिए ग्रुप पर क्लिक करें।

<https://chat.whatsapp.com/FqV8Icfnz4l7Fb66qaauaE>



**मित्रो राष्ट्र और समाज के निर्माण मे युवाओ कि मागीदारी हेतू
विश्वकर्मा वंशज इंटरनॉशनल फेडरेशन
के सदस्य बने।**

Website: www.vishwakarmavansajfederation.com email vishwakarmavansajfederation@gmail.com
Contact No. 8860430007 what's App No.8860430007